भूमिका ॥

प्रणम्य सच्चिदानन्दं सर्वाधारं निरामयम् ।
श्रीमन्मदनपालस्य निघण्टोर्भूमिकोच्यते ॥ १ ॥

विदित हो कि "निघण्टुभाषा" यह पुस्तक अद्वितीय व अनुपम होकर सर्वसधारण व राजवैद्य महाशयों के लिये महोपकारी है क्योंकि इस विषय में ग्रन्थकारजी ने आपही कहा है—

केचित्सन्ति निघण्टवोऽतिलघवः केचिन्महान्तः परे केचिद्दुर्गमनामकाः कतिपये भावाः स्वभावोज्झिताः ॥ तस्मान्नातिलघुर्न चातिविपुलः ख्यातादिनामा सतां प्रीत्यै द्रव्यगुणान्वितोऽयमधुना ग्रन्थो मया बध्यते ॥ १ ॥

कितेक निघण्टु बहुतही छोटे हैं व कितेक निघण्टु अतीव बड़े हैं व कितेक बहुतही दुर्गम हैं और कितेक स्वभाव सेही बढ़े हैं इसलिये न बहुत छोटा न बड़ा और न बहुत दुर्गम तथा द्रव्य व गुणों से सम्पन्न इस निघण्टु को सज्जन महज्जन विद्वज्जनों की प्रीति के लिये मैं बनाता हूं—इसलिये इस समय इस निघण्टु से बढ़कर ऐसा कोई ग्रन्थ देखने में नहीं आता है और यह इस कारखाने में अनेकबार छप चुका है परन्तु अबकी बार मालिकमतबा की आज्ञानुसार पण्डित शक्तिधरशर्मा ने बड़े परिश्रम के साथ संस्कृतमूल पुस्तक से प्रत्यक्षर का अनुवाद किया है यद्यपि इसका अनुवाद बम्बई आदि नगरों में छप भी चुका है तो भी वह अनुवाद संस्कृत के नामों में होने से साधारण वैद्यों के लिये उपकारी नहीं होसका इसलिये इस कठिन परिश्रम का भार लेकर द्रव्यों के समस्त नाम व गुण हिन्दी भाषा मेंही लिखे हैं

जिसमें सर्वसाधारण लोगों की समझ में सहजही आजावें क्योंकि इसके विना जाने वैद्यलोग उपहास को प्राप्त होते हैं इस विषय में कहा है–

निघण्टुना विना वैद्यो विद्वान्व्याकरणं विना।
अनभ्यासेन धानुष्कस्त्रयो हास्यस्य भाजनम्॥२॥

विना निघण्टु के वैद्य, व्याकरण के विना पण्डित और विना अभ्यास के धानुष्क (तीर का निशाना लगानेवाला) ये तीनों हँसने के योग्य हैं अर्थात् अपनी हँसी करानेवाले हैं यद्यपि वैद्यक-शास्त्र त्रिस्कन्ध (हेतु-लिङ्ग व औषधात्मक) है परन्तु इसमें भी औषध का जानना अत्यावश्यक है क्योंकि चरक में कहा है–

औषधं ह्यनभिज्ञातं नामरूपगुणैस्त्रिभिः।
विज्ञातं वापि दुर्युक्तं युक्तिबाह्यं न भेषजम्॥ ३॥

जो औषध नाम, रूप और गुणों से नहीं ज्ञात हुई या जानकर भी मात्रा, काल, देश, बल व अग्निबलादिकों के विचारानुसार नहीं दीगई अथवा मिथ्यायोग व अतियोगों से युक्त होकर जो औषध होती है वह अनर्थकारी कही जाती है इसलिये युक्ति से जो बाहर औषध है वह भेषज नहीं कहाती है क्योंकि कहा है–

यथा विषं यथा शस्त्रं यथाग्निरशनिर्यथा।
तथौषधमविज्ञातं विज्ञातममृतं यथा॥ ४॥

जो औषध नाम, रूप और गुणों से नहीं जानीगई वह विष, शस्त्र, अग्नि तथा वज्राघात के समान होकर तत्काल प्राणों को हरलेती है ऐसेही जो "औषध" नाम, रूप और गुणों से जानी गई है वह अमृत के समान होकर जरा, मरण आदिकों को विनाशती है इसीसे औषधयोगों के ज्ञाता कोही चरकादिकों ने सर्वोत्तम वैद्य कहा है–

योगमासान्तु यो विद्याद्देशकालोपपादितम् ।
पुरुषं पुरुषं वीक्ष्य स विज्ञेयो भिषक्तमः ॥ ५ ॥

जो प्राणी प्रत्येक पुरुषों की देह, बल, प्रकृति, सत्त्व, सात्म्य, दोषबल, व्याधिबल और अवस्था के अनुसार इन औषधों के नाम व रूप का अभिज्ञानकर तथा देशविशेष व कालविशेष के ज्ञान से इन्हीं देश कालों में कहे योगों को अर्थात् मात्रा की कल्पनाकर या एक औषध को दूसरी औषध में मिलाकर काढ़ा आदिकों को बनाकर पीने की विधिआदिकों को जानता है वही उत्तम वैद्य कहाता है अर्थात् उसीकी वैद्यसंज्ञा है इस लिये वैद्यों को औषधों के नाम, रूप, गुण और प्रयोगविधि सर्वथा जानना चाहिये इसीसे राजनिघण्टु में भी कहा है—

आभीरगोपालपुलिन्दतापसाः
पान्थास्तथान्येऽपि च वन्यपारगाः ।
परीक्ष्य तेभ्यो विविधौषधाभिधा
रसादिलक्ष्माणि ततः प्रयोजयेत् ॥ ६ ॥

अहीर, गोपाल (गौ-भैंसके चरानेवाले), म्लेच्छ, तपस्वी, पथिक (बटोही) वा अन्य वन के ज्ञाता माली, काछी व भील आदि इन सबोंसे पहले अनेकप्रकार की औषधों के नाम व रसादि लक्षणों का निश्चयकर वैद्यलोग उनको प्रयोग में योजित करें—

विज्ञापन।
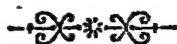
आर्यावर्त अर्थात् सारे हिन्दुस्तान में सर्ववैद्य महाशयलोग बहुधा इसी मदनपालविरचित निघण्टुको अपने छोटे छोटे प्रिय बालकों व अन्य बालकोंको पढ़ाते हैं परन्तु इसकी टीकायें मूल से भी अधिकतर कठिन देख पड़ती हैं क्योंकि समस्त औषधों के नाम व गुण संस्कृत के पदों से रचेगये हैं यद्यपि भाषाकारों ने जो भाषाभी बनाई हैं वे देवभाषाके पदोंसे गुम्फित की हैं इससे पढ़ने व पढ़ानेवालों का समय व्यर्थ बीतजाता है परन्तु औषधों का यथार्थ बोध नहीं देख पड़ता है इसलिये मैंने कठिन परिश्रम से अमरकोष, मेदिनी, अनेकार्थमञ्जरी, भावप्रकाश और राजनिघण्टु आदि अनेक ग्रन्थों का आशय लेकर इस नवीन निघण्टुभाषा को हिन्दीपदों से ही निर्माण किया है आशा है कि सर्व महाशयलोग अवश्यही इस पुस्तक को स्वीकार करेंगे अहो सर्वमहाशय, वैद्यलोगो! विलम्ब न करिये अवश्यही निघण्टु भाषा को ख़रीदकर अलभ्य लाभ उठाइये—इस नवीन भाषा से विना गुरु के भी बालकों, विद्यारसिकों व केवल भाषाविदों को भी सहायता मिलसक्ती है और सज्जन विद्वज्जन महाशयों के निकट निवेदन यह है कि जहाँ कहीं अशुद्ध देखें वहाँ कृपा कर शोध लेवें क्योंकि जो लिखता, पढ़ता है उसीको मोह होता है इसका श्रम गुणज्ञातालोगही जानेंगे और दयाकर अङ्गीकार करेंगे अग्रे किमधिकं बहुज्ञेष्विति शिवम्—

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥ १॥

इति विज्ञापयामि—
श्रीसुकुल पण्डित शक्तिधरशर्मा,
नवलकिशोर-प्रेस—हेड पण्डित.

अथ निघण्टुभाषा का सूचीपत्र ॥

दो० । श्रीगणेश के पदकमल, मन क्रम वचन मनाय ।
मदनपाल सुनिघण्टु की, सूची कहौं बनाय ॥ १ ॥

अथ प्रथमो वर्गः ।

इति तृतीयो वर्गः ॥

(अथ चतुर्थो वर्गः)

इति चतुर्थो वर्गः ॥

(अथ पञ्चमो वर्गः)

इति पञ्चमो वर्गः ॥

(अथ षष्ठो वर्गः)

इति षष्ठो वर्गः ॥

(अथ सप्तमो वर्गः)

इत्येकादशो वर्गः॥

दो० । भूमीरस नँदचन्द्रमित, संवत है नल नाम ।
मदनपाल सु निघण्टु की, सूची भई तमाम ॥ १ ॥

इति श्रीमत्सुकुलशक्तिधरविरचित निघण्टुभाषासूचीपत्रं समाप्तिं प्रफाण ॥

अथ निघण्टुभाषा प्रारभ्यते ॥

प्रथमवर्गः ।

श्लोकौ । शान्तं शरण्यं सुखदं द्विपास्यं, विद्याधरं विघ्नहरं विकास्यम् । स्वाभीष्टसिद्धयै सुधियामुपास्यं, वन्दामहे तं विबुधैर्विलास्यम् ॥ १ ॥

नमस्कृत्य शिवं साम्बं, शङ्करं लोकशङ्करम् ।
श्रीमन्मदनपालस्य, निघण्टुं भाषया ब्रुवे ॥ २ ॥

दो० गणप गिरा गुरुपदन कहँ, मन क्रम वचन मनाय ।
मदनपाल सुनिघण्टु की, भाषा रचौं बनाय ॥ १ ॥
भाषब प्रथमहिं वर्ग महँ, अभयादिक कर ज्ञान ।
जाहि लखैं नित वैद्यजन, लहैं सुयश अरु मान ॥ २ ॥

अब प्रथम हड़ के नाम व गुण कहते हैं ।

शिवा, हरीतकी, पथ्या, चेतकी, विजया, जया, प्रपथ्या, प्रमथा, अमोघा, कायस्था, प्राणदा, अमृता, जीवनीया, हेमवती, पूतना, वृतना, अभया, वयस्था, नन्दिनी, श्रेयसी और रोहिणी ये इक्कीस नाम हड़ के हैं— इसमें मीठा, कसैला, खट्टा, कड़ुवा और तेज़ ये पाँच

रस हैं और यह लवणरस से रहित होकर अतीव कसैली, रूखी, गरम, दीपिनी, शुद्धि को धारती, पाकमें स्वाद को लाती व वृद्धता को विनाशती है वा सररूपिणी, बुद्धिदात्री, आयुर्दाय को बढ़ाती, नयनों को हित करती, बल को देती हुई हलकी है और दमा, खाँसी, प्रमेह, बवासीर, कुष्ठ, शोथ, जठररोग व क्रिमिरोग को दूर करती है तथा स्वर का बिगड़ जाना, संग्रहणी, क़ब्ज़ता, विषमज्वर, गोला, पेट का अफरा, फोड़ा, छर्दि, हिचकी, खाज व हौलदिली को खोती है और कामला, शूल, विबन्ध व तापतिल्ली को हरती है तथा मीठे और खट्टे स्वाद से वात को दूर करती है और कसैले स्वाद से पित्त को हरती तथा कडुवे स्वाद से कफ को विनाशती है॥

अब आँवले के नाम व गुण कहते हैं।

धात्रीफल, अमृतफल, आमलक, श्रीफल और शिव ये पाँच नाम आँवले के हैं तथा आँवले का फल आयुर्दाय को बढ़ाता और विशेषता से रक्तपित्त को जीतता है और यह खट्टे स्वाद से वायु को विनाशता तथा मीठे व ठण्ढेपने से पित्त को दूर करता और रूखे तथा कसैले स्वाद से कफ को नाशता है इसलिये हड़ से बढ़कर इसमें क्या अधिक फल जानना चाहिये अर्थात् कुछ भी विशेष फल नहीं है॥

अब बहेड़ा के नाम व गुण कहते हैं।

विभीतक, कर्षफल, भूतावास, कलिद्रुम, वासन्त, अक्ष, वृद्धजात, संवर्त और तिलपुष्पक ये नव नाम बहेड़ा के हैं—यह पाक में स्वादिल व कसैला होकर कफ

व पित्त को हटाता है तथा खाने में गरम व लगाने में ठण्ढा व भेदी होकर खाँसी को विनाशता है और रूखा तथा आँखों के लिये हितदायी होकर बालों को बढ़ाता है और इसकी मींगी नशा को लाती है॥

अब त्रिफला के नाम व गुण कहते हैं।

हड़ तीनभाग, आँवला बारहभाग और बहेड़ा छः भाग इसको वैद्यों ने त्रिफला कहा है और वरा, श्रेष्ठा तथा फलोत्तमा भी कहते हैं और यह पित्त, मीठा, ठण्ढा, कफ, रूखा तथा कसैले को विनाशती है और कुष्ठरोग, प्रमेह, बवासीर व कफपित्त को दूर करती व आँखों के लिये मुफ़ीद होकर घावों पर अंकुर जमाती तथा दिल को कुव्वत देकर काया को स्थापित करती है॥

अब भूमिआँवला के नाम व गुण कहते हैं।

भूधात्री, बहुपत्री, अमृता, आमलका और शिवा ये पाँच नाम भूमिआँवला के हैं—यह वात को उपजाता है तथा कडुवा, कसैला, मीठा और ठण्ढा होकर प्यास, खाँसी, रक्तपित्त, क्रिमि, पाण्डु और क्षतरोग को विनाशता है॥

अब पानीआँवला के नाम व गुण कहते हैं।

प्राचीना, आमलकी, प्राची, नागर और रक्तक ये पाँच नाम पानीआँवला के हैं—इसका पकाहुआ फल पित्त तथा कफ को पैदा करता है और गरम व भारी होकर वायु को जीतता है॥

अब वासा के नाम व गुण कहते हैं।

अरूषक, इणावबासा, वृषा, सिंहमुखी, भिषक्,

सिंहपर्णी, वृष, वासा, सिंहक और उत्पाटरूषक ये दश नाम वासा के हैं—यह वायु को उपजाता है व सर होकर कफ व रक्तपित्त को नाशता है तथा दमा, खाँसी, ज्वर, छर्दि, प्रमेह, कुष्ठ और क्षय को दूर करता है॥

अब गिलोय के नाम व गुण कहते हैं।

गुडूची, कुण्डली, छिन्ना, वयस्था, अमृतवल्लरी, छिन्नोद्भवा, छिन्नरुहा, अमृता, ज्वरविनाशिनी, वत्सादनी, चन्द्रहासा, जीवन्ती और चक्रलक्षणा ये तेरह नाम गिलोय के हैं—यह कडुवी, हलकी, पचने के समय मीठी व रसायनी होकर क़ब्ज़ता को करती है और कसैली व गरम होकर बल को उपजाती है तथा तीखी व पेट की अग्नि को प्रकाशती हुई कामला, कुष्ठ, वातरक्त, ज्वर, पित्त और क्रिमिरोग को जीतती है व घी के साथ वायु को व गुड़ के साथ अफराको व मिश्री के साथ पित्त को व शहद के साथ कफ को व रेंडी के तेल के साथ बड़े भारी वातरक्त को और सोंठ के साथ आमवात को विनाशती है॥

अब बेल के नाम व गुण कहते हैं।

बिल्व, शलाटु, शैलूष, मालूर, सदाफल, लक्ष्मीफल, गन्धगर्भ, शाण्डिल्य और कण्टकी ये नव नाम बेल के हैं—यह क़ब्ज़ता को करता है व कसैला, गरम, कडुवा, दीपन, पाचन व हृदय का हितदायी होकर बल को बढ़ाता है तथा हलका, चिकना, तीखा होकर वात और कफ को विनाशता है और आयुर्दाय को बढ़ाताहुआ भारी तीनों दोषों का उपजानेवाला व देर में जरनेवाला व दुर्गन्ध वातवाला, विदाही, विष्टम्भकारी व मीठा होकर अग्नि

को मन्द करता है तथा बेलकी गिरी संग्रहणी, कफ, वायु, आमवात और शूल को विनाशती है ॥

अब अरणी के नाम व गुण कहते हैं।

अग्निमन्थ, मथ, केतु, अरणी और वैजयन्तिका ये पाँच नाम अरणी के हैं—यह शोथ को उपजाती है व वीर्य में गरम होकर कफरोग तथा वायुरोग को विनाशती है ॥

अब पाटला व कृष्णपाटला के नाम व गुण कहते हैं।

पाटला, कामदूति, कुम्भिका, कालवृन्तिका, स्वल्पमेधा, मधोदूती, ताम्रपुष्पा, अम्बुवासिनी, फलेरुहा, श्वेता, कुम्भिका और कृष्णपाटला ये बारह नाम पाटला व श्यामपाटला के हैं—यह अरुचि, सूजन, बवासीर, दमा और छर्दि को विनाशती है तथा अतीव गरम व कसैली होकर स्वाद को लाती है और इसका फूल कफ, रक्त, पित्त, अतीसार और दाह को नाशता है और इस का फल भी हिचकी तथा रक्तपित्त को दूर करता है ॥

अब कम्भारी के नाम व गुण कहते हैं।

काश्मरी, सर्वतोभद्रा, श्रीपर्णी, कृष्णवृन्तिका, कश्मारी, कश्मरी, हीरा, काश्मर्या और भद्रपर्णिका ये नव नाम कम्भारी के हैं—यह ज्वर व शूल को दूर करती है और गरम व मीठी होकर भारीरूप से रहती है और इसका फूल वायु को उपजाता हुआ कब्ज़ता को करता है तथा पित्त, लोहू व प्रदररोग को विनाशता है व इसका फल भी रसायन होकर बालों को अच्छा करता है व शरीर को पोषता हुआ वीर्य को बढ़ाता है तथा भारी होकर

वायु, पित्त, क्षयी, प्यास, रक्त और मूत्र के विबन्ध को अथवा रक्तशूल व बन्ध्यापने को दूर करता है ॥

अब स्योनाक के नाम व गुण कहते हैं ।

स्योनाक, पृथुशिम्बि, शुकनाश, कुटन्नट, भूतवृक्ष, कट्वङ्ग, टुण्टुक, शल्लक, अरलु, मयूरजङ्घ, भल्लूक, प्रियजीव और कटम्भर ये तेरह नाम स्योनाक के हैं—यह दीपन व पचने के समय कडुवा, कसैला व ठण्ढा होकर रूक्षता को करता है तथा तीखा होकर वायु, कफ, पित्त और खाँसी को विनाशता है और इसका बालफल रूखा होकर वायु व कफ को हरता है तथा हौलदिली को दूरकर कसैला, मीठा, हलका व रोचक होकर दीपित होता है॥

अब बड़े पञ्चमूल के नाम व गुण कहते हैं ।

बेल, अरणी, पाटला, कम्भारी और स्योनाक इन पाँचों से बड़ा 'पञ्चमूल' कहाता है—यह अग्नि को दीप्त करताहुआ हलका, गरम, तीखा व कसैला होकर चरबी, कफ, दमा और वायु को हरता है ॥

अब गोखुरू के नाम व गुण कहते हैं ।

त्रिकण्टक, कण्टफल, गोक्षुर, स्वादुकण्टक, गोकण्टक, भक्ष्यटक, त्रिकण्ट, व्यालदंष्ट्रक, श्वदंष्ट्रा, स्थूलशृङ्गाट, षडङ्ग, क्षुरक और त्रिक ये तेरह नाम गोखरू के हैं—यह ठण्ढी व स्वादिल होकर बल को करती हुई बस्ति को शोधती है तथा प्रमेह, दमा, खाँसी, रक्तपित्त, पथरी, सूज़ाक व हौलदिली को हरती हुई वायु को जीतती है ॥

अब शालपर्णी (शरवन) के नाम व गुण कहते हैं।

शालपर्णी, ध्रुवा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीतनी, स्थिरा, विदारिगन्धा, अतिगुहा, दीर्घमूला और अंशुमती ये दश नाम शरवन के हैं—यह भारी होकर छर्दि, ज्वर, दमा और अतीसार को दूर करती है तथा शोष या सूक व तीनों दोषों को हरती है और बहुत गरम होकर रसायनरूप से बर्तती है ॥

अब पृष्ठपर्णी (पिठवन) के नाम व गुण कहते हैं।

पृष्ठपर्णी, क्रोष्टुपुच्छा, धावनी, कलशारुहा, शृगालवृत्ता, अहितिला, पृथक्पर्णी और पर्णिका ये आठ नाम पिठवन के हैं—यह हलकी होकर आयुर्दाय को बढ़ाती है तथा मीठी व गरम होकर रक्तातीसार, दाह, प्यास, तीनों दोष, छर्दि और ज्वर को विनाशती है ॥

अब बड़ी कटाई के नाम व गुण कहते हैं।

बृहती, स्थूलभण्टाकी, विषदा, मदोत्कटा, वृन्ताकी, महती, सिंही, कण्टकी और राष्ट्रिकाकुली ये नव नाम बड़ी कटाई के हैं—यह क़ब्ज़ता को करतीहुई दिल को कुव्वत देती है और पाचनी होकर कफ व वायु को जीतती है तथा गरम होकर कुष्ठ, ज्वर, दमा, शूल, खाँसी और मन्दाग्नि को विनाशती है ॥

अब लघुकटाई व श्वेतकटाई के नाम व गुण कहते हैं।

कण्टारिका, कण्टकिनी, कण्टकारी, निदिग्धिका, दुःस्पर्शा, धावनी, क्षुद्रा, व्याघ्री, दुष्प्रदर्शिनी, बृहती, चन्द्रहासा, लक्ष्मणा, क्षेत्रदूतिका, गर्भदा, चन्द्रभा, चन्द्री, चन्द्रपुष्पा और प्रियंकरी ये अठारह नाम छोटी कटाई

व सफ़ेद कटाई के हैं–यह सररूप, तेज, कड़ुवी व दीपिनी होकर हलके रूप से रहती है तथा रूखी, गरम व पाचनी होकर खाँसी, दमा, ज्वर, कफ, वात, पीनस, पसली का दर्द, मूत्रकृच्छ्र और हृदय के रोगों को विनाशती है वैसेही सफ़ेद कटाई के भी येही गुण कहे हैं विशेषता से गर्भ को करती है॥

अब लघुपञ्चमूल के नाम व गुण कहते हैं।

गोखुरू, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटाई और बड़ी कटाई इन पाँचों वस्तुओं से लघुपञ्चमूल कहाता है–यह शरीर में बल को उपजाता हुआ पित्तवायु को दूर करता है व अतीव गरम नहीं है तथा मीठा होकर वीर्य को बढ़ाता है॥

अब दशमूल के नाम व गुण कहते हैं।

लघुपञ्चमूल व बृहत्पञ्चमूल इन दोनोंके मिलाने से वैद्यों ने दशमूल कहा है–यह तीनों दोष, दमा, खाँसी, शिर का दर्द, अपतन्त्रकवायु, तन्द्रा, पसीना, ज्वर, अफरा, अरुचि और पसली के रोग को जीतता है॥

अब ऋद्धि व वृद्धि के नाम व गुण कहते हैं।

ऋद्धि, सुखंयुग, लक्ष्मी, सिद्धि, सर्वजनप्रिया, ऋषिसृष्टा, रथाङ्ग, माङ्गल्य, श्रावणी, वसु, योग्य, युग्या और तुष्टिराशि ये तेरह नाम ऋद्धि व वृद्धि के हैं–ऋद्धि बल को करती, त्रिदोष को नाशती व वीर्य को बढ़ाती है तथा मीठी होकर भारीरूप से रहती है और वृद्धि गर्भदायक व ठण्ढी होकर आयुर्दाय को बढ़ाती है और खाँसी, क्षयीरोग तथा रक्त को विनाशती है॥

अब काकोली व क्षीरकाकोली के नाम व गुण कहते हैं ।

काकोली, मधुरा, वीरा, कायस्था, क्षीरशुक्लिका, ध्वांक्षोली, वायसोली, स्वादुमांसी, क्षीरकाकोली, सुराह्वा, क्षीरिणी, पीवर, सदृशस्कन्ध, सक्षीर, ससुगन्धक और क्षीरकाकोलिका ये सत्रह नाम काकोली व क्षीरकाकोली के हैं—यह पित्तदोष व ज्वर को विनाशती है तथा दोनों काकोली ठण्ढी होकर वीर्य को देती हैं व मीठी और भारी होकर वायु, दाह, रक्तपित्त, शोष, प्यास और ज्वर को जीतती हैं ॥

अब मेदा व महामेदा के नाम व गुण कहते हैं ।

मेदा, ज्ञेया, शालपर्णी, वृष्या, मेदोभवा और धरा ये छः नाम मेदा के हैं तथा महामेदा, वसुच्छिद्रा, त्रिदन्ता और दैवतामणि ये चार नाम महामेदा के हैं—ये दोनों भारी व स्वादिल होकर आयु को देती हैं व स्तनों के रोग और कफ को हरकर वीर्य को बढ़ाती हैं तथा ठण्ढी होकर रक्तपित्त, क्षयी और वायु को विनाशती हैं ॥

अब जीवक व ऋषभक के नाम व गुण कहते हैं ।

जीवक, मधुर, शृङ्गी, ह्रस्वाङ्ग और कूर्चशीर्षक ये पाँच नाम जीवक के हैं और ऋषभ, वीर, इन्द्राक्ष, विषाणी, दुर्धर और वृष ये छः नाम ऋषभक के हैं—ये दोनों बल को उपजाते हुए ठण्ढे होकर वीर्य और कफ को देते हैं तथा पित्त, दाह, रक्त, खांसी, वात, क्षयी और आमवात को हरते हैं ॥

अब अष्टवर्ग के नाम व गुण कहते हैं ।

ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली, मेदा, महामेदा,

जीवक और ऋषभक इन आठों चीज़ों के मिलाने से वैद्योंने अष्टवर्ग कहा है—यह ठण्ढा व अतीव वीर्यदायक होकर आयुर्दाय को बढ़ाता है तथा पित्त, दाह, रक्त और शोष को विनाशता है और स्तनों में दूध को उपजाता हुआ गर्भ को करता है॥

अब जीवन्ती के नाम व गुण कहते हैं।

जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, यशस्करी, शाकश्रेष्ठा, जीवभद्रा, मांगल्या और जीववर्द्धिनी ये नव नाम जीवन्ती के हैं—यह ठण्ढी, स्वादिल व चिकनी होकर त्रिदोष को विनाशती है तथा रसायनी व बलकारिणी होकर आँखों के लिये भलाई करतीहुई मल को बाँधती व हलकेरूप से रहती है॥

अब मुलहठी के नाम व गुण कहते हैं।

मधुयष्टी, क्लीतनक, यष्टीमधु, मधूलिका, यष्ट्याह्व, मधुक, यष्टिमधुक, जलजा और मधु ये नव नाम मुलहठी के हैं—यह भारी, ठण्ढी व बलदायक होकर प्यास, छर्दि और पित्त को जीतती है॥

अब माषपर्णी व मुद्गपर्णी के नाम व गुण कहते हैं।

माषपर्णी, कृष्णवृन्ता, काम्बोजी, हयपुच्छिका, मांसमाषा, सिंहमुखी, स्वादमाषा और महासहा ये आठ नाम माषपर्णी के हैं तथा मुद्गपर्णी, क्षुद्रसहा, सूर्यपर्णी, करङ्गिणी, वनजा, रिङ्गिणी, शिम्बी, सिंही और मार्जारगन्धिका ये नव नाम मुद्गपर्णी के हैं—और यह माषपर्णी ठण्ढी, तीखी व रूखी होकर वीर्य व कफ को उपजाती है तथा मीठी होकर मल को बाँधती हुई शोष, वायु, पित्त,

पित्तज्वर और रक्त को दूर करती है तथा इन्हीं उक्तगुणों वाली मुद्गपर्णी होती है और यह प्यास के दोष व बवासीर को हरती हुई हलकेरूप से रहती है॥

अब एरण्ड व लाल एरण्ड के नाम व गुण कहते हैं।

एरण्ड, दीर्घदण्ड, तरुण, वर्धमानक, चित्र, पञ्चांगुल, व्याघ्रपुच्छ और गन्धर्वहस्तक ये आठ नाम एरण्ड (रेंड) के हैं तथा रक्तैरण्ड, हस्तिकर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रतर, लघु, उत्तानपत्र, उरबु, वातवैरी और चुञ्चुला ये नव नाम लाल एरण्ड के हैं—ये दोनों मीठे, गरम व भारी होकर शूल, सूजन, कमर की दर्द, मूत्राशय, शिर की पीड़ा, जलन्धर, ज्वर, बद, दमा, कफ, अफरा, खाँसी, कुष्ठ और आमवात को विनाशते हैं तथा इनका फल भेदन, मीठा, खारी व गरम होकर वायुको जीतता है॥

अब काष्ठशारिवा व कृष्णशारिवा के नाम व गुण कहते हैं।

शारिवा, शारदा, आस्फोता, गोपकन्या, प्रतानिका, गोपाङ्गना, गोपवल्ली, लताह्वा और काष्ठशारिवा ये नव नाम काष्ठशारिवा के हैं तथा शारिवान्या, कृष्णमूली, भद्रचन्दनशारिवा, भद्रा, चन्दनगोपा, चन्दना और कृष्णवल्ली ये सात नाम कृष्णशारिवा के हैं—ये दोनों मीठी व चिकनी होकर वीर्यको करती हैं तथा भारी होकर मन्दाग्नि, अरुचि, दमा, छर्दि, खाँसी और प्यास को दूर करती हैं और तीनों दोष, रक्त, प्रदर, ज्वर और अतीसार को विनाशती हैं॥

अब जवासा व धमासा के नाम व गुण कहते हैं।

यास, मरुद्भव, अनन्त, दीर्घमूल, यवासक, बालपत्र,

समुद्रान्त, दूरमूल, अतिकण्टक, धन्वयास, ताम्रमूली, दुःस्पर्शा और दुरालभा ये तेरह नाम जवासाके हैं तथा यासक, कच्छुरा, ताम्रमूली और धन्वयवासक ये चार नाम धमासा के हैं—ये दोनों मीठे, रसीले, कड़ुवे व ठण्ढे होकर पित्त को हरते हैं तथा हलके होकर रक्त, कफ और भ्रम को विनाशते हैं॥

अब मुण्डी के नाम व गुण कहते हैं।

मुण्डी, भिक्षु, परिव्राजी, पावनी, तपोधना, श्रावणी, श्रीमती, मुण्डितिक्ता और श्रावणशीर्षका ये नव नाम मुण्डीके हैं—यह कड़ुवी, चरफरी व वीर्यवालोंको मीठी तथा हलकी होकर बुद्धि को बढ़ाती है तथा गलगण्ड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमिरोग, योनिरोग और पाण्डुरोग को जीतती है॥

अब महामुण्डी व भूमिकदम्ब के नाम व गुण कहते हैं।

महामुण्डी, लोभनीया और छिन्नग्रन्थिनिका ये तीन नाम महामुण्डी के हैं तथा भूतघ्न, कुलहल, लम्बुशालू व कदम्बक ये चार नाम भूमिकदम्ब के हैं—ये दोनों व कदम्ब का फूल गुणों से मुण्डी के समान जानना चाहिये॥

अब अपामार्ग के नाम व गुण कहते हैं।

अपामार्ग, शिखरी, किणही, खरमञ्जरी, अधःशल्य, शैखरिक, प्रत्यक्पुष्पी और मयूर ये आठ नाम अपामार्ग (ऊंगा या चिरचिरा) के हैं—यह सर, तीखा व दीपन होकर कफ व वायु को जीतता है तथा दाद, सेहुवाँ, बवासीर, खाज, शूल, जठररोग और अरुचिको विनाशता है॥

अब लाल चिरचिरा के नाम व गुण कहते हैं।

अन्यरक्त, वृन्तफल, वशिर और कपिपिप्पली ये चार नाम लाल ऊंगा के हैं—यह वायु व क़ब्ज़ता को करता हुआ कफ को विनाशता है तथा पूर्व के गुणों से ऊन-गुणवाला होकर रूखा रहता है और इसका पत्ता भी रक्तपित्त को नाशता है॥

अब कपाला के नाम व गुण कहते हैं।

काम्पिल्य, रेचन, रक्तचूर्णक, व्रणशोधन, लोहित, रक्तशमन, रेची और रञ्जनक ये आठ नाम कपाला के हैं—यह कफ, रक्तपित्त, क्रिमि, गोला, जठररोग और घावों को नाशता हुआ जुलाब को लगाता है तथा उसका साग कडुवा व गरम होकर क़ब्ज़ता को करता हुआ ठण्ढेरूप से रहता है॥

अब दन्ती (जमालगोटा) के नाम व गुण कहते हैं।

दन्ती, गुणप्रिया, नागदन्ती, शीघ्रानुकूलक, उपचित्रा, अनुकुम्भी, विशल्या, उदुम्बरच्छदा, आखुपर्णी, वृषैरण्ड, द्रवन्ती, सर्वरी, मूषकाह्वा, सुतश्रेणी, प्रत्यक्-श्रेणी और फञ्जिका ये सोलह नाम दोनों प्रकार के जमालगोटों के हैं—ये दोनों सर, पाक व रस में कडुवी, तीखी व गरम होकर पित्त, रक्त, कफ, सूजन, जठररोग और क्रिमिरोग को विनाशती हैं॥

अब जयपाल के नाम व गुण कहते हैं।

जयपाल, दन्तिबीज और तित्तिरीफल ये तीन नाम जयपाल के हैं—यह भारी व चिकना होकर जुलाब को लगाता है तथा पित्त और कफ को विनाशता है॥

अब सफ़ेद निशोत के नाम व गुण कहते हैं।

त्रिवृत, कुम्भ, निशोत्रा, त्रिभण्डी, कूटरवाहिनी, सर्वानुभूति, त्रिवृता, त्रिपुटा, सरला और सिता ये दश नाम सफ़ेद निशोत के हैं—यह तीखी, सर, रूखी, मीठी व गरम होकर वात को करती है तथा पचने के समय कड़ुवी होकर ज्वर, कफ, पित्त, सूजन व जठररोग को विनाशती है॥

अब स्याह निशोत के नाम व गुण कहते हैं।

त्रिवृत्काला, कालमेषी, कालपर्णी, अर्धचन्द्रिका, सुखेना, मालविका, मसूरा और विदला ये आठ नाम काली निशोत के हैं—यह सफ़ेद निशोत से स्वल्पगुणों वाली होकर तेज़ जुलाब को लगाती है तथा मूर्च्छा, दाह, मद, भ्रम और छर्दि को खींचलेती है॥

अब इन्द्रवारुणी के नाम व गुण कहते हैं।

इन्द्रवारुणी, इन्द्राह्व, वृषभाक्षी, गवादिनी, ऐन्द्रवारु, क्षुद्रफला, विशाला, ऐन्द्री और वृषादिनी, ये नव नाम इन्द्रायन के हैं तथा अन्येन्द्रवारुणी, चित्रफला, चित्र-महाफला, आत्मरक्षा, नागदन्ती, त्रपुषी, गजचिर्भटी, श्वेतपुष्पी, मृगाक्षी, पक्षसुरा, मरुद्भवा, क्रिमिगुहा और चित्रदेवी ये तेरह नाम दूसरी इन्द्रायन के हैं—ये दोनों तीखी, पाक में कड़ुवी, सर, हलकी व वीर्य में गरम होकर कामला, वायु, पित्त, कफ, तापतिल्ली और जठर-रोग को विनाशती हैं॥

अब अमलतास के नाम व गुण कहते हैं।

आरग्वध, राजवृक्ष, शम्याक, कृतमालक, व्याधि-

घात, कर्णिकार, प्रग्रह, चतुरंगुल, आरोग्यशिम्बी, स्वर्णाट, कर्ण, दीर्घफल, कुण्डली, हिमपुष्पा, कालिख्यात, नृपद्रुम, स्वर्णशेफालिका, श्यावा, कुष्ठसूदन, स्वर्ण-स्थाल्या, पित्तला और सुवर्णद्रुम ये बाईस नाम अमल-तासके हैं—यह भारी, मीठा, ठण्ढा होकर कोमल जुलाब को लगाताहै तथा ज्वर, जठररोग, रक्तपित्त, वायु, उदा-वर्त और शूल को जीतता है और इसका फूल वातिल होकर क़ब्ज़ता को करता है तथा तीखा होकर पित्त व कफ को विनाशता है और इसकी गिरी भी पाकमें मीठी व तीखी होकर पित्त व वायु को जीतती है॥

अब नील के नाम व गुण कहते हैं।

नीलिनी, नीलिका, ग्राम्या, श्रीफला, भारवाहिनी, रञ्जनी, कालिका, मेला, तूणी, रूक्षा और विशोधिनी ये ग्यारह नाम नील के हैं—यह रेचनी व तीखी होकर बालों को स्याह करती है तथा मोह व भ्रम को हरतीहुई गरम होकर जलोदर, तापतिल्ली, वातपित्त, कफ और वायु को विनाशती है॥

अब कुटकी के नाम व गुण कहते हैं।

कटुकी, रोहिणी, तिक्ता, चक्राङ्गी, कटुरोहिणी, मत्स्य-पित्ता, पाण्डुरुहा, कृष्णभेदा, द्विजाङ्गिका, अशोकरो-हिणी, मत्स्या, सकुला और सकुलादिनी ये तेरह नाम कटुकी (कुटकी) के हैं—यह पाक में कड़वी, तीखी, रूखी, सर, हलकी व ठण्ढी होकर क्रिमि, दमा, दाह, पित्त, कफ और ज्वर को विनाशती है॥

अब अङ्कोल के नाम व गुण कहते हैं ।

अङ्कोलक, ताम्रफल, पीतसार, निरोचक, गुप्तस्नेह, विरेची, भूषित और दीर्घकीलक ये आठ नाम अङ्कोल के हैं—यह कड़ुवा, चिकना, तीखा, गरम, कसैला व हलका होकर रेचन (दस्त) को लगाता है तथा क्रिमि, शूल, आमवात, सूजन, कफ और विष को विनाशता है और इसका फल ठण्ढा व मीठा होकर कफको करता है तथा पुष्टकारी व भारी होकर बलको देता हुआ जुलाब को लगाता है और वायु, पित्त, दाह, क्षयी व रक्तका जीतता है॥

अब सेहुँड़ के नाम व गुण कहते हैं ।

सेहुण्ड, वज्रतुण्ड, गाण्डीर, वज्रकण्टक, स्नुही(स्नुहा-स्नुक) सम, दुग्ध, असिपत्र, वज्री और महातरु ये दश नाम सेहुँड़ के हैं—यह जुलाब को लगाता हुआ तीखा, दीपन, चरफरा व भारी होकर शूल, आष्ठीलिका, अफरा, गोला, सोजा, जलोदर, वात, दूषीविष, तापतिल्ली, कुष्ठ, उन्माद, पथरी और पाण्डुरोग को विनाशता है ॥

अब नींब के नाम व गुण कहते हैं ।

निम्ब, नियमन, नेता, अरिष्ट, पारिभद्रक, सुतिक्त, सर्वतोभद्र, पिचुमन्द, प्रभद्रक, कुष्ठहा, देवदत्त, रविसन्निभ और सूर्यक ये तेरह नाम नींब के हैं—यह ठण्ढा व हलका होकर क़ब्ज़ता को लाता है तथा पाक में कड़ुवा होकर अग्नि और वायुको करता है और घाव, पित्त, कफ, छर्दि, कुष्ठ, थुकथुकी व प्रमेह को विनाशता है तथा इसका पत्ता नेत्रों के लिये हितदायी होकर क्रिमि, पित्त और विष को दूर करता है और इसका फल भी भेदन, चिक्कना

व गर्म होकर कुष्ठ को हरता हुआ हलके रूप से रहता है और नींब आमको पकाता है तथा पके हुये को सुखाता है ॥

अब महानिम्ब (बकायन) के नाम व गुण कहते हैं।

महानिम्ब, निम्बकर, कामुक, विषमुष्टिक, रम्यक, गिरिक, अद्रेक, क्षार और केशमुष्टिक ये नव नाम बकायन के हैं—यह ठण्ढा, रूखा व तीखा होकर क़ब्ज़ताको लाता तथा कसैला होकर कफ, पित्त, क्रिमि, छर्दि, कुष्ठ, थुकथुकी और रक्त को जीतता है ॥

अब चिरायता के नाम व गुण कहते हैं।

किराततिक्त, कैरात, भूनिम्ब, रामसेनक, किरातक, नैपाल, नाडीतिक्त, ज्वरान्तक, कण्डुतिक्त, अर्धतिक्त, निद्रारि और सन्निपातहा ये बारह नाम चिरायता के हैं—यह वायु को उपजाता हुआ रूखा, ठण्ढा, तीखा व हलका होकर सान्निपात, ज्वर, दमा, खाँसी, रक्तपित्त और दाह को विनाशता है ॥

अब कुटज (कुड़ा) के नाम व गुण कहते हैं।

कुटज, मल्लिकापुष्प, कालिङ्ग, गिरिमल्लिका, वत्सक, कूटज, कोटिवृक्षक और शक्रभूरुह ये आठ नाम कुड़ा के हैं यह कडुवा, रूखा व अग्नि को प्रकाशता हुआ कसैला व हलका होकर बवासीर, अतीसार, रक्तपित्त, कफ, प्यास, आमवात और कुष्ठ को विनाशता है तथा इसका फूल वातिल ठण्ढा व तीखा होकर पित्त और अतीसार को जीतता है ॥

अब इन्द्रयव के नाम व गुण कहते हैं।

ऐन्द्रयव, ऐन्द्रफल, कालिङ्ग, कौटज, शक्राह्व, पुरुहूत और भद्रयव ये सात नाम इन्द्रयव के हैं—यह त्रिदोष को नाशता व क़ब्ज़ता को करता हुआ ठण्ढा व कड़ुवा होकर ज्वर, अतीसार, रक्तबवासीर यानी (खूनीबवासीर), क्रिमि, वीसर्प और कुष्ठ को विनाशता है॥

अब मैनफल के नाम व गुण कहते हैं।

मदन, छर्दन, पिण्डीराठ, पिण्डीतक फल, करहाट, तगर, शल्यक और विषपुष्पक ये नव नाम मैनफल के हैं—यह छर्दि को लाता हुआ कड़ुवा, वीर्य में गरम, लेखन, हलका व रूखा होकर कुष्ठ, कफ, अफरा, सूजन, गोला और घावों को विनाशता है॥

अब कंकुष्ठ के नाम व गुण कहते हैं।

कंकुष्ठ, कङ्काककुष्ठ, रेचन, रङ्गनामक, शोधन, पुलह, हास, वराङ्ग और कुञ्जबालुक ये नव नाम कंकुष्ठके हैं—यह जुलाब को लगाता हुआ तीखा, कड़ुवा व गरम होकर वर्ण को करता है तथा क्रिमि, सूजन, उदररोग, मलमूत्रारोध, गोला, अफरा और कफ को विनाशता है॥

अब चोष के नाम व गुण कहते हैं।

हेमाह्वा, कनकक्षीरी, हेमपुष्पी, हिमावती, क्षीरिणी, काञ्चनक्षीरी, कटुपर्णी, चिकर्षणी, तिक्तदुग्धा, हैमवती, पीतदुग्धा और हिमाद्रिका ये बारह नाम चोष के हैं—यह दस्त को लगाती हुई तीखी होकर मन्दाग्नि व ग्लानि को करती है तथा क्रिमि, खाज, कफ, अफरा, विष और कुष्ठ को विनाशती है॥

अब सातला के नाम व गुण कहते हैं।

सातला, विरला, सारी, सत्फला, बहुफेनका, चर्मसाह्वा, चर्मकासा, फेना, दीप्ता तथा नालिका ये दश नाम सातला के हैं—यह पाकमें कड़वी होकर वायु को उपजाती है तथा ठण्ढी, हलकी व तीखी होकर सूजन, कफ, अफरा, पित्त, उदावर्त और रक्त को जीतती है ॥

अब असिमिलोग (थूहरविशेष) के नाम व गुण कहते हैं।

अश्मन्त, मालुकापात्र, युग्मपत्र, अम्लपत्रक, श्लक्ष्णात्वक्, अश्वयोनि, कुशली और पापनाशन ये आठ नाम असिमिलोगके हैं—यह कसैला होकर क़ब्ज़ता को लाता है तथा ठण्ढा व गरम होकर कफ वायु को जीतता है और गण्डमाला, रक्त, गलगण्ड व गलरोग को विनाशता है और इसका फल लेखन होकर मल को बाँधता है तथा भारी होकर कफ, वायु को दूर करता है ॥

अब कचनार के नाम व गुण कहते हैं।

काञ्चनार, काञ्चनक, पाकरी और रक्तपुष्पक ये चार नाम कचनार के हैं और इसीका भेद कोविदार होता है तथा कुद्दाल, कुहली, कुली, आस्फोत, दालक, स्वल्पकेशर और चमरी ये सात नाम कोविदार (लालकचनार) के हैं—यह ठण्ढा होकर क़ब्ज़ता को लाता है तथा कसैला होकर रक्तपित्त को विनाशता है और क्रिमि, कुष्ठ, काँच का निकलना, गण्डमाला व घावों को दूर करता है तथा उक्त गुणोंवाला लालकचनार भी कहाता है और इन दोनों के फूल ठण्ढे, हलके व रूखे होकर मल को बाँधते हैं तथा पित्तरक्त, प्रदर, घाव और खाँसी को विनाशते हैं॥

अब दोनों संभालुओं के नाम व गुण कहते हैं।

निर्गुण्डी, श्वेतकुसुम, सिन्दुक, सिन्दुवारक ये चार नाम सफ़ेद फूलवाली संभालू के हैं और भूतकेशी, नीलसिन्दुक, पुष्पनीलक, शेफालिका, शीतभीरु, वनक और अनिलमञ्जरी ये सात नाम स्याह फूलवाली संभालू के हैं—यह स्मृतिदायक, तीखी, कसैली, कड़ुवी व हलकी होकर बालों को बढ़ाती हुई नयनों के लिये हित करती है तथा शूल, शोथ, आमवात, क्रिमि, कुष्ठ, अरुचि, कफ और घावों को विनाशती है और इन उक्त गुणोंवाली नीलसंभालू को भी जानना चाहिये॥

अब मेढ़ासिंगी के नाम व गुण कहते हैं।

मेषशृङ्गी, मेषवल्ली, सप्तदंष्ट्रा, अजशृङ्गिका, दक्षिणावर्ता, वृश्चिकाली और विषाणिका ये सात नाम मेढ़ासिंगी के हैं—यह रसमें तीखी व वातिल होकर खाँसी को विनाशती है तथा पाकमें रूखी व कड़ुवी होकर पित्त, घाव, कफ और नेत्रशूल को दूर करती है॥

अब पुनर्नवा के नाम व गुण कहते हैं।

पुनर्नवा, श्वेतमूला, पृथ्वीक, दीर्घपत्रक, विषाददीर्घ, वर्षाभू, पुनर्भू और मण्डलच्छदा ये आठ नाम पुनर्नवा के हैं—यह सर, तीखी, रूखी, गरम व मीठी होकर कड़ुवे रूप से रहती है॥

अब लाल पुनर्नवा के नाम व गुण कहते हैं।

पुनर्नवा, अरुणा, तिक्ता, रक्तपुष्पा, कटिल्लका, क्रूरक, क्षुद्रवर्षाभू, वर्षाकेतु और शिवाटिका ये नव नाम लाल पुनर्नवा के हैं—यह शोथ, वायु, घाव व कफ को हरती है

तथा रुचि को उपजातीहुई रसायनरूपसे रहती है और श्रेष्ठपुनर्नवा तीखी व पाक में कड़ुवी, ठण्ढी व हलकी होकर वायु को उपजाती है तथा क़ब्ज़ता को करती हुई कफ और रक्तपित्त को विनाशती है॥

अब रास्ना के नाम व गुण कहते हैं।

रास्ना, रम्या, युक्तरसा, रसना, गन्धनाकुली, सुगन्धमूला, अतिरसा, श्रेयसी, सुवरा और सरा ये दश नाम रास्ना के हैं—यह आम को पकाती हुई कड़ुवी, भारी व गरम होकर कफ व वायु को जीतती है तथा सूजन, दमा, वातरक्त, वायुशूल और उदररोग को विनाशती है॥

अब असगन्ध के नाम व गुण कहते हैं।

अश्वगन्धा, तुरङ्गाह्वा, गोकर्ण, अवरोहक, वराहकर्णी, वरदा, बल्या, वाजीकरी और वृषा ये नव नाम असगन्धके हैं—यह वायु, कफ, सूजन, सफ़ेदकोढ़ व क्षयी को नाशती हुई बल को करती है तथा रसायनी, कड़ुवी, कसैली व गरम होकर अतीव वीर्य को बढ़ाती है॥

अब प्रसारणी के नाम व गुण कहते हैं।

प्रसारणी, राजबला, चारुपर्णी, प्रतानिका, शरणी, सारणी, भद्रपर्णी, सुप्रसरा और सरा ये नव नाम प्रसारणी के हैं—यह भारी, आयुको बढ़ाती व टूटे को जोड़ती हुई बलको करती है तथासर व वीर्यमें गरम व वायु को हरती हुई कड़ुवी होकर वातरक्त और कफ को विनाशती है॥

अब शतावरी के नाम व गुण कहते हैं।

शतावरी, द्वीपिशत्रु, द्विपका, धरकण्टका, नारायणी, शतपदी, शतपाद् और बहुपत्रिका ये आठ नाम शता-

वरी के हैं—यह भारी, ठण्ढी, मीठी व चिकनी होकर रसायनरूप से रहती है तथा वीर्य व स्तनों में दूध को करती हुई बल को धारती है और वातपित्त, रक्त तथा शोथ को जीतती है॥

अब बड़ी शतावरी के नाम व गुण कहते हैं।

शतावरी, ऊर्ध्वकण्ठा, पीवरी, धीवरी, वरी, अभीरु, बहुपत्रा, महापुरुषदन्तिका, सहस्रवीर्या, केशी, तुङ्गिनी और सूक्ष्मपत्रिका ये बारह नाम बड़ी शतावरीके हैं—यह बुद्धि को उपजाती व हृदय के लिये हित चाहती हुई आयुर्दायको बढ़ाती है तथा रसायनरूप व वीर्य में ठण्ढी होकर बवासीर, संग्रहणी व आँखों के रोगों को विनाशती है और इसका अंकुर त्रिदोषों को हरता हुआ हलका होकर बवासीर व क्षयी को विनाशता है॥

अब खरैंहटी, सहदेई, बलिका व गंगेरन के नाम व गुण कहते हैं।

बला, बट्यालक, शीतपाकी, वाट्योदराह्वया, भद्रौदनी, समङ्गा, समांसा और खरयष्टिका ये आठ नाम खरैंहटी के हैं महाबला, वीरपुष्पी, सहदेवी, बृहद्बला, वाट्यायनी, देवसहा, वाट्या और पीतपुष्पिका ये आठ नाम सहदेई के हैं बलाका, अतिबला, भारद्वाजी और वृक्षगन्धिनी ये चार नाम बलिका के हैं गङ्गेरुकी, नागबला, विश्वदेवा और गवेधुका ये चार नाम गंगेरन के हैं—ये खरैंहटी आदि चारो ठण्ढी व मीठी होकर बल और कान्ति को करती हैं तथा चिकनी व क़ब्ज़ता को धारती हुई वायु को, अम्लपित्त, रक्त और घावों को विनाशती हैं और इन्होंमें से सहदेई मूत्रकृच्छ्र को नाशती हुई वायु

को अनुलोमित करती है तथा गंगेरन भारी होकर वीर्य को उपजाती है व विशेषता से रक्तपित्त को दूर करती है तथा बलदायक व रसायनी होकर पुरुषार्थ को बढ़ाती हुई आयुर्दाय को देती है और इसका फल भी ठण्ढा, मीठा, स्तम्भनकारी, भारी व लेखन होकर मूत्रारोध व अफरा को पैदा करता हुआ रक्तपित्त को बढ़ाता है॥

अब मालकाँगनी के नाम व गुण कहते हैं।

ज्योतिष्मती, वह्निरुचि, कंगुणी और कटुभी ये चार नाम मालकाँगनी के हैं यह कडुवी. तीखी व सर होकर कफ व वायु को जीतती है तथा बहुत गरम होकर वमन कराती है व तीक्ष्ण होकर अग्नि, बुद्धि, स्मरण-शक्ति को देती है॥

अब तेजबल के नाम व गुण कहते हैं।

तेजस्विनी, तेजवती, तेजिन्या, लघुवल्कला, महौजसी, पारिजाता, शीता, तिक्ता और अतितेजनी ये नव नाम तेजबल के हैं--यह कफ, दमा, खाँसी, शूल और आमवायु को जीतलेती है तथा पाचनी, गरम, कडुवी व तीखी होकर रुचि और अग्नि को प्रकाशती है॥

अब देवदारु के नाम व गुण कहते हैं।

देवदारु, सुराह्व, भद्रदारु, सुरद्रुम, भद्रकाष्ठ, स्नेह-वृक्ष, क्रिमिल और शक्रदारु ये आठ नाम देवदारु के हैं—यह कडुवा. चिकना. तीखा, गरम और हलका होकर अफरा, ज्वर, शोथ, आमवात, हिचकी, खाज, कफ और वायु को विनाशता है॥

अब सरल के नाम व गुण कहते हैं।

सरल, नन्दन, श्रीडा, नमेरु, द्विकवृक्षक, पीतद्रारु, पीतवृक्ष, महादीर्घ और कलिद्रुम ये नव नाम सरल के हैं—यह कडुवा, पाक तथा रस में मीठा, हलका, गरम और चिकना होकर वायु, नेत्ररोग, कण्ठरोग तथा कर्ण-रोग को विनाशता है॥

अब पुष्करमूल के नाम व गुण कहते हैं।

पौष्कराह्व, पद्मपत्र, पौष्कर, पुष्कराह्वक, काश्मीर, पुष्करजटा, मूलवीर और सुगन्धिक ये आठ नाम पुष्कर-मूलके हैं—यह कडुवा, तीखा व गरम होकर वायु, कफ, ज्वर, सूजन, अरुचि और दमा को विनाशता है तथा विशेषता से पसलीशूल को जीतता है॥

अब कूट के नाम व गुण कहते हैं।

कुष्ठ, रोगाह्वय, दिव्य, कौबेर, पारिभद्रक, पारिहार्य, परिभाव्य, उत्पल और पारिभद्रक ये नव नाम कूट के हैं—यह गरम, कडुवा, मीठा और तीखा होकर वीर्यदायक होता है तथा हलका होकर वातरक्त, वीसर्प, कुष्ठ, खाँसी, वात और कफ को विनाशता है॥

अब काकड़ासिंगी के नाम व गुण कहते हैं।

शृङ्गी, कुलीरशृङ्गी, वक्रा, कर्कटशृङ्गिका, कर्कटाक्षा, महाघोषा, शृङ्गनाम्नी और नताङ्गी ये आठ नाम काकड़ा-सिंगी के हैं यह कसैली, तीखी व गरम होकर हिचकी, छर्दि, ज्वर, कफ, दमा, क्षयी, खाँसी और ऊर्ध्ववायु को नष्टकर पुरुषार्थ को बढ़ाती है॥

अब कायफल के नाम व गुण कहते हैं ।

कट्फल, कुमुदा, कुम्भी, श्रीपर्णी, लोमपादप, सोमवल्क, महाकुम्भी, भद्रा, भद्रवती और शिवा ये दश नाम कायफल के हैं—यह कसैला, तीखा और कडुवा होकर वायु, कफज्वर, दमा, प्रमेह, बवासीर, खाँसी, कण्ठरोग और अरुचि को विनाशता है॥

अब रोहिष के नाम व गुण कहते हैं ।

रोहिष, कत्तृण, भूति, भूतिक, सरल, तृण, श्यामल, युग्मक, पौर, व्यापक और देवगन्धक ये ग्यारह नाम रोहिषतृण के हैं—यह पाक में कडुवा, तीखा, गरम व कसैला होकर वात, पित्त, रक्तस्राव, दमा और कफज्वर को विनाशता है॥

अब भारङ्गी के नाम व गुण कहते हैं ।

भारङ्गी, भृगुभवा (भार्गी), पद्मा, कासघ्नी, गन्धपर्णी, खरशाक, शुक्रमाता, भङ्गी और ब्राह्मणयष्टिका ये नव नाम भारङ्गी के हैं—यह रूखी, कडुवी व तीखी होकर रुचि को पैदा करती है तथा गरम व पाचिनी होकर सूजन, खाँसी, कफ, दमा, पीनस, ज्वर और वायु को जीतती है॥

अब पाषाणभेद के नाम व गुण कहते हैं ।

पाषाणभेद, पाषाण अश्मरीभेद, अश्मभेदक, शिलाभेद, दृषद्भेद, नागभिन्न और अङ्कभेदन ये आठ नाम पाषाणभेद के हैं—यह कसैला व ठण्ढा होकर बस्ति को शोधता है तथा सर व तीखा होकर प्रमेह, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र और पथरी को जीतता है॥

अब नागरमोथा के नाम व गुण कहते हैं।

मुस्त, वारिधर, मुस्ताह्व, मेघाख्य, कुरुविन्दक, वराह, अब्द, घन, भद्रमुस्त, राजकसेरुक, पिण्डमुस्त, विषध्वंसी और नागर ये तेरह नाम नागरमोथा के हैं—यह कडुवा व ठण्ढा होकर क़ब्ज़ता को लाता है तथा तीखा, दीपक, पाचक व कसैला होकर क्रिमि, रक्तपित्त, कफ, प्यास और ज्वर को विनाशता है॥

अब धाय के नाम व गुण कहते हैं।

धातकी, कुञ्जरा, सिन्धुपुष्पी, प्रमदिनी, मदा, पार्वतीया, ताम्रपुष्पी, सुभिक्षा और मेघवासिनी ये नव नाम धाय के हैं—यह कडुवी, ठण्ढी, कम गरम, कसैली व हलकी होकर प्यास, अतीसार, रक्तपित्त, विष, क्रिमि और विसर्परोग को जीतती है॥

अब माचिका के नाम व गुण कहते हैं।

माचिका, बालिका, अम्बष्ठा, शठी, दन्तशठी, अम्बिका, अम्बष्ठकी, सूचिमुखी, कषाया और साकण्ठमुखी ये दश नाम माचिका के हैं—यह गरम, रस व पाक में कसैली तथा ठण्ढी व हलकी होकर पकेहुए अतीसार, रक्तपित्त, कफ और कण्ठरोग को विनाशती है॥

अब बिदारी "कन्द" के नाम व गुण कहते हैं।

विदारिका, वृक्षवल्ली, वृक्षकन्दा, विदालिका, शृङ्गालिका, कन्दवल्ली, स्वादुकन्दा, फलाशका, शुक्ला, क्षारशुक्ला, क्षारवल्ली, पयस्विनी, इक्षुवल्ली, महाश्वेता, क्षीरकन्दा और क्षीरगन्धिका ये सोलह नाम बिदारी "कन्द" के हैं—यह मीठी व चिकनी होकर पुष्टता को करती हुई

स्तनों में दूध और वीर्य को देती है तथा भारी होकर पित्त, लोहू, वायु व दाह को नाशती हुई रसायनरूप से रहती है ॥

अब वाराहीकन्द के नाम व गुण कहते हैं।

वाराही, माधवी, गृष्टि, शीकरी, वनमालिका, वाराहीकन्द, किटि, क्रोडनामा और संवरकन्दक ये नव नाम वाराहीकन्द के हैं—यह मीठी, पाक के समय कड़ुवी व तीखी होकर अत्यन्त वीर्य को पैदा करती है तथा बलदायक होकर पित्त को उपजाती हुई वायु, कफ, प्रमेह और क्रिमिरोगों को जीतती है ॥

अब पाठा के नाम व गुण कहते हैं।

पाठा, अम्बष्ठा, बृहत्तिक्ता, प्राचीना, अम्बष्ठका, सरा, वरा, तिक्ता, पापचेली, श्रेयसी और वृद्धिकर्णिका ये ग्यारह नाम पाठा के हैं—यह गरम, कड़ुवी व तीखी होकर वायु व कफ को हरती है तथा हलकी होकर शूल, ज्वर, छर्दि, कुष्ठ, अतीसार, हृदय का रोग, दाह, खुजली, विष, दमा, क्रिमि, गोला, कृत्रिमविष और फोड़ों को विनाशती है॥

अब मुरहरी के नाम व गुण कहते हैं।

* मूर्वा, देवी, मधुरसा, देवश्रेणी, मधुस्रवा, स्निग्धपर्णी, पृथक्पर्णी, मोरटा, पीलुकर्णिका, जालिनी, ततवल्का, नन्दिनी और पृथक्त्वचा ये बारह नाम मुरहरी (चिनार) के हैं—यह दस्तावर, भारी, मीठी और तीखी होकर पित्तरक्त, प्रमेह, त्रिदोष, प्यास, हृद्रोग, खुजली,

* मूर्वादेवी मधुरसा मोरटा तेजनी तु वा। मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपीत्यमरः ॥

कोढ़, ज्वर, पित्त और वायु को दूर करती है तथा पुष्ट होकर कफ को करती व दिल को कुव्वत देती व क़ब्ज़ता को लाती हुई गोले को विनाशती है॥

अब मँजीठ के नाम व गुण कहते हैं।

मञ्जिष्ठा, विजया, रक्ता, रक्ताङ्गी, कालमेषिका, रक्तयष्टी, ताम्रवल्ली, समङ्गा, वस्त्रभूषणा, मञ्जुला, विकशा, भङ्गी, छद्मिका और ज्वरनाशिनी ये चौदह नाम मँजीठ के हैं—यह मीठी, तीखी व कसैली होकर सोने के समान अङ्ग को करती है तथा भारी व गरम होकर विष, कफ, सूजन, योनिशूल, नेत्रशूल, रक्तातीसार, कुष्ठ, रक्त, विसर्प, घाव और प्रमेह को जीतती है और इसका साग अग्नि को प्रकाशता हुआ मीठा व चिकना होकर पित्त और वायु को विनाशता है॥

अब हल्दी के नाम व गुण कहते हैं।

हरिद्रा, रजनी, गौरी, रञ्जिनी, वरवर्णिनी, पिण्डा, पीता, वर्णवती, निशा, वर्णा और विलासिनी ये ग्यारह नाम हल्दी के हैं—यह कड़ुवी, तीखी, रूखी व गरम होकर कफ व पित्त को हरती है तथा रंग को निखारती हुई त्वग्दोष, दाह, प्रमेह, रक्त, शोथ, पाण्डुरोग और घावों को विनाशती है॥

अब दारुहल्दी के नाम व गुण कहते हैं।

दार्वी, दारुहरिद्रा, पीतदारु, पञ्चधा, कटंकटेरी, पित्तद्रु, स्वर्णवर्णा और कटंकटी ये आठ नाम दारुहल्दी के हैं—इसमें हल्दी के समान गुण जानना चाहिये परन्तु

विशेषता से नेत्ररोग, कर्णरोग और मुखरोगों को विनाशती है ॥

अब पवाँर के नाम व गुण कहते हैं ।

प्रपुन्नाट, एडगज, चक्रमर्द, प्रपुन्नट, दद्रुघ्न, मर्दक, मेघकुसुम और कुष्ठकृन्तन ये आठ नाम पवाँर (चकवँड़) के हैं—यह हलका, मीठा व रूखा होकर पित्त व वायु को विनाशता है तथा हृदय के लिये हितदायी व गरम होकर कफ, दमा, कुष्ठ, दाद, विष और वायु को जीतता है तथा इसका फल गरम होकर कुष्ठ, खुजली, दाद, विष और वात को हरता है और इसका साग भी वात-रक्त को हरकर कफको करता हुआ हलके रूपसे रहताहै॥

अब बाकुची के नाम व गुण कहते हैं ।

बाकुची, चन्द्रिका, सोमवल्ली, पूतिफला, वरा, सोम-राजी, कृष्णफला, वल्गुजा, कालमेषिका, चन्द्रलेख, सोम और कुष्ठघ्नी ये तेरह नाम बाकुची के हैं—यह मीठी, तीखी व पाक में कड़ुवी होकर रसायनरूप से रहती है तथा क़ब्ज़ता को लातीहुई ठण्ढी होकर रुचि को पैदा करती है और दस्तावर व हृदय को हितदायक होकर रक्तपित्त को हरती है व रूखी होकर कफ, दमा, कोढ़, प्रमेह, ज्वर और क्रिमिरोग को विनाशती है और इसका फल भी पित्त, मूत्रकृच्छ्र, कुष्ठ, वायु और कफ को दूर करता है ॥

अब भँगरा के नाम व गुण कहते हैं ।

भृङ्गराज, भेकराज, मार्कव, केशरञ्जक, अङ्गारक, भृङ्गिराज, भृङ्गाह्व और सूर्यवल्लभ ये आठ नाम

भँगरा के हैं—यह कड़ुवा, तीखा, रूखा व गरम होकर कफ व वायु को करता है तथा दांतों को दृढ़ करता हुआ रसायनरूप होकर बिगड़ी खाल को सुधारता है और कोढ़, आँखों की पीड़ा व माथे की पीड़ा को दूर करदेता है ॥

अब पित्तपापड़ा के नाम व गुण कहते हैं ।

पर्पट, कवच, रेणु, पित्तहा, वरकण्टक, वरतिक्त, पर्पटक, पृथ्विक और चर्मकण्टक ये नव नाम पित्तपापड़ा के हैं—यह पित्तरक्त, भ्रम, प्यास और कफज्वर को विनाशता है तथा क़ब्ज़ता को धारताहुआ ठण्ढा व तीखा होकर दाह को हरता है और वायु को उपजाता हुआ हलके रूप से रहता है और लाल फूलोंवाला पित्तपापड़ा भी अतीसार को बराताहुआ ज्वर को विनाशता है तथा पित्त, पेट का रोग, दाह व ज्वर को जीतकर कफ को सोख लेता है और चिरायता, पित्तपापड़ा ये दोनों तीखे व ठण्ढे होकर ज्वर को हरतेहुए हलकेरूप से रहते हैं ॥

अब त्रायमाणा के नाम व गुण कहते हैं ।

शणपुष्पी, माल्यपुष्पी, धावनी, शणघण्टिका, बृहत्पुष्पी, स्वल्पघण्टा, घण्टाशब्दा, पुष्पिका, त्रायमाणा, सुहृत्त्राणा, त्रायन्ती, गिरिसानुजा, बलभद्रा, कृतत्राणा, वार्षिका और त्रायमाणिका ये सोलह नाम त्रायमाणा (चिरायता के फल व बनफ्साभेद) के हैं—यह कड़ुवी होकर पित्त व कफ को जीतकर छर्दि को करती है तथा

दस्तावर होकर पित्तज्वर, कफ और रक्तशूलको जीतती है॥

अब महाजालनिका के नाम व गुण कहते हैं।

महाजालनिका, चर्मरङ्ग, तिलपुष्पिका, आवर्तकी, बिन्दुकिनी, विभाण्डी, रक्तपुष्पिका ये सात नाम महाजालनिका के हैं—यह तीखी व जुलाब को लगाती हुई कफ व पित्त को जीतती है तथा दाह, उदररोग, अफरा, सूजन, कोढ़, क्रिमि और ज्वर को विनाशती है॥

अब अतीस के नाम व गुण कहते हैं।

अतिविषा, शुक्लकन्दा, विषा, प्रतिविषा, श्यामकन्दा, शिता, शृङ्गी, भंगुरा और उपविषाणिका ये नव नाम अतीस के हैं—यह गरम, पाचिका व तीखी होकर कफ पित्त और अतीसार को जीतती है और जो श्यामकन्दा व उपविषा नाम से विद्यमान है वह विशेषता से चार प्रकार की जानना चाहिये लालवर्ण, श्वेतवर्ण, कृष्णवर्ण तथा पीतवर्णवाली होती है यह पूर्व के समान बलदायक, श्रेष्ठ व गुणों में उत्तम जानना चाहिये और श्रेष्ठ होने से सर्वदोषों को हरती है और लेप करने से सूजन को विनाशती है तथा कफसे उपजेहुए बीस रोगोंको शीघ्रही हरती है व रसायनरूप से रहती है॥

अब मकोय के नाम व गुण कहते हैं।

काकमाची, ध्वांक्षमाची, कामची, जघनी, फला, रसायनवरा, सर्वतिक्ता, काकिनी और कटु ये नव नाम मकोय के हैं—यह त्रिदोषोंको विनाशती हुई चिकनी व गरम होकर स्वर व वीर्य को देती है तथा रसायनरूप से रहकर सूजन, कोढ़, बवासीर, ज्वर और प्रमेहों को जीतती है॥

अब काकजङ्घा के नाम व गुण कहते हैं।

काकजङ्घा, नदीकान्ता, काकतिक्ता, सुलोमजा, पारावतपदी, काका, मदा और छर्दिकारिणी ये आठ नाम काकजङ्घा के हैं—यह ठण्ढी होकर रक्तपित्त और कफज्वर को विनाशती है॥

अब दोनों लोधों के नाम व गुण कहते हैं।

* लोध्र, तिरीट, कानीन, तिलक और सन्ततोद्भव ये पाँच नाम लोध के हैं और कड़े होने से सरक, श्वेतलोध्र और अक्षिभेषज ये तीन नाम दूसरे लोध के हैं—यह जुलाब को लगाता हुआ ठण्ढा होकर नेत्रों के लिये हित करता है व कफ, पित्त को विनाशता हुआ कसैला होकर रक्त, सूजन, रक्तज्वर और अतीसार को दूर करता है तथा इसका फूल मीठा व मल को बाँधता हुआ कड़ुवा होकर कफ और पित्त को जीतता है॥

अब विधारा के नाम व गुण कहते हैं।

वृद्धदारु, महाश्यामा, लाङ्गली और जीर्णवल्कल ये चार नाम विधारा के हैं और कोटरपुष्पी, आवेगी और छागलान्त्री ये तीन नाम दूसरे विधारा के हैं—यह कसैला, गरम, दस्तावर, तीखा व रसायनरूप होकर बल को उपजाता हुआ वायु, आमवात, लोहू, सूजन, प्रमेह और कफ को जीतता है॥

अब देवदाली के नाम व गुण कहते हैं।

देवदाली, वृत्तकोशी, देवताण्ड, गरागरी, जीमूत. तारका, वेणी, जालिनी, आयु और विषापहा ये दश नाम

* "गालवः शावरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्वमार्जनौ" (इत्यमरः)॥

देवदाली के हैं—यह रस में तीखी, छर्दिकारिणी व तीक्ष्णरूपिणी होकर कफ, बवासीर, सूजन, पाण्डु, क्षयी, हिचकी, क्रिमि और ज्वर को विनाशती है तथा कडुवी होकर प्रमेह और कामला को हरती है ॥

अब हंसपादी के नाम व गुण कहते हैं।

हंसपादी, हंसपदी, रक्तपादी, त्रिपादिका, प्रह्लादिनी, कीटमारी, कीटमाता और मधुस्रवा ये आठ नाम हंसपादी के हैं—यह भारी व ठण्ढी होकर लोहू, विष, फोड़े, विसर्प, दाह, अतीसार, मकड़ी और भूतों को विनाशती हुई घावों को पूरती है ॥

अब सोमवल्ली के नाम व गुण कहते हैं।

सोमवल्ली, यज्ञनता, सोमक्षीरी और द्विजप्रिया ये चार नाम सोमवल्ली के हैं—यह त्रिदोषों को नाशती हुई कडुवी व तीखी होकर रसायनरूप से रहती है ॥

अब आकाशवल्ली के नाम व गुण कहते हैं।

आकाशवल्ली को विद्वानों ने अमरवल्लरी कहा है—यह कब्जता को लाती हुई तीखी होकर पिच्छिलनामक रोगों को विनाशती है ॥

अब नाकुली के नाम व गुण कहते हैं।

नाकुली, सर्पहा, सर्पगन्धिनी, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, महासर्पनेत्रा और रोचकपत्रिका ये सात नाम नाकुली के हैं—यह कसैली, तीखी, कडुवी और गरम होकर मकड़ी, बीछू, मूसा और साँप के विषों को विनाशती हुई क्रिमिरोग तथा घावों को दूर करती है ॥

अब वटपत्री के नाम व गुण कहते हैं।

वटपत्री, मोहिनी, दीपिनी और रेचनी ये चार नाम वटपत्री के हैं—यह कसैली व गरम होकर भगरोगों को भगाती है और इसका फल स्तम्भन करता हुआ ठण्ढा होकर वायु को पैदा करता है तथा कफ और पित्त को जीतता है॥

अब लजालू के नाम व गुण कहते हैं।

लज्जालु, मोहिनी, स्पृक्का, खदिरी, गन्धकारिणी, नमस्कारी, शमी, पत्री, समङ्गा और रक्तपादिका ये दश नाम लजालू के हैं—यह ठण्ढी, तीखी, कसैली होकर कफ व पित्त को जीतती है तथा रक्तपित्त, अतीसार और योनिरोगों को विनाशती है॥

अब मुसली के नाम व गुण कहते हैं।

मुसली, खलिनी, तालपत्री, काञ्चनपुष्पिका, महावृक्षा, वृक्षकन्दा, खर्जूरी और तालमूलिका ये आठ नाम मुसली के हैं—यह मीठी व पुरुषार्थ को उपजाती व वीर्य में गरम होकर धातु को बढ़ाती है तथा भारी, तीखी व रसायनरूप होकर गुदा से उपजे रोग और वायु को विनाशती है॥

अब क्यवाँच के नाम व गुण कहते हैं।

कपिकच्छु, स्वयंगुप्ता, कण्डूला, दुरवग्रहा, चण्डा, आत्मगुप्ता, लांगूली, मर्कटी और प्रहर्षिणी ये नव नाम क्यवाँच के हैं—यह अतीव पुरुषार्थ को उपजाती हुई मीठी होकर धातु को बढ़ाती है व भारीरूप से रहती है और इसका बीज वायु को शमन करता हुआ उत्तम

वाजीकरण को धारता है अर्थात् स्त्रीप्रसंग में घोड़े के समान बल को करदेता है॥

अब जीयापोता के नाम व गुण कहते हैं।

पुत्रजीव, गर्भकर, यष्टीपुत्र और अर्थसाधन ये चार नाम जीयापोता के हैं—यह भारी व वीर्य को उपजाता हुआ गर्भदायक होकर कफ व वायु को जीतता है॥

अब बाँझककोड़ी के नाम व गुण कहते हैं।

बन्ध्याकर्कोटकी, देवी, कुमारी, विषनाशिनी, मनोज्ञा, नागदमनी, बन्ध्या और योगेश्वरी ये आठ नाम बाँझककोड़ी के हैं—यह हलकी होकर कफ को हरती हुई घावों को शोधती है तथा साँप के काटे हुए को अच्छा कर व तीखी होकर विसर्प व विष को विनाशती है॥

अब विष्णुक्रान्ता के नाम व गुण कहते हैं।

विष्णुक्रान्ता, नीलपुष्पी, जया, वश्या और अपराजिता ये पाँच नाम विष्णुक्रान्ता के हैं—यह कड़ुवी व बुद्धिवर्द्धिनी होकर क्रिमि, घाव और कफ को जीतती है॥

अब शङ्खपुष्पी (शङ्खाहूली) के नाम व गुण कहते हैं।

शङ्खपुष्पी, शङ्खनाम्नी, किरीटी, कम्बुमालिनी, शङ्खाहूली, स्मृतिहिता और वर्णविलासिनी ये आठ नाम शङ्खपुष्पी के हैं—यह दस्तावर होकर बुद्धि को उपजाती है तथा मन में विकार को लाती हुई रसायनी, कसैली, गरम व स्मृतिदायक होकर मोह या प्रमेह को विनाशती है॥

अब दूधी के नाम व गुण कहते हैं।

दुग्धिका, मधुपर्णी, क्षीरिणी और स्वादुपुष्पिका ये

चार नाम दूधी के हैं—यह गरम, भारी, रूखी और वातिल होकर गर्भ को करती है तथा मीठी व क़ब्ज़ता को लाती हुई पुष्ट होकर कफ, कुष्ठ और क्रिमिरोगों को जीतती है॥

अब अर्कपुष्पी (ऊँघाहूली) के नाम व गुण कहते हैं।

अर्कपुष्पी, क्रूरकन्दा, जलकामा और अभिरगिडका ये चार नाम ऊँघाहूली के हैं—यह क्रिमि, कफ, प्रमेह और पित्तविकार को विनाशती है॥

अब भिलावाँ के नाम व गुण कहते हैं।

भल्लातक, नभोवल्ली, वीरवृक्ष, अग्निवक्रक, आरुष्कर, रूक्ष, तपन, अग्निमुखी और धनुष् ये नव नाम भिलावाँ के हैं—यह कसैला, गरम, वीर्यदायक, मीठा व हलका होकर वायु, कफ, जलोदर, अफरा, कोढ़, बवासीर, संग्रहणी, गोला, ज्वर, सफ़ेदकोढ़, मन्दाग्नि, क्रिमिरोग और फोड़ों को विनाशता है॥

अब चरपोटा के नाम व गुण कहते हैं।

चरपोटा, दीर्घपत्री, कुन्तली और तिक्तका ये चार नाम चरपोटा के हैं—यह ठण्ढी, रूखी और भेदनी होकर दमा और खाँसी को खोती है॥

अब गूमा के नाम व गुण कहते हैं।

द्रोणपुष्पी, श्वसनक, पालिन्दी, कुम्भयोनिका, छत्राणी, छत्रक, द्रोणा, कौडिन्य और वृक्षसारक ये नव नाम द्रोणपुष्पी (गूमा) के हैं—यह भारी, रूखी, स्वादिल व गरम होकर वायु व पित्त को विनाशती है तथा

भेदनी और कडुवी होकर कामलावायु, सूजन, कफ और क्रिमिरोग को हरती है॥

अब ब्राह्मी व ब्राह्ममण्डूकी के नाम व गुण कहते हैं।

ब्राह्मी, सरस्वती, सोमा, सत्याह्वा और ब्रह्मचारिणी ये पाँच नाम ब्राह्मी के हैं तथा मण्डूकपर्णी, माण्डूकी, त्वष्ट्री, दिव्या, महौषधि, कपोतविट्का, मुनिका, लावण्या और सोमवल्लरी ये नव नाम ब्राह्ममण्डूकी के हैं—यह ठण्ढी, दस्तावर, मीठी, हलकी और बुद्धिवर्द्धिनी होकर रसायनरूप से रहती है तथा स्वरशोधिका व स्मृतिदायिका होकर कोढ़, पाण्डु, प्रमेह, रक्त और खाँसी को जीतकर विष, सूजन और ज्वर को हरती है और इन्हीं गुणोंवाली मण्डूकपत्रिणी को भी जानना चाहिये॥

अब सौंचली व ब्रह्मसौंचली के नाम व गुण कहते हैं।

सुवर्चला, अर्ककान्ता, सूर्यभक्ता, सुखोद्भवा, सूर्यावर्ता, रविप्रीता और ब्रह्मसुवर्चला ये सात नाम सौंचली या ब्रह्मसौंचली के हैं—यह भारी व ठण्ढी होकर मूत्र को उपजाती हुई वायु और कफ को जीतती है तथा दूसरी गरम व हलकी होकर कोढ़, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और ज्वर को हरती है॥

अब मत्स्याक्षी के नाम व गुण कहते हैं।

मत्स्याक्षी, वाल्लिका, मत्स्यगन्धी और मत्स्यादिनी ये चार नाम मत्स्याक्षी के हैं—यह क़ाबिज़ व ठण्ढी होकर कोढ़, पित्त, कफ और लोहू को विनाशती है॥

अब जलपीपल के नाम व गुण कहते हैं।

तोयपिप्पली, अम्बुवल्ली, पत्तूर और कश्चट ये चार

नाम जलपीपल के हैं—यह हृदय के लिये सुखदायक होकर नयनों को हित चाहती हुई वीर्य को पैदा करती है तथा क़ाबिज़, ठण्ढी व रूखी होकर रक्त, दाह और घावों को विनाशती है ॥

अब गोभी के नाम व गुण कहते हैं ।

गोजिह्वा, गोजिका, गोभी, दार्विका और स्वरपर्णिनी ये पाँच नाम गोभी के हैं—यह वायु को उपजाती हुई ठण्ढी व क़ाबिज़ होकर कफ व पित्त को विनाशती है तथा हृदय के लिये हितदायक व हलकी होकर प्रमेह, खाँसी, रक्त, घाव और ज्वर को हरती है ॥

अब नागदमनी के नाम व गुण कहते हैं ।

नागाह्वा, दमनी, नागगन्धा और भुजंगपर्णिनी ये चार नाम नागदमनी के हैं—यह रंग को अच्छा करती हुई मकड़ी और साँप के विष को हरती है ॥

अब लालचिरमिठी व सफ़ेदचिरमिठी के नाम व गुण कहते हैं ।

गुञ्जा, शिखण्डिका, ताम्रा, रक्तिका और काकनासिका ये पाँच नाम लाल चिरमिठी के हैं तथा श्वेता, चक्रिका, चूडा, दुर्मुखा और काकपीलुका ये पाँच नाम सफ़ेद चिरमिठी के हैं—यह बालों को बढ़ाती, बलको करती व बिगड़ी खाल को सुधारती हुई पित्त व कफ को विनाशती है तथा नयनों के रोगों को हरती हुई पुरुषार्थ को उपजाती है और खुजली, ग्रहपीड़ा, फोड़ा, क्रिमि व बालों का झड़जाना तथा कोढ़ को नाशती है और ये पूर्वोक्त गुण सफ़ेद चिरमिठी में भी वैद्यों ने कहे हैं ॥

अब वरवेलि के नाम व गुण कहते हैं।

वेल्लन्तर, दीर्घपत्र, वीरद्रु और बहुवारक ये चार नाम वरवेलि के हैं—यह पथरी को हरती व क़ब्ज़ता को लाती हुई कफ, मूत्रकृच्छ्र और वायु को जीतती है॥

अब वन्दाक के नाम व गुण कहते हैं।

वन्दाक, वृक्षरुहा, शेखरी, कामवृक्षक, वृक्षादनी, कामतरु, कामिनी और आपदरोहिणी ये आठ नाम वन्दाक के हैं यह कण्ठ को साफ़ करता हुआ वातरक्त, सूजन, घाव और विष को विनाशता है॥

अब पिण्डार के नाम व गुण कहते हैं।

पिण्डार, करहाट, तीक्ष्णकाल और करङ्कक ये चार नाम पिण्डार के हैं—यह मीठा व ठण्ढा होकर सूजन, पित्त और कफ को विनाशता है॥

अब नकछिकनी के नाम व गुण कहते हैं।

छिक्किका, क्षवक, क्रूर, नासा, संवेदना और पटु ये छः नाम नकछिकनी के हैं—यह पित्त को पैदा करती हुई कोढ़, क्रिमि, वायु और कफ को विनाशती है॥

अब रोहेरु के नाम व गुण कहते हैं।

रोहित, दाडिमीपुष्प, रोहीत, कूटशाल्मलि, प्लीहारी, रोहिणी, रोही, रक्तघ्न और पारिजातक ये नव नाम रोहेरु के हैं—यह दस्तावर होकर गोला, यकृत् और प्लीहोदर को विनाशता है॥

अब मोचरस के नाम व गुण कहते हैं।

मोचक, मोचरस, शाल्मलीवेष्टक, मोचनिर्यासक,

पिच्छा, मोचास्रावी और वेष्टक ये सात नाम मोचरस के हैं—यह ठण्ढा क़ाबिज़ व भारी होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ अतीसार को जीतता है तथा प्रवाहिका, खाँसी, रक्तपित्त, कफ और दाह को नाशता है ॥

अब अजगन्धा (बबरी) के नाम व गुण कहते हैं ।

अजगन्धा, बस्तगन्धा, कवरी और पूतपर्वर ये चार नाम अजगन्धा (अजमोद) के हैं—यह हलकी व भोजन में रुचि को उपजाती हुई हृदय के लिये हितदायक होकर कफ और वायु को विनाशती है ॥

अब पियाबाँसा के नाम व गुण कहते हैं ।

सौरेयक, सहचर, सौरेय, किङ्किरातक, दासीसहचर, किण्टी, शैर्षक और मृदुकण्टक ये आठ नाम पियाबाँसा के हैं और लाल फूलवाले पियाबाँसा को 'कुरुबक' जानना चाहिये व पीले फूलवाले को 'कुरण्टक' तथा नील फूल-वाले को 'आर्तगल' आचार्यों ने कहा है और इसीको 'बाणा' व 'गोदनपाकी' भी कहते हैं—यह कोढ़, वायु, लोहू, कफ, खुजली और विष को विनाशता है तथा तीखा, गरम व मीठा होकर बालों को बढ़ाता हुआ भलीभाँति चिकना होकर बालों को स्याह करदेता है ॥

अब हरमल के नाम व गुण कहते हैं ।

श्वेतस्यन्दा, श्वेतपुष्पा, कटभि, गिरिकर्णिका, सिता, अपराजिता, श्वेता, विषघ्नी और मेहनाशिनी ये नव नाम हरमल के हैं तथा नीलस्यन्दा, व्यक्तगन्धा, नीलपुष्पा और गवादिनी ये चार नाम सफ़ेद हरमल के हैं—ये दोनों ठण्ढे व ग्रहपीड़ानाशक होकर दृष्टि को

अब शरपुंखा (शरफोंका) के नाम व गुण कहते हैं।

शरपुंखा, कालशाक, प्लीहारी और कालका ये चार नाम शरपुंखा के हैं–यह यकृत्, तापतिल्ली, दुष्टघाव और विषको विनाशती है तथा तीखी व कसेली होकर खाँसी, लोहू, दमा और ज्वरको हरतीहुई हलकेरूप से रहती है॥

अब बलामोटा के नाम व गुण कहते हैं।

बलामोटा, जया, सूक्ष्मपत्रा और अपराजिता ये चार नाम बलामोटा के हैं–यह विष, कफ और मूत्रकृच्छ्र को हरती हुई विजयदायक होती है॥

अब सुदर्शना के नाम व गुण कहते हैं।

सुदर्शना, सोमवल्ली, चक्राङ्का और मधुपर्णिका ये चार नाम सुदर्शना के हैं यह स्वादिल व गरम होकर कफ, सूजन, लोहू और वायु को जीतती है॥

अब लक्ष्मणा के नाम व गुण कहते हैं।

लक्ष्मणा, पुत्रदा, रक्ता, बिन्दुपत्रा और नागिनी ये पाँच नाम लक्ष्मणा के हैं कि जिसका फूल गौदूध के समान हो या रोम व बेल से संयुक्त हो या लालबूंद के समान हो वह लक्ष्मणा का आकार वैद्यों ने कहा है–यह गर्भदायक, ठण्ढी व दस्तावर होकर पुरुषार्थ को उपजाती हुई त्रिदोषों को विनाशती है॥

अब मांसरोहिणी के नाम व गुण कहते हैं।

मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकसा और कसा ये पाँच नाम मांसरोहिणी के हैं–यह पुरुषार्थ को बढ़ाती व दस्तावर होकर तीनों दोषों को विनाशती है॥

अब हड़सिंहार के नाम व गुण कहते हैं।

अस्थिसंहारक, वज्रवल्लरी, कोष्ठु, घण्टिका, वज्राङ्गी, ग्रन्थिमान्, वज्रप्रोक्ता और अस्थिशृङ्खला ये आठ नाम हड़सिंहार के हैं—यह ठण्ढा होकर धातुको बढ़ाताहुआ वायु को हरता है तथा हड्डियों को जोड़देता है॥

अब दोनों आक के नाम व गुण कहते हैं।

अर्क, सूर्याह्वय, क्षीरी, सदापुष्प, विकीरण, मन्दार, वसुक, अलर्क, राजाह्व और दीर्घपत्रक ये दश नाम आक के हैं—ये दोनों शङ्खवात. कोढ़, खुजली, विष, फोड़े, पिलही, गोला, बवासीर, कलेजे की सूजन, कफ, उदररोग और क्रिमिरोगों को विनाशते हैं॥

अब सफ़ेद व लाल कनेर के नाम व गुण कहते हैं।

करवीर, अश्वहा, श्वेतपुष्पा और शतपुष्पक ये चार नाम सफ़ेद कनेर के हैं और रक्तपुष्प, चण्ड, लगुड़ और करवीरक ये चार नाम लालकनेर के हैं—ये दोनों नेत्रपीड़ा, सूजन, खुजली और फोड़ों को विनाशते हैं तथा हलके व गरम होकर क्रिमियों को हरते हैं और भोजन में विष के समान वैद्यों ने माने हैं॥

अब धतूरा के नाम व गुण कहते हैं।

धत्तूर, कितव, धूर्त, देवता, मदन, शठ, उन्मत्त, मातल, तूरी, तरक और कनकाह्वय ये ग्यारह नाम धतूरा के हैं—यह नशा को लाता व रंग को अच्छा करता हुआ अग्नि को बढ़ाता है तथा छर्दि को उपजाताहुआ गजकोढ़ या ज्वर व कोढ़ को नाशता है व गरम व भारी होकर फोड़े, कफ, खुजली, क्रिमि और विष को हरता है॥

अब कलिहारी के नाम व गुण कहते हैं।

कलिकारी, वह्निमुखी, लाङ्गली, गर्भपातिनी, विशल्या, हलिनी, शीरी, प्रभाता, शुक्लपुष्पिका, विद्युत, उल्का, अग्निजिह्वा, पुष्पसी, भरा, वह्निशिखा, अग्निका और नलरन्ध्री ये सत्रह नाम कलिहारी के हैं–यह दस्तावर होकर कोढ़, सूजन, बवासीर, फोड़े और शूल को जीतती है तथा तीखी व गरम होकर क्रिमिरोग को विनाशती है और हलकी होकर पित्त को पैदा करतीहुई गर्भ को गिरा देती है॥

अब घिकुवार के नाम व गुण कहते हैं।

कुमारी, मण्डला, माता, गृहकन्या, अतिपिच्छिला, रसायनी, कटिकिनी, सवरा और वनोद्भवा ये नव नाम घिकुवार के हैं–यह भेदिनी व ठण्ढी होकर कलेजे की सूजन, पिलही, कफ व ज्वर को नाशती है तथा ग्रन्थि, विस्फोट, रक्तपित्त और खाल के रोगों को हरती है॥

अब भांग के नाम व गुण कहते हैं।

भङ्गा, अङ्गजा, मातुलानी, मोहिनी, विजया और जया ये छः नाम भङ्ग के हैं–यह कफ को हरती हुई कड़वी व काबिज़ होकर अग्नि को प्रकाशती है तथा हलकी, तेज़ व गरम होकर पित्त को पैदा करती है और अफरा तथा नशा को करतीहुई अग्नि को बढ़ाती है॥

अब काञ्चनी के नाम व गुण कहते हैं।

काञ्चनी, शोणफलिनी, काकायु और काकवल्लरी ये चार नाम काञ्चनी के हैं–यह स्तनों में दूध को उपजाती हुई माथे की पीड़ा व त्रिदोषों को विनाशती है॥

अब दूब के नाम व गुण कहते हैं।

दूर्वा, शय्या, शीतक़री, गोलोमी और शतपर्विका ये पाँच नाम दूब के हैं तथा श्वेता, श्वेतदण्डा, भार्गवी, दुर्मता और रुहा ये पाँच नाम सफ़ेद दूब के हैं—यह ठण्ढी होकर विसर्प, लोहू, प्यास, पित्त, कफ और दाह को जीतती है॥

अब गण्डदूब के नाम व गुण कहते हैं।

गण्डदूर्वा, मत्स्यगन्धा, मत्स्याक्षी और शकुलादिनी ये चार नाम गण्डदूब के हैं—यह ठण्ढी होकर लोहेको तावती हुई क़ब्ज़ता को लाती है तथा हलकी होकर दाह, प्यास, कफ, लोहू, कोढ़ और पित्तज्वर को विनाशती है॥

अब काश के नाम व गुण कहते हैं।

काश, सुकाण्ड, काशेक्षु, ऋषीक, श्वेतवासर, इक्ष्वारिका, इक्षुकाश और इक्षुरस ये आठ नाम काश (कास) के हैं यह मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, लोहू और पित्त को क्षय करदेता है तथा ठण्ढेरूप से रहता है॥

अब कुश (डाभ) के नाम व गुण कहते हैं।

दर्भ, बर्हि, कुश, तीक्ष्ण, सूच्यग्र और यज्ञभूषण ये छः नाम कुश के हैं—यह मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्यास, पित्त और बस्तिरोग को विनाशता है तथा कफ और रक्त को जीतता है॥

अब मूँज के नाम व गुण कहते हैं।

मुञ्ज, क्षुरा, स्थूलदर्भ, बाणाह्व और ब्रह्ममेखल ये पाँच नाम मूँज के हैं—यह गरमी से रहित होकर विसर्प,

रक्त, मूत्ररोग, बस्तिरोग तथा नेत्ररोग को जीतती है ॥

अब नरसल के नाम व गुण कहते हैं।

नल, रन्ध्री, पुष्पमृत्यु, दमन, अनन्तक और पिट ये छः नाम नरसल के हैं—यह मूत्रकृच्छ्र, दाह, लोहू, कफ, पित्त और विसर्प को जीतता है ॥

अब बाँस के नाम व गुण कहते हैं।

वंश, वेणु, कीचक, कर्मार और त्वचिसारक ये पाँच नाम बाँसके हैं—यह दस्तावर व ठण्ढा होकर पित्त, कफ, दाह, लोहू और सूजन को जीतता है और इसका अँखुवा भारी व भेदी होकर कफ को लाता हुआ वायु और पित्त को विनाशता है तथा इसकी जड़ भी भेदक व बहुत गरम होकर कफ को हरती हुई वायु और पित्त को विजय करती है ॥

अब खुरासानी अजवायन के नाम व गुण कहते हैं।

जवानी, जवनी, तीव्रा, तुरुष्का और मदकारिणी ये पाँच नाम खुरासानी अजवायन के हैं—यह जीवनी व रूखी होकर क़ब्ज़ता को लाती व मद को उपजाती हुई भारीरूप से रहती है ॥

अब पोस्त के नाम व गुण कहते हैं।

तिलभेद, खसतिल, शुभ्रपुष्प और लसत्फल ये चार नाम पोस्त के हैं—यह पुरुषार्थ को बढ़ाता व बल को करता हुआ कफ को उपजाता है तथा भारी होकर वायु को जीतता है और इसके फलों से उपजा हुआ छिलका रूखा होकर विशेषता से क़ब्ज़ता को धारता है ॥

अब अफीम के नाम व गुण कहते हैं ।

आफूक, तद्रसोद्भूत, अहिफेन और सफेनक ये चार नाम अफीम के हैं-यह सुखानेवाली होकर मल को बाँधती है तथा कफ को विनाशती हुई वायु और पित्त को उपजाती है ॥

अब छिलिहिण्डा के नाम व गुण कहते हैं ।

छिलिहिण्ड, महामूल, पाताल और गरुडाह्वय ये चार नाम छिलिहिण्ड के हैं-यह उत्तम होकर धातु को बढ़ाता व कफ को उपजाता हुआ वायु को विनाशता है ॥

दो० । मदनपाल सुनिघण्टुमहँ, कह्यो शिवादिकज्ञान ।
प्रथमवर्ग पूरण भयो, लखिहैं ताहि सुजान ॥ १ ॥

इति श्रीमदनपालविरचितेमदनविनोदनिघण्टौ शक्तिधरविरचितायांभाषाव्याख्यायामभयादिवर्णनोनाम प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

दो० । कहब दूसरे वर्गमहँ, शुण्ठ्यादिक कर ज्ञान ।
जाहिलखैंनितवैद्यजन, पावैं सुयश महान ॥

अब सोंठ के नाम व गुण कहते हैं ।

शुण्ठी, विश्वौषध, विश्व, कटुभद्र, कटूत्कट, महौषध, शृङ्गवेर, नागर और विश्वभेषज ये नव नाम सोंठ के हैं-यह भोजन में रुचि को उपजाती हुई आमवात को विनाशती है तथा पाचनी, कडुवी, हलकी, चिकनी, गरम व पाकमें चरपरी होकर कफ, वात और अफरा को हरती है और धातु को पुष्ट करती व स्वर को बढ़ाती हुई छर्दि, दमा, खाँसी, शूल, हृदयरोग, फ़ीलपाँव, सूजन, बवासीर, मलमूत्रारोध, जलोदर और वातरोग को विनाशती है ॥

अब अदरक के नाम व गुण कहते हैं।

आर्द्रक, शृङ्गवेर और महौषध ये तीन नाम अदरक के हैं--इसमें सोंठ के समान गुण होते हैं और यह भेदन व दीपन होकर भारीरूप से रहता है तथा कडुवा, गरम व दीपन होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ रुचि को पैदा करता है और दमा, खाँसी, छर्दि, हिचकी, वायु, कफ और क़ब्ज़ता को विनाशता है॥

अब मिरच के नाम व गुण कहते हैं।

मरीच, वल्लिज, तीक्ष्ण, मलिन और श्यामभूषण ये पाँच नाम मिरच के हैं--यह कडुवी, तीखी व दीपन होकर कफ व वायको विनाशती है तथा गरम, पित्त-कारिणी व रूखी होकर दमा, शूल और क्रिमिरोग को जीतती है और गीली मिरच पाक में मीठी व अतीव गरम नहीं होती है तथा कडुवी, भारी व कुछेक तीखे गुणोंवाली होकर कफ को निकालती हुई पित्त को नहीं उपजाती है॥

अब पीपल के नाम व गुण कहते हैं।

पिप्पली, चपला, कृष्णा, मागधी, मगधा, कणा, विश्वा, उपकुल्या, वैदेही, शौण्डी और तीक्ष्णतण्डुला ये ग्यारह नाम पीपल के हैं--यह मन्दाग्नि को प्रकाशती व पुरुषार्थ को बढ़ाती व पाक में मीठी व रसायनी होकर बहुत गरम नहीं होती है तथा कडुवी, चिकनी व हलकी होकर कफ व वायु को हरती है व पित्त को पैदा करती हुई दस्तों को लगाती है तथा दमा, खाँसी, उदर-रोग, ज्वर, कोढ़, प्रमेह, गोला, बवासीर, पिलही, शूल

और आमवात को विनाशती है और गीली पीपल कफ-दायक, चिकनी व मीठी होकर भारीरूप से रहती है॥

अब त्र्यूषण व चतुरूषण के नाम व गुण कहते हैं।

सोंठ, पीपल और मिरच के मिलाने से त्र्यूषण, कटुक, कटु, व्योष और कटुत्रय ये पाँच नाम त्र्यूषण के हैं तथा पीपलामूल के मिलाने से 'चतुरूषण' कहाता है—यह मन्दाग्नि को प्रकाशता हुआ खाँसी, दमा, त्वचा-रोग, गोला, प्रमेह, कफ, स्थूलता, चर्बी का बढ़ना, फीलपाँव और पीनसरोग को विनाशता है॥

अब पीपलामूल के नाम व गुण कहते हैं।

कणामूल, कटु, ग्रन्थि, पिप्पलीमूल, ऊषण, षड्-ग्रन्थ, ग्रन्थिक, मूल, मागध और चटिकाशिर ये दश नाम पीपलामूल के हैं—यह दीपन, कड़ुवा गरम, पाचन, हलका और रूखा होकर पित्त को करता है तथा भेदी होकर कफ, वायु और उदररोग को विनाशता है॥

अब चाब के नाम व गुण कहते हैं।

चव्य, चवण, उच्छिष्ट, चविका और कोलवल्लिका ये पाँच नाम चाब के हैं—इसमें पीपलामूल के बराबर गुण रहते हैं और विशेषता से गुदा के रोगों को हरता है तथा इसका फूल भी विष, दमा, खाँसी और क्षयी-रोग को नाशता है॥

अब गजपीपल के नाम व गुण कहते हैं।

तत्फल, श्रेयसी, हस्तिमागधा, गजपिप्पली और गजकृष्णा ये पाँच नाम गजपीपल के हैं—यह कड़ुवी

होकर वात कफ को नाशतीहुई अग्नि को बढ़ाती है तथा गरम होकर अतीसार, दमा, गलरोग और क्रिमि-रोग को विनाशती है॥

अब चीता के नाम व गुण कहते हैं।

चित्रक, हुतभुक्, व्याल, दारुण, दहन, अरुण, अग्निमाली, हविःपाची और वह्निनामा ये नव नाम चीता के हैं—यह पाक में कड़ुवा अग्निकारी, पाचन, हलका, रूखा और गरम होकर संग्रहणी, कोढ़, सूजन, बवासीर, क्रिमि और खाँसी को जीतता है तथा कफ वात को हरता हुआ क़ब्ज़ता को लाता है और इसका साग भी कफ व वायु को विनाशता है॥

अब पञ्चकोल व षडूषण के नाम व गुण कहते हैं।

पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठ और चीता इन पाँचों के मिलाने से 'पञ्चकोल' कहाता है—यह कफ, अफरा, गोला शूल और अरुचि को जीतता है तथा मिरच, पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठ और चीता इसको वैद्यों ने 'षडूषण' कहा है इसमें भी पञ्चकोल के समान गुण जानना चाहिये॥

अब दोनों सौंफ़ के नाम व गुण कहते हैं।

शतपुष्पा, शतव्योषा, शताह्वा, कारवी, मिशि, अवाक्पुष्पी और त्वचिच्छत्रा ये सात नाम पहली सौंफ़ के हैं तथा शेतिका और मागधी ये दो नाम दूसरी (सफ़ेद) सौंफ़ के हैं—यह हलकी व तेज़ होकर पित्त को करती है तथा दीपनी, कड़ुवी, गरम होकर ज्वर, वायु, कफ, फोड़े, शूल और आँख के रोगों को जीतती है और

इन्हीं गुणोंवाली सफ़ेद सौंफ़ भी कही है जो कि विशेषता से योनिशूल को हरती है ॥

अब सोया के नाम व गुण कहते हैं।

मिश्रेया, मिशि, शालीन, शाली और शीतशिवा ये पाँच नाम सोया के हैं—यह मन्दाग्नि को प्रकाशता व हृदय के लिये हितदायक होकर मलावरोध, क्रिमि और वीर्यरोग को विनाशता है तथा रूखा होकर गरमरूप से रहता है और इसका फल खाँसी, छर्दि, कफ और वायु को जीतता है ॥

अब मेथी व बनमेथी के नाम व गुण कहते हैं।

मेथिका, बस्तिका, शेलु, रोहिती और वनमेथिका ये पाँच नाम मेथी व बनमेथी के हैं—यह दीपनी व हृदय को सुखदायक होकर विष्ठा के क्रिमियों को दूर करती है तथा शूल, वीर्यरोग, गोला और वायु को विनाशती हुई कफ को हरती है और इससे अल्पगुणवाली बनमेथी को जानना चाहिये यह घोड़ों के लिये हितदायक होती है ॥

अब अजमोदा के नाम व गुण कहते हैं।

अजमोदा, अत्युग्रगन्धा, मोदा, हस्तिमयूरक, खराह्वा, कारवी, वल्ली, बस्तमोदा और मर्कट ये नव नाम अजमोदा के हैं—यह कड़ुवी, तीखी व दीपनी होकर कफ व वायु को विनाशती है तथा गरम, दाहकारिणी व हृदय के लिये हितदायक होकर धातु को बढ़ातीहुई मलको बाँधती है और हलकी होकर नेत्रपीड़ा, क्रिमिरोग, छर्दि, सेहुवाँ और बस्तिरोग को जीतती है ॥

अब सफ़ेदज़ीरा, स्याहज़ीरा व कलौंजी के नाम व गुण कहते हैं।

जीरक, दीर्घक, शुक्ल, अजाजी और कणजीरक ये पाँच नाम सफ़ेदज़ीरा के हैं और ज़ीरक, जरण, कृष्ण और वर्षाकालसुगन्धिक ये चार नाम स्याहज़ीरा के हैं तथा कालिका, बाष्पिका, कुञ्चि, कारवी, उपकुञ्चिका, पृथ्वीका, सुषवी, पृथ्वी, स्थूलाजाजी और उपकालिका ये दश नाम कलौंजी के हैं—ये तीनों रूखे, कडुवे, गरम, दीपन व हलके होकर कब्ज़ता को लाते हैं तथा पित्त को उपजाते व बुद्धि को देतेहुए गर्भाशय का शोधन करते हैं व आँखों के लिये आनन्ददायक होकर वायु, अफरा, गोला, छर्दि और कफ को जीतते हैं॥

अब अजवायन के नाम व गुण कहते हैं।

यवानी, दीप्यक, दीप्य, दीपनीया, यवानिका, यवसाह्वा, उग्रगन्धा, यवाह्वा और शूकदम्बक ये नव नाम अजवायन के हैं—यह पाचन व रुचि को उपजातीहुई तीखी, गरम, कडुवी व हलकी होकर वायु, कफ, उदर-रोग, अफरा, गोला, शूल और क्रिमिरोगकोविनाशतीहै॥

अब चौहार के नाम व गुण कहते हैं।

यवानीया, यवानी, चौहार और जन्तुनाशन ये चार नाम चौहार के हैं—इसमें अजवायन के समान गुण वैद्योंने कहे हैं और विशेषतासे क्रिमियोंको विनाशताहै॥

अब बबई के नाम व गुण कहते हैं।

अजगन्धा, पूतिकीटा, बर्बरी, पूतिबर्बर, कारवी, खर-पुष्पा, तुङ्गी और पूतिमयूरक ये आठ नाम बबई के हैं—यह कडुवी, तेज़, रूखी व हृदय के लिये हितदायक

होकर अग्नि को बढ़ाती तथा दृष्टि को मन्द करती है और हलकी होकर वीर्य, वायु और कफ को विनाशती है ॥

अब दोनों बच के नाम व गुण कहते हैं।

वचा, उग्रगन्धा, गोलोमी, षड्ग्रन्था और जटिला ये पाँच नाम बच के हैं जटिला, शतपर्वा, लोमशा और हैमवती ये चार नाम घोड़बच के हैं—यह गरम, कडुवी व तीखी होकर छर्दि को लातीहुई स्वर और अग्नि को करती है तथा मिरगीरोग, कफ, उन्माद, भूतदोष, शूल और वायु को जीतती है ॥

अब हाऊबेर के नाम व गुण कहते हैं।

हपुषा, वपुषा, विश्वा, विगन्धा और विश्वगन्धिका ये पाँच नाम हाऊबेर के हैं—यह अग्नि को प्रकाशता हुआ तीखा, कडुवा, गरम व कसैला होकर भारीरूप से रहता है तथा पित्त, उदररोग, वायु, बवासीर, ग्रहणी, सूजन और गोला को जीतता है ॥

अब बायबिड़ङ्ग के नाम व गुण कहते हैं।

बिड़ङ्ग, जन्तुहनन, क्रिमिघ्न, क्षुद्रतण्डुला, भूतघ्नी, तण्डुला, घोषा, कराला और मृगगामिनी ये नव नाम बायबिड़ङ्ग के हैं—यह कडुवी, तीखी, गरम व रूखी होकर हलके रूप से रहती है तथा गोला, अफरा, उदररोग, कफ, क्रिमि, वायु और मलमूत्रावरोध को विनाशती है ॥

अब धनियाँ के नाम व गुण कहते हैं।

धान्याक, धान्यक, धान्य, धानेय, वितुन्नक और कुस्तुम्बुरु ये छः नाम धनियाँ के हैं धानी, धानेय और कालुका ये तीन नाम गीली धनियाँ के हैं—यह कसैली

व चिकनी होकर वीर्य को नहीं बढ़ाती व मूत्रको उपजाती व हलकेरूप से रहतीहुई हृदय के लिये हितदायक होती है तथा रूखी व मल को बाँधती व पाक में मीठी होकर त्रिदोषों को हरती है और पाचक होकर दमा, खाँसी, लोहू, प्यास, आमवात बवासीर व क्रिमिरोग को जीतती है और ये पूर्वोक्तगुण गीली धनियाँ में भी रहते हैं परन्तु विशेषता से स्वादिल होकर पित्त को विनाशती है ॥

अब दोनों हिंगुपत्री के नाम व गुण कहते हैं।

हिंगुपत्री, पृथुस्तन्वी, पृथ्वीका, चारुपत्रिका, बाष्पिका, कारवी, तन्द्री, बिल्विका और दीर्घिका ये नव नाम हिंगुपत्री के हैं और हिंगुपत्री, वेणुपत्री, हिंगुशिवाटिका, जन्तुका, रामठी, नाडी, पिण्डा और हिंगुफला ये आठ नाम दूसरी हिंगुपत्री के हैं—ये दोनों हृदय के लिये हितदायक होकर तीखी, गरम, पाचिनी व कड़ुवी होकर पेटरोग, बस्तिरोग, क़ब्ज़ता, बवासीर, कफ, गोला और वायु को विनाशती है ॥

अब हींग के नाम व गुण कहते हैं।

हिंगु, वाह्लीक, अत्युग्र, रामठ, भूतनाशन, अगूढ़गन्धा, जरण, जन्तुघ्न और सूपभूषण ये नव नाम हींग के हैं—यह गरम, पाचन, रोचन व तीक्ष्ण होकर कफ व वायु को विनाशती है तथा शूल, गोला, उदररोग, अफरा और क्रिमियों को जीतती हुई पित्तको बढ़ाती है॥

अब बंशलोचन के नाम व गुण कहते हैं।

वंशजा, वैष्णवी, क्षीरी, त्वक्क्षीरी, वंशरोचना, तुगा-

क्षीरी, तुगा, वंशी. वंशक्षीरी. शुभा और सिता ये ग्यारह नाम वंशलोचन के हैं—यह पुष्टता को उपजाता हुआ पुरुषार्थ को बढ़ाता है तथा ठण्ढा व मीठा होकर प्यास, क्षयी. ज्वर, दमा, खाँसी रक्तपित्त और कामला को जीतता है ॥

अब सेंधानमक के नाम व गुण कहते हैं ।

सैन्धव, सिन्धुज, शुद्ध, माणिमन्थ और पटूत्तम ये पाँच नाम सेंधानमक के हैं—यह मीठा व हृदय के लिये प्यारा होकर अग्नि को जगाता है तथा ठण्ढा, हलका, नेत्रों को गुणदायक व पाचक और चिकना होकर पुरुषार्थ को उपजाता हुआ त्रिदोषों को विनाशता है ॥

अब कालेनमक के नाम व गुण कहते हैं ।

सौवर्चल, सुगन्धाख्य, रुच्यक और हृद्यगन्धक ये चार नाम कालेनमक के हैं—यह अग्नि को करता हुआ कड़वा, गरम, सुन्दर व हलका होकर डकारों की शुद्धता को देता है तथा पतला होकर क़ब्ज़ता को लाता हुआ अफरा और शूल को जीतता है ॥

अब सोंचर (मनियारी) नमक के नाम व गुण कहते हैं ।

विड, कृत्रिमक, पाक्य, धूर्त, द्राविड और आसुर ये छः नाम सोंचरनमक के हैं—यह हलका, गरम व क़ाबिज़ होकर शूल, हृद्रोग, भारीपन, अरुचि, अफरा, कफ और शूल को विनाशता है तथा अधोवायु का अनुलोमन अर्थात् कफ को ऊपर की तरफ़ और वायु को नीचे की तरफ़ निकालता है ॥

अब पाँगानमक के नाम व गुण कहते हैं ।

सामुद्र, वारिसंभूत, अक्षीव और आसुर ये चार नाम पाँगानमक के हैं-यह अग्नि को जगाता, स्वादुको लाता व बहुत गरम नहीं होता हुआ भेदी, कड़ुवा व कफ-कारी होकर वायु को विनाशता है तथा तीखा व अरूखा होकर अतीव पित्त को नहीं उपजाता है ॥

अब रेहनमक के नाम व गुण कहते हैं ।

औद्भिद, भूमिज, भौम, पार्थिव और पृथिवीभव ये पाँच नाम रेहनमक के हैं-यह लोहू को उपजाता हुआ पतला व हलका होकर वायु को अनुलोमित करता है ॥

अब रोमक (साम्हर) नमक के नाम व गुण कहते हैं ।

गण्डाख्य, रोमलवण, रोम और शाकम्भरीभव ये चार नाम साम्हरनमक के हैं-यह हलका व वात को नाशता हुआ बहुत गरम तथा भेदी होकर मूत्र को पैदा करता है ॥

अब खारीनमक के नाम व गुण कहते हैं ।

क्षार, पांसुभव, औष, औषर, पांसव और वसु ये छः नाम खारीनमक के हैं-यह भारी, कड़ुवा, चिकना होकर कफ को उपजाता हुआ वायु को विनाशता है ॥

अब काचनमक के नाम व गुण कहते हैं ।

काच, त्रिकूट, पाक्याह्व, लवण और काचसम्भव ये पाँच नाम काचनमक के हैं-यह अग्नि को प्रकाशता हुआ अतीव गरम होकर विशेषता से रक्तपित्त को बढ़ाता है ॥

अब जवाखार के नाम व गुण कहते हैं।

यवक्षार, सूकपाक्य, यवसूक और यवाग्रज ये चार नाम जवाखार के हैं–यह अग्नि को करता हुआ वायु, कफ, दमा, गलरोग, आमवात, बवासीर, ग्रहणी, गोला, कलेजे की सूजन और तापातिल्ली को जीतता है॥

अब सज्जी के नाम व गुण कहते हैं।

स्वर्जिका, स्वर्जिकापाक्य, सुखपाक्य और सुवर्चिका ये चार नाम सज्जी के हैं–इसमें जवाखार से कमती गुण रहते हैं परन्तु विशेषता से गोला और शूल को विनाशती है॥

अब सुहागा के नाम व गुण कहते हैं।

टङ्कण, मालतीजात, द्रावी और लोहविशुद्धिद ये चार नाम सुहागा के हैं–यह अग्निकारी व रूखा होकर कफ को नाशता हुआ वातपित्त को जीतता है॥

अब सुधाक्षार (थूहरखार) के नाम व गुण कहते हैं।

सुधाह्वय, सुधा, सौधभूषण और कटुशर्करा ये चार नाम थूहरखार के हैं यह अग्नि के समान होकर पकाता व गीला करता हुआ फाड़नेवाला होता है॥

अब सर्वक्षार के नाम व गुण कहते हैं।

टेसू, तिलकनाल, गोखुरू, केला, ऊंगा, मदार, सेहुँड़ और मोषा आदिकों से उपजे जो समस्त खार वे अग्निके समान पाचन, भेदन व विदारनेवाले हलके तथा गीले करनेवाले व तीखे होकर वीर्य को उपजाते हुए दृष्टि को विनाशते हैं तथा रक्तपित्त को करतेहुए मल-मूत्रावरोध, अफरा, पीनस, यकृत, तिल्लीरोग, कफ,

आमवात, गोला, बवासीर, संग्रहणी और क्रिमियों को नाशते हैं ॥

दो० । नृपमुखतिलक कटारमल, मदनमहिप जो कीन ।
ताही मदन विनोद में, द्वितिय वर्ग कहि दीन ॥ १ ॥

इति श्रीमदनपालविरचिते निघण्टौ शक्तिधरनिर्मितायां भाषाव्याख्यायां शुण्ठ्यादिर्द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

स० । पीवत ओठदबीं दतियाँ छतियाँमें किये ज्यहि गोपकुमारी ।
हाथनसों गहिकै लहिकै सुतको मुखचन्दहि चूँबि दुलारी ॥
सो सुखदायक भायक हैं बने बालसरूप अनूप बिचारी ।
शक्तिधरैं भल भक्तिभरैं वे अशक्ति हियेहरि हेरि हमारी ॥ १ ॥

दो० । कहब तीसरे वर्गमहँ, कर्पूरादिक नाम ।
ऐसेही उन सबन के, वर्णतहौं गुणग्राम ॥ १ ॥

अब कपूर के नाम व गुण कहते हैं ।

कर्पूर, स्फटिक, चन्द्र, सिताभ्र, हिमबालुक, हिमोपल, शीतरज, भूतिक, हिमाह्वय, हिमाभ्र, घनसार और चन्द्राह्व ये बारह नाम कपूर के हैं—यह ठण्ढा व पुरुषार्थ को बढ़ाताहुआ नेत्रों के लिये हितदायक, लेखन तथा हलका होकर कफ, दाह व मुखका बिरस होना. मेदोरोग, सूजन और विष को विनाशता है ॥

अब कस्तूरी व लताकस्तूरी के नाम व गुण कहते हैं ।

कस्तूरिका, मृगमद, वेदमुख्या, मृगाण्डज और मृगनाभि ये पाँच नाम कस्तूरी के हैं और आचार्यों ने दूसरी कस्तूरी को लता कस्तूरी माना है—यह पुरुषार्थ को उपजाती हुई भारी व कड़वी होकर कफ और शीत को जीतती है तथा गरम होकर विष, वमन, सूजन, दुर्गन्ध

और वातरोगों को विनाशती है और येही गुण लता-कस्तूरी में भी जानना चाहिये परन्तु नयनों के लिये हित करती हुई ठण्ढी व हलकेरूप से रहती है ॥

अब मार्जारीकस्तूरी के नाम व गुण कहते हैं।

मार्जारी, पूतिका, पूतिकचा और गन्धचेलिका ये चार नाम मार्जारीकस्तूरी के हैं—यह वमनको उपजाती व नेत्रों का हित चाहतीहुई कफवात को जीतती है ॥

अब चन्दन के नाम व गुण कहते हैं।

चन्दन, तिलपर्णी, महार्ह, श्वेतचन्दन, भद्रश्रय, मलयज, गोशीर्ष और गन्धसारक ये आठ नाम चन्दन के हैं—यह ठण्ठा, रूखा, कड़ुवा, हर्षदायक व हलका होकर हृदय में गुणों को धारता हुआ वर्ण को बदलता है तथा विष, कफ, प्यास, पित्तरक्त और दाह को जीतता है ॥

अब लालचन्दन के नाम व गुण कहते हैं।

रक्तचन्दन, उद्दिष्ट, लोहित, क्षुद्रचन्दन, ताम्रसार, रक्तसार, ज्योतिःसोम और रञ्जन ये आठ नाम लाल चन्दनकेहैं—यह ठण्ढा, भारी व मीठा होकर छर्दि, प्यास और रक्तपित्त को हटाता है तथा कड़ुवा व नेत्रों के लिये हितदायक होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता व ज्वर को हरता हुआ विष को विनाशता है ॥

अब मलयागिरिचन्दन के नाम व गुण कहते हैं।

कालीयक, प्रीतसार, पीत और नारायणप्रिय ये चार नाम मलयागिरिचन्दन के हैं इसमें लालचन्दन के समान गुण रहते हैं और विशेषता से वायु को विनाशता है ॥

अब कालेअगर के नाम व गुण कहते हैं ।

कृष्णागुरु, अगुरु, राजार्ह, विश्वरूपक, जोङ्गक, शीतमलिन, क्रिमिजघ्न और नक्कक ये आठ नाम काले अगर के हैं–यह गरम होकर कर्णरोग और नेत्ररोग को हरता व पित्त को उपजाता हुआ हलकेरूप से रहता है ॥

अब केसर के नाम व गुण कहते हैं ।

कुंकुम, चारु, वाह्लीक, वर्ण्य, अग्निशिख, वर, काश्मीर, पीत, असृाह्व, संकोच, पिशुन और अंशुक ये बारह नाम केसर के हैं–यह कड़ुवी होकर सेहुआँ, शिर-शूल, घाव और क्रिमियों को जीतती है तथा गरम होकर हास्य को करती व बल को धारतीहुई व्यङ्ग व तीनों दोषों को दूर करती है ॥

अब लोबान के नाम व गुण कहते हैं ।

सिह्लक, कपिज, धूम्र, तुरुष्क, पिण्डित और कपि ये छः नाम लोबान के हैं–यह कोढ़ व खुजली को नाशता हुआ चिकना व गरम होकर वीर्य और कान्ति को करता है ॥

अब एलुवा के नाम व गुण कहते हैं ।

एलवालुक, एलवाल, वालुक और हरिवालक ये चार नाम एलुवा के हैं–यह ठण्ढा होकर खुजली, कोढ़, कफ और क्रिमियों को नाशता है तथा प्यास, छर्दि, कफपित्त, लोहू व मूत्ररोग को जीतता हुआ हलके रूपसे रहता है ॥

अब जायफल के नाम व गुण कहते हैं ।

जातीफल, जातिसृत, शलूक और मालतीसुत ये चार नाम जायफल के हैं–यह हलका व स्वर का सुधारने

वाला व हृदय के लिये हितदायक होता हुआ दीपन, पाचन व गरम होकर कफ, वायु, वमन, क्रिमि, पीनस और खाँसी को खोदेता है ॥

अब जावित्री के नाम व गुण कहते हैं।

जातीपत्री, जातिपर्णा और मालतीपत्रिका ये तीन नाम जावित्री के हैं—यह हलकी व गरम होकर कफ, क्रिमि और विष को विनाशती है ॥

अब लौंग के नाम व गुण कहते हैं।

लवङ्ग, शिखर, दिव्य, लव, चन्दनपुष्पक, श्रीपुष्प, देवकुसुम, भृङ्गार और वारिसम्भव ये नव नाम लौंग के हैं—यह हलका व आँखों को आनन्ददायक व हृदय के लिये हितकारक होकर अग्नि को प्रकाशता हुआ पकाता है तथा शूल, अफरा, कफ, दमा, खाँसी, छर्दि और क्षयी को विनाशता है ॥

अब कङ्कोल के नाम व गुण कहते हैं।

कङ्कोल, कटुक, कोल, मारीच और माधवोषित ये पाँच नाम कङ्कोल के हैं—यह गरम होकर हृदयरोग, कफ, वात और मन्दाग्नि को जीतता है ॥

अब छोटी इलायची के नाम व गुण कहते हैं।

एला, त्रुटि, चन्द्रबाला, बहुला, निष्कुटि, त्विषा, कपोतवर्ण, सूक्ष्मैला, कुनटी और द्राविडी ये दश नाम छोटी इलायची के हैं—यह कफ, दमा, खाँसी, बवासीर और मूत्रकृच्छ्र को हरती है ॥

अब बड़ी इलायची के नाम व गुण कहते हैं।

स्थूलैला, त्रिपुटा, कन्या, भद्रा, एला और त्रिदिवो-

द्रवा ये छः नाम बड़ी इलायची के हैं—यह रुचि को उपजातीहुई तीखी, हलकी व गरम होकर पित्त को जीतती है तथा थुकथुकी को लाती हुई विष बस्तिरोग, मुखरोग, शिरोरोग, छर्दि और खाँसी को विनाशती है॥

अब दालचीनी के नाम व गुण कहते हैं।

त्वच, वराङ्ग, सकल, त्वक्चोच, तनुक, वर, लाटपर्ण्य, घन, भृङ्ग, गुरुत्वक् और स्वर्णभूमिक ये ग्यारह नाम दालचीनी के हैं—यह हलकी, गरम, कड़ुवी, विषनाशक व मीठी होकर पित्त को लाती है तथा हृद्रोग, बस्तिरोग, वात बवासीर, पीनस, क्रिमि और वीर्यरोग को दूर करती है॥

अब तेजपात के नाम व गुण कहते हैं।

पत्र, दलाह्व, ताम्रूम, तमाल, रोमु और रोमश ये छः नाम तेजपात के हैं—यह गरम व हलका होकर कफ, हृल्लास (थुकथुकी), बवासीर और वायु को नाशता है॥

अब नागकेसर के नाम व गुण कहते हैं।

नागकेसरक, नाग, चाम्पेय, केसर और गज ये पाँच नाम नागकेसर के हैं—यह रूखी, गरम व हलकी होकर आम को पचाती हुई दुर्गन्ध, कोढ़, विसर्प, कफ, पित्त और विष को विनाशती है॥

अब त्रिजात व चतुर्जात के नाम व गुण कहते हैं।

इलायची, दालचीनी और तेजपात इनको त्रिजात व त्रिसुगन्धक कहते हैं तथा नागकेसर, इलायची, दाल-चीनी और तेजपात इनको चतुर्जात कहते हैं—ये दोनों वायु और कफ को अथवा वातकफ को विनाशते हैं॥

अब तालीस के नाम व गुण कहते हैं।

तालीसपत्र, तालीस, धात्रीपत्र, सकोदन, अपर, ग्रन्थिकापत्र, पत्राढ्य और तुलसीच्छद ये आठ नाम तालीस के हैं—यह हलका, तीखा और गरम होकर दमा, खाँसी, कफ, वात, गोला, आमवात, मन्दाग्नि और क्षयी को नाशता हुआ रुचि को उपजाता है॥

अब सरल के नाम व गुण कहते हैं।

सरल, मदन, चण्ड, नमेरु और पीतवृक्षक ये पाँच नाम सरल के हैं—यह कण्ठ, कर्ण तथा नेत्ररोगको विनाशता हुआ गरम, हलका व कडुवा रहता है॥

अब श्रीवास के नाम व गुण कहते हैं।

श्रीवास, वेष्टक, दासी, श्रीनिवास और कलिद्रुम ये पाँच नाम श्रीवास के हैं—यह कफ, शिरोरोग तथा नेत्ररोग को हरताहुआ दस्तों को लगाता है॥

अब नेत्रबाला के नाम व गुण कहते हैं।

बालक, वारि, ह्रीवेर, पिङ्ग, आचमन, कच, उदीच्य, वज्र, मन्थाह्वा, वरिष्ठ और गन्धमूलक ये ग्यारह नाम नेत्रबाला के हैं—यह ठण्ढा, रूखा व हलका होकर अग्नि को प्रकाशता हुआ पकाता है तथा रक्तपित्त, ज्वर, कफ, दाह, प्यास और घावों को विनाशता है॥

अब जटमांसी व बालछड़ के नाम व गुण कहते हैं।

मांसी, जटा, भूतकेशी, क्रव्याद, अनलद और शिखा ये छः नाम जटामांसी के हैं और कृष्णा, पूतनाकेशी, गन्धमांसी व पिशाचिका ये चार नाम बालछड़ के

हैं—यह ठण्ढी होकर त्रिदोष, रक्त, दाह, विसर्प और कोढ़ को जीतती है ॥

अब खस के नाम व गुण कहते हैं ।

उशीर, अभय, सेव्य, वार, वीरणी और मूलिका ये छः नाम खस के हैं—यह पाचक, ठण्ढा व स्तम्भनकारी होकर कफपित्त को जीतता हुआ प्यास, रक्त, विष, विसर्प, दाह, मूत्रकृच्छ्र और घावों को विनाशता है ॥

अब रेणुका (गगनधूरि) के नाम व गुण कहते हैं ।

रेणुका, कपिला, कौन्ती, पाण्डुपत्री और हरेणुका ये पाँच नाम रेणुका के हैं—यह पित्तको उपजाती, बुद्धि को बढ़ाती तथा अग्नि को जगाती हुई गर्भ को गिराती है ॥

अब प्रियंगु के नाम व गुण कहते हैं ।

प्रियंगु, फलिनी, श्यामा, कान्ताह्वा, नन्दनी और लता ये छः नाम प्रियंगु के हैं—यह ठण्ढा होकर वमन, दाह, पित्तज्वर और रक्तरोग को जीतता है तथा मुख में कान्ति को उपजाता हुआ देह की दुर्गन्ध को नाशता है ॥

अब पारिपेल के नाम व गुण कहते हैं ।

पारिपेल, प्लव, वन्य, शुकाह्व और परिपेलक ये पाँच नाम पारिपेलके हैं—यह ठण्ढा होकर खुजली, कोढ़, लोहू, कफ और पित्त को दूर करता है ॥

अब छरीला के नाम व गुण कहते हैं ।

शैलेय, स्थविर, वृद्ध, शिलापुष्प और शिलोद्भव ये पाँच नाम छरीला के हैं—यह ठण्ढा व हृदय के लिये हितदायी होकर कफपित्त को नाशता हुआ हलकेरूप से रहता है ॥

अब कुन्दुरू के नाम व गुण कहते हैं।

कुन्दुरू, मेचक, कुन्द, खपुर, भीषण और बली ये छः नाम कुन्दुरू के हैं—यह पसीना को उपजाता हुआ वात, कफ, ब्रध्न और ज्वर को विनाशता है॥

अब गूगुल के नाम व गुण कहते हैं।

गुग्गुल, कालनिर्यास, महिषाक्ष, पलंकष, जटायु, कौशिक, धूर्त, देवधूप, शिव और पुर ये दश नाम गूगुल के हैं—यह उज्ज्वल, तीखा, वीर्य में गरम, मीठा व दस्तावर होकर टूटे को जोड़देता है तथा पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ पतला व बिगड़े स्वर का सुधारनेवाला होकर रसायनरूप से रहता है व अग्नि को प्रकाशता हुआ चिकना, बलकारी होकर कफ, वात, घाव, अपची, मेदोरोग, प्रमेह, रक्तवात, रक्तस्वेद, कोढ़, आमवात, फुन्सी, गांठि, सूजन, बवासीर, गलगण्ड और क्रिमियों को जीतता है और यह नया गूगुल वीर्य को बढ़ाता हुआ धातु को पुष्ट करता है वैसेही पुराना गगुल अतीव लेखन कहाता है॥

अब राल के नाम व गुण कहते हैं।

राल, सर्जरस, यक्षधूप, सर्ज, अग्निवल्लभ, क्षणाक, सालनिर्यास, लाक्षा, ललन और वर ये दश नाम राल के हैं—यह ठण्ढी, भारी, तीखी व कसैली होकर संग्रहणी को जीतती है तथा ग्रहदोष, रक्तरोग, पसीना, विसर्प, विष, घाव और ब्यवाँइयों को दूर करती है॥

अब स्थौणेयक (थुनेरा) के नाम व गुण कहते हैं।

स्थौणेयक, बर्हिश्चूड, शुक्रवर्ण और शुकच्छद ये

चार नाम थुनेरा के हैं—यह ठण्ढा होकर पुरुषार्थ को उपजाता व बुद्धि को बढ़ाता हुआ त्रिदोष व रक्तरोग को दूर करता है ॥

अब चौरक के नाम व गुण कहते हैं ।

चौरक, कितव, चन्द्र, दुष्पुत्र, शङ्कित और रिपु ये छः नाम चौरक के हैं—यह मीठा, ठण्ढा व हलका होकर कोढ़, वायु, कफ और रक्तरोग को जीतता है ॥

अब मुरा के नाम व गुण कहते हैं ।

मुरा, गन्धवती, दैत्य, गन्धाढ्या, सुरभि और कुटि ये छः नाम मुरा के हैं—यह ठण्ढी व हलकी होकर कुष्ठ, ग्रहदोष, पित्त और वातरक्त को विनाशती है ॥

अब कचूर के नाम व गुण कहते हैं ।

कर्चूर, द्राविड, गन्धमूलक, दुर्लभ और शटी ये पाँच नाम कचूर के हैं—यह मन्दाग्नि को जगाता व रुचि को उपजाता हुआ कोढ़, बवासीर, घाव व खाँसी को खो देता है तथा गरम व हलका होकर दमा, गोला, वायु, कफ और क्रिमियों को दूर करता है ॥

अब कचूरभेद के नाम व गुण कहते हैं ।

शटी, पलाशी, षड्ग्रन्था, सुव्रता और गन्धमूलिनी ये पाँच नाम कचूरभेद के हैं—यह ठण्ढा होकर ज्वर, आमवात, रक्तरोग और खाँसी को नाशता है तथा मल को बाँधता हुआ हलकेरूप से रहता है ॥

अब स्पृक्का (असपरक) के नाम व गुण कहते हैं ।

स्पृक्का, स्पृक्, ब्राह्मणी, देवी, निर्माल्या, कुटिका और वंध ये सात नाम स्पृक्का के हैं—यह मीठी व ठण्ढी होकर

पुरुषार्थ को बढ़ाती हुई कुष्ठ, अलक्ष्मी और त्रिदोषों को विनाशती है ॥

अब ठिवना के नाम व गुण कहते हैं।

ग्रन्थिपर्णी, नीलपुष्प, शुकपुष्प और शुकच्छद ये चार नाम ठिवना के हैं-यह हलका, तीखा, रुचिकारी तथा गरम होकर वायु व कफ को हरता है ॥

अब नलिका के नाम व गुण कहते हैं।

नलिका, नर्तकी, शून्या, निर्मला, धमनी और नटी ये छः नाम नलिका के हैं-यह पित्तरक्त की जीतने वाली, ठण्ढी व नेत्रों के लिये हितकारिणी होकर कोढ़ और मूत्रकृच्छ्र को जीतती है ॥

अब पद्माक के नाम व गुण कहते हैं।

पद्मक, मलय, चारु, पीतरक्त और सुप्रभ ये पाँच नाम पद्माक के हैं-यह दाह, विस्फोटक, कोढ़, कफ और रक्तपित्त को हरताहुआ गर्भ को भलीभाँति स्थापित करता है तथा ठण्ढा होकर प्यास, विसर्प और छर्दि को जीतता है ॥

अब पुण्डरीक के नाम व गुण कहते हैं।

प्रपुण्डरीक, पौण्ड्राह्व, शतपुष्प और सुपुष्पक ये चार नाम प्रपुण्डरीक के हैं-यह वीर्य को उपजाता हुआ ठण्ढा व नेत्रों के लिये हितदायक होकर कफपित्त को जीतता है ॥

अब तगर के नाम व गुण कहते हैं।

तगर, बर्हिण, जिह्म, वक्राह्व, नहुष और नत ये छः नाम तगर के हैं और पिण्डतगर, चीन, कटु और

महोरग ये चार नाम दूसरे तगर के हैं—ये दोनों मीठे, चिकने, तीखे, गरम व हलके होकर भूतों को जीतते हैं तथा विष, मिरगीरोग, शिरोरोग, नेत्ररोग और त्रिदोषों को विनाशते हैं ॥

अब गोरोचन के नाम व गुण कहते हैं ।

गोरोचना, रुचि, गौरी, रोचना, पिङ्गला, मङ्गल्या, गोतमी, मेध्या, बन्ध्या और गोपित्तसंभवा ये दश नाम गोरोचन के हैं—यह ठण्ढा व वश्यकारी होकर गर्भस्राव, ग्रहदोष व रक्तरोग को जीतता है ॥

अब दोनों नखों के नाम व गुण कहते हैं ।

नखाह्व, नखर, शुक्तिहनु, नागहनु, खर, शुक्तिशङ्ख और व्याघ्रनख ये सात नाम नख के हैं और व्याघ्रतल व पद ये दो नाम दूसरे नख के हैं—ये दोनों ग्रहपीड़ा, कफ, वातरक्त, ज्वर और कोढ़ को जीतते हैं तथा हलके, गरम, वीर्यवर्धक, बलकारी व हृदय के लिये हितदायक होकर स्वाद को लातेहुए विष को विनाशते हैं ॥

अब पतङ्ग के नाम व गुण कहते हैं ।

पतङ्ग, पटराग, रक्तकाष्ठ, कुचन्दन, सुरङ्गक, जगत्याह्व, पत्तूर और पटरञ्जक ये आठ नाम पतङ्ग के हैं—यह मीठा व ठण्ढा होकर पित्त, कफ, फोड़े व लोहू को जीतता है ॥

अब लाख के नाम व गुण कहते हैं ।

लाक्षा, निर्मत्सर, रक्ता, द्रुमव्याधि, पलंकषा, क्रिमिजा, जतु, दीप्ताह्वा, जावक और लवक ये दश नाम लाख के हैं—यह बिगड़े वर्ण को सुधारती हुई ठण्ढी, बलका-

रिणी तथा चिकनी होकर कफ व रक्तपित्त को जीतती है तथा घाव, उरःक्षत, विसर्प, क्रिमि, कोढ़ और ग्रहपीड़ा को विनाशती है और गुणों से लाख के समान अलक्तक भी होता है परन्तु विशेषता से व्यङ्ग को विनाशता है॥

अब पापड़ी के नाम व गुण कहते हैं।

पर्पटी, रजनी, कृष्णा, जातका, जननी और जनी ये छः नाम पापड़ी के हैं–यह वर्ण को देती व ठण्ढी होकर कफ, पित्त, रक्त और कोढ़ को जीतती है॥

अब पद्मिनी व कुमोदिनी के नाम व गुण कहते हैं।

पद्मिनी, विसिनी, नलिनी और सूर्यवल्लभा ये चार नाम पद्मिनी के हैं–तथा कुमुद्वती, कैरविणी, कुमुदिनी और उडुपप्रिया ये चार नाम कुमोदिनीके हैं–यह ठण्ढी व भारी होकर पित्त, कफ, विष और रक्त को जीतती है तथा रूखी व विष्टम्भिनी होकर मीठी कहाती है और इन्हीं गुणों के समान कुमोदिनी को भी वैद्योंने माना है॥

अब पद्मचारिणी के नाम व गुण कहते हैं।

पद्मचारिणी, अतिचरा, पद्माह्वा और चारटी ये चार नाम पद्मचारिणी के हैं–यह ठण्ढी व हलकी होकर कफ व मूत्रकृच्छ्र को जीतती हुई स्तनों में दाह करती है॥

अब सफ़ेदकमल के नाम कहते हैं।

कमल, श्वेताम्भोज, सारस, सरसीरुह, सहस्रपत्र, श्रीगेह, शतपत्र, कुशेशय, पङ्केरुह, तामरस, राजीव, पुष्कराह्वय, अब्ज, अम्भोरुह, पद्म, पुण्डरीक, पङ्कज, नल, सरोज, नलिन, अरविन्द और महोत्पल ये बाईस नाम सफ़ेदकमल के हैं॥

अब लालकमल के नाम कहते हैं।

रक्तोत्पल, कोकनद, हल्लक और रक्तसन्ध्यक ये चार नाम लालकमल के हैं॥

अब नीलकमल के नाम कहते हैं।

नीलोत्पल, कुवलय, भद्र और इन्दीवर ये चार नाम नीलकमल के हैं—यही यदि कुछेक सफ़ेदी लिये होवे तो कुमुद, कैरव और कुमुत् इन तीन नामों से कहाजाता है॥

अब इन सबोंके गुणों को कहते हैं।

सफ़ेदकमल ठण्ढा, वर्णका निखारनेवाला व मीठा होकर कफपित्त को जीतता हुआ प्यास, दाह, रक्त, विस्फोट, विष और विसर्प को विनाशता है और इससे न्यून गुण लालकमलादिकों में होते हैं॥

अब कह्लार के नाम व गुण कहते हैं।

कह्लार, ह्रस्वपाथोज, सौम्य और महत्सौगन्धिक ये चार नाम कह्लार के हैं—यह क़ाबिज़, विष्टम्भी, रूखा व भारी होकर बड़ी शीतलता को लाता है॥

अब कमलकेसर के नाम व गुण कहते हैं।

किञ्जल्क, केसर, गौर, आपीत और काञ्चनाह्वय ये पाँच नाम कमलकेसर के हैं—यह ठण्ढी होकर क़ब्ज़ता को लातीहुई खूनीबवासीर, कफ और पित्तको जीततीहै॥

अब कमलबीज के नाम व गुण कहते हैं।

पद्मबीज, कालेय, पद्माक्ष और पद्मकर्कटी ये चार नाम कमलबीज के हैं—यह ठण्ढा व मीठा होकर गर्भ को स्थापित करता हुआ भारीरूप से रहता है तथा वात-

कफहारी, बलदायक व मल को बाँधता हुआ पित्त, रक्त व दाह को जीतता है ॥

अब कमलमूल के नाम व गुण कहते हैं ।

मृणाल, बिस, अम्भोज, नाल, नीलनीरुह, पद्मादिमूल, शालूक, शालीन और करहाटक ये नव नाम कमलमूल के हैं—यह ठण्ढा होकर पुरुषार्थ को उपजाता हुआ पित्त, दाह और रक्त को जीतता है तथा भारी, क़ाबिज़ व मीठा होकर रुखाई को लाता है और येही गुण शालूक में भी कहे जाते हैं ॥

अब चमेली के नाम व गुण कहते हैं ।

जाती, प्रियंवदा, राज्ञी, मालती, सुमना, पीता, सत्यपरा, पीतपुष्पा और काञ्चनपुष्पिका ये नव नाम चमेली के हैं—यह हलकी व गरम होकर शिरोरोग, नेत्ररोग, दन्तरोग, घाव और रक्त को जीतती है ॥

अब मालती के नाम व गुण कहते हैं ।

मल्लिका, मोदिनी, मुक्तबन्धना और मदयन्तिका ये चार नाम मालती के हैं—यह गरम व हलकी होकर वीर्य को बढ़ाती हुई वात, पित्त और रक्तरोग को जीतती है ॥

अब जूही के नाम व गुण कहते हैं ।

यूथिका, हरिणी, बाला, पुष्पगन्धा, शिखण्डिनी और स्वर्णयूथा ये छः नाम जूही के हैं तथा पीता, गणिका और स्वर्णपुष्पिका ये तीन नाम पीलीजूही के हैं—यह ठण्ढी होकर रक्तरोग, शिरोरोग व नेत्ररोग को जीतती हुई कफवायु को करती है ॥

अब सेवती के नाम व गुण कहते हैं।

कुब्जका, भद्रतरणी, बृहत्पुष्पा, महासहा, शतपत्री, तरणी, कर्णिका और चारुकेशरा ये आठ नाम सेवती के हैं रक्ता, रक्तपुष्पा, लाक्षापुष्पा और अतिमञ्जुला ये चार नाम लालसेवती के हैं-यह ठण्ढी, हृदय को हित करती व कुब्जता को लातीहुई वीर्य को उपजाती है तथा हलकी होकर त्रिदोष व रक्तरोग को जीतती हुई बिगड़े वर्णोंको सुधारतीहै और येही गुण कुब्जका में भी होते हैं॥

अब केतकी व स्वर्णकेतकी के नाम व गुण कहते हैं।

केतकी, सूचिकापुष्प, जम्बूक और क्रकचच्छद ये चार नाम केतकी के हैं तथा सुवर्णकेतकी, लघुपुष्पा और सुगन्धिनी ये तीन नाम स्वर्णकेतकी के हैं--यह कड़वी, मीठी, हलकी और तीखी होकर कफ को विनाशती है॥

अब वासन्ती के नाम व गुण कहते हैं।

वासन्ती, सारणी, कुन्दा, प्रहसन्ती और वसन्तजा ये पाँच नाम वासन्ती के हैं-यह ठण्ढी,हलकी व तीखी होकर त्रिदोषों को हरती है॥

अब नेवारी के नाम व गुण कहते हैं।

नैपाली, ग्रैष्मका, लूता, लापिनी और वनमल्लिका ये पाँच नाम नेवारी के हैं तथा वार्षिकी, त्रिपुटा, श्रीमती और षट्पदप्रिया ये चार नाम वर्षावाली नेवारी के हैं-यह ठण्ढी, तीखी व हलकी होकर त्रिदोषों को हरती हुई कर्णरोग, नेत्ररोग व मुखरोग को विनाशती है और ये ही गुण वर्षावाली नेवारी में भी वैद्यों ने माने हैं॥

अथ माधवी के नाम व गुण कहते हैं।

माधवी, मण्डप, कामी, पुष्पेन्द्र और अभीष्टगन्धक ये पाँच नाम माधवी के हैं—यह मीठी, ठण्ढी व हलकी होकर त्रिदोषों को हरती है॥

अब चम्पा के नाम व गुण कहते हैं।

चम्पक, काचर, रम्य, चाम्पेय, सुरभि और चल ये छः नाम चम्पा के हैं—यह ठण्ढा होकर मूत्रकृच्छ्र, कफ, पित्त और रक्तवात को जीतता है॥

अथ पुन्नाग (संदेशरा) के नाम व गुण कहते हैं।

पुन्नाग, पाटलीपुष्प केसर और षट्पदालय ये चार नाम नागकेसर या संदेशरा के हैं—यह मीठा व ठण्ढा होकर रक्तपित्त और कफ को विनाशता है॥

अब बकुल (मौलसिरी) के नाम व गुण कहते हैं।

बकुल, केसर, मध्यगन्ध, सिंह, विशारद ये पाँच नाम मौलसिरी के हैं—यह ठण्ढा होकर कफ, पित्त, दन्तरोग और मद को नाशता है और इसका फल वायु को उपजाता, मल को बाँधता व कफपित्त को हरता हुआ पालारूप से रहता है॥

अब बघौला के नाम व गुण कहते हैं।

वुप, वृक, स्थूलपुष्प, वसुक और शिवशोधक ये पाँच नाम बघौला के हैं—यह ठण्ढा होकर विष, कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और दाह को हरता है॥

अथ कुन्द के नाम व गुण कहते हैं।

कुन्द, शुक्ल, सदापुष्प, भृङ्गबन्धु और मनोरम ये

पाँच नाम कुन्द के हैं—यह ठण्ढा व हलका होकर कफ, शिरोरोग, विष और पित्त को जीतता है॥

अब मुचुकुन्द के नाम व गुण कहते हैं।

मुचुकुन्द, क्षेत्रवृक्ष, चिबुक और प्रतिविष्णुष ये चार नाम मुचुकुन्द के हैं—यह शिरोरोग, रक्तपित्त और मुख-रोग को विनाशता है॥

अब बेला के नाम व गुण कहते हैं।

भूमण्डली, विचिच्छिन्न, द्विपदा और अष्टपदी ये चार नाम बेला के हैं—यह ठण्ढा व हलका होकर कफ, पित्त तथा विष को विनाशता है॥

अब तिलक के नाम व गुण कहते हैं।

तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, विचित्र और मुखमण्डन ये पाँच नाम तिलक के हैं—यह कफ को विनाशता व कुष्ठ को हरता हुआ बड़ा गरम होकर रसायनरूप से रहता है॥

अब मतिपाड़ी के नाम व गुण कहते हैं।

गणोरुक, कर्णिकार, कर्ण और गणाकारिका ये चार नाम मतिपाड़ी के हैं—यह शोधन होकर सूजन, कफ, रक्त, घाव और कोढ़ को जीतता है॥

अब दुपहरिया के नाम व गुण कहते हैं।

बन्धुजीव, शरत्पुष्प, बन्धु, बन्धूक और रक्तक ये पाँच नाम दुपहरिया के हैं—यह कफकारी होकर क़ब्ज़ता को लाता व वातपित्त को हरता हुआ हलकेरूप से रहता है॥

अब गुड़हर या (जासवन्द) के नाम व गुण कहते हैं।

जपापुष्प, जपारक्त, त्रिसन्ध्या, अरुणा और असिता

ये पाँच नाम जासवन्द के हैं—यह कृतज्ञता को लाती हुई वालों को बढ़ाती है तथा त्रिसन्ध्या कफ और पित्त को जीतती है ॥

अब सिन्दूरी के नाम व गुण कहते हैं ।

सिन्दूरी, रक्तबीजा, रक्तपुष्पा और सुकोमला ये चार नाम सिन्दूरी के हैं—यह कफ, पित्त, रक्त, प्यास और वमन को हरती हुई ठण्ढे रूप से रहती है ॥

अब तुलसी के नाम व गुण कहते हैं ।

तुलसी, सुरसा, गौरी, भूतघ्नी और बहुमञ्जरी ये पाँच नाम तुलसी के हैं—यह कडुवी, तीखी व हृदय को हित चाहती हुई गरम होकर दाह और पित्त को हरती है तथा दीपिनी होकर कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्त, पसलीशूल, कफ और वायु को जीतती है ॥

अब मरुवा के नाम व गुण कहते हैं ।

मरु, मरुवक, तीक्ष्ण, खरपुष्प और फणिज्झक ये पाँच नाम मरुवा के हैं—यह बड़ा अग्निदाता व हृदय के लिये हित पहुँचाता हुआ तीखा व गरम होकर पित्त को उपजाता है तथा हलका होकर बीछू आदिकों का विष, कफ, वायु, कोढ़ और क्रिमियों को जीतता है ॥

अब दौना के नाम व गुण कहते हैं ।

मदन, मदना, दोना, दम, मुनिसुत, मुनि, गन्धोत्कट, मदनक, विनीता और कुलपुत्रक ये दश नाम दौना के हैं—यह नेत्ररोग, कोढ़, लोहू, मेदोरोग, खुजली और त्रिदोषों को दूर करती है ॥

अब तीनों मल्लिकाओं के नाम व गुण कहते हैं ।

वर्वरी, वर्जक, कुण्ठ, वैकुण्ठ, कुठेरक, कपित्थार्जक,

वटपत्र, कटिञ्जर, कृष्णार्जक, कालमास, कराल और कृष्णमल्लिका ये बारह नाम श्याममल्लिका (वनतुलसी) के हैं—यदि यह कालेरंग की होय तो 'कठिल्लक' और 'कुठेरक' कहते हैं और सफ़ेद रंगवाली को 'अर्जक' तथा तीसरी को 'वटपत्र' कहते हैं—ये तीनों रूखी, ठण्ढी, कडुवी होकर दाह को करती हुई पित्त को उपजाती हैं तथा कफ, वायु, रक्त, दाद, क्रिमि और विषको विनाशती हैं ॥

दो० । नृपमुखतिलककटारमल, मदनमहिप जो कीन ।
ताही मदनविनोद में, तृतीयवर्गकहिदीन ॥ १ ।

इति श्रीमदनपालविरचिते निघण्टौ शक्तिधरनिर्मितायां भाषाव्याख्यायां कर्पूरादिस्तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

दो० । भाषब चौथे वर्गमहँ, स्वर्णादिक कर नाम ।
ऐसेही उन सबनके वर्णत हौं गुणग्राम ॥ १ ॥

अब सोने के नाम व गुण कहते हैं ।

सुवर्ण, काञ्चन, हेम, हाटक, तप्तकाञ्चन, चामीकर, शातकुम्भ, तपनीय, रुक्मक, जाम्बूनद, हिरण्य, स्वरल और जातरूपक ये तेरह नाम सोने के हैं—यह ठण्ढा, स्त्रीसंग में सुखदायक, बलकारी व भारी होकर बुढ़ापे को विनाशता है तथा कान्तिकारी होकर विष, घबड़ाहट, त्रिदोष, ज्वर और शोष को जीतलेता है और कसैला, कडुवा व मीठा होकर अतीव लेखनरूप से रहता है ॥

अब चाँदी के नाम व गुण कहते हैं ।

रूप्यक, रजत, रूप्य, तार, श्वेत और वसूत्तम ये छः नाम चाँदी के हैं—यह ठण्ढी, दस्तावर होकर वात्तपित्त को हरती हुई बुढ़ापे को नहीं लाती है तथा लेखनी,

कसैली होकर पाकमें खट्टापन करती है और दूसरी चाँदी दस्तावर होकर अवस्था को स्थापित करती है तथा चिकनी होकर धातुओं के लिये हित पहुँचाती है ॥

अब ताँबे के नाम व गुण कहते हैं।

ताम्र, म्लेच्छमुख, शुल्ब, नैपाल, रविनामक, उदुम्बर, सूर्यप्रिय, रक्तज और रक्तधातुक ये नव नाम ताँबे के हैं—यह दस्तावर, हलका, मीठा व ठण्ढा होकर पित्तकफ को नाशता हुआ घावों पर अंकुर जमाता है तथा पाण्डु, कोढ़, बवासीर, सूजन, दमा और खाँसी को जीतता है ॥

अब काँसे के नाम व गुण कहते हैं।

कांस्य, लोह, निज, घोष, पञ्चलोह और प्रकाशक ये छः नाम काँसे के हैं—यह भारी, गरम व नेत्रों के लिये हितदायी होकर कफपित्तको विनाशता हुआ दस्तों को लगाता है ॥

अब पीतल के नाम व गुण कहते हैं।

पीतलोह, सिंहलक, कपिल, सौकुमारक, वर्त्तलोह, त्रिलोह, राजरीति और महेश्वरी ये आठ नाम पीतल के हैं—यह ठण्ढी, रूखी, कडुवी और गरम होकर कफपित्त को विनाशती है ॥

अब राँगे के नाम व गुण कहते हैं।

रङ्गक, तीरक, वङ्ग, त्रपु, करटी और घन ये छः नाम राँगे के हैं—यह हलका, दस्तावर, रूखा व गरम होकर प्रमेह, कफ, क्रिमि, पाण्डु और दमा को नाशता हुआ कुछेक पित्त को पैदा करता है ॥

अब जस्त के नाम व गुण कहते हैं।

जसद, रङ्गसदृश और दितिहेतु ये तीन नाम जस्त के हैं—यह कसैला, तीखा व ठण्ढा होकर कफपित्त को हरता हुआ नेत्रों के लिये हित पहुँचाता है तथा उत्तम होकर प्रमेह, पाण्डु और दमा को विनाशता है॥

अब सीसे के नाम व गुण कहते हैं।

सीस, धातुमल, नाग, उरग, परिपिष्टक, जवनेष्ट, भुजग, विसृष्ट और कृष्णाक ये नव नाम सीसे के हैं—इसमें राँगे के समान गुण जानना चाहिये परन्तु विशेषता से प्रमेहों को विनाशता है॥

अब लोहे के नाम गुण कहते हैं।

लोह, शस्त्र, अयः, कुष्ठ, व्यङ्ग, पारावत और घन ये सात नाम लोहे के हैं और कृष्णायस्, तन्मल, किट्ट, मण्डूर, लोहज और रज ये छः नाम लोहमल के हैं—यह दस्तावर, भारी, मीठा और कसैला होकर कफपित्त को हरता है तथा ठण्ढा, नेत्रों का हितकारी, रूखा और बलदायी होकर वात को उपजाता हुआ समरूप से रहता है तथा सूजन, कोढ़, प्रमेह, बवासीर, कृत्रिम विष, पाण्डु और क्रिमियों को जीतता है और लोहे के गुण लोहकिट्ट में भी जानना चाहिये परन्तु विशेषता से पाण्डुरोग नाशता है॥

अब पारा के नाम व गुण कहते हैं।

पारद, चपल, हेमनिधि, सूत, रसोत्तम, त्रिनेत्र, रोषण, स्वामी, हरबीज, रस, प्रभु, रसेन्द्र, रसलोह और महारस ये चौदह नाम पारा के हैं—यह क्रिमि व कोढ़ को

नाशता हुआ आँखों के लिये हित करता है तथा गरम होकर बुढ़ापे को नहीं लाता है॥

अब अभ्रक के नाम व गुण कहते हैं।

अभ्रक, स्वच्छ, आकाश, पटल और वरपीतक ये पाँच नाम अभ्रक के हैं—यह भारी, ठण्ढा व बलकारी होकर कुष्ठ, प्रमेह और त्रिदोषों को दूर करता है सेवन किया अभ्रक क्रिमि, कुष्ठ और प्रमेह को हरता है तथा उज्ज्वल, वीर्यकारी व मन्दाग्नि का प्रकाशनेवाला होकर बल व बीज को बढ़ाता है ऐसा पुराने मुनियों ने कहा है॥

अब गन्धक के नाम व गुण कहते हैं।

गन्ध, सौगन्धक, लेखी, गन्धासमा, गन्धपीतक, लेलीतक, बलिवसा, वेगन्ध, गन्धक और बलि ये दश नाम गन्धक के हैं—यह पाक में कड़ुवा व वीर्य में गरम होकर पित्त को उपजाता हुआ दस्तों को लगाता है तथा कोढ़, क्षयी, तापतिल्ली, कफ, वायु और पारे से उपजे रोगों को हरता है॥

अब सोनामाखी के नाम व गुण कहते हैं।

माक्षिक, धातुमाक्षीक, ताप्य और तापीज ये चार नाम सोनामाखी के हैं—यह कसैली होकर पुरुषार्थ को बढ़ाती हुई बिगड़े स्वर को सुधारती है तथा हलकी होकर बुढ़ापे को नहीं लाती हुई आँखों के लिये हित करती है और कोढ़, सूजन, ववासीर, प्रमेह, वस्तिरोग, पाण्डु, उदररोग, विष और क्षयी को विनाशती है तथा मैथुन में आनन्द को उपजाती हुई कड़ुवी रहती है॥

अब मैनशिल के नाम व गुण कहते हैं।

मनःशिला, शिला, गोला, नैपाली, कुनटी, कुला, दिव्यौषधि, नागमाता, मनोगुप्ता और मनोम्बिका ये दश नाम मैनशिलके हैं—यह खाज़ की हरनेवाली, दस्तावर, गरम, लेखनी, कडुवी, तीखी व चिकनी होकर विष, दमा, खाँसी, भूतदोष, कफ और लोहू को जीतती है॥

अब हरिताल के नाम व गुण कहते हैं।

हरिताल, अल, ताल, गोदन्त और नटभूषण ये पाँच नाम हरिताल के हैं—यह कडुवा, चिकना, कसैला व गरम होकर विष, खुजली, कोढ़, मुखरोग, कफ, पित्त और बालग्रहदोषों को जीतता है॥

अब गेरू व सोनागेरू के नाम व गुण कहते हैं।

गैरिक, रक्तपाषाण, गिरिमृत् और गवेधुक ये चार नाम गेरू के हैं तथा स्वर्णवर्ण, स्वर्णमण्डल और स्वर्णगैरिक ये तीन नाम सोनागेरू के हैं—यह दाह, पित्त, रक्त, कफ, हिचकी और विष को नाशती हुई आँखों के लिये हितको देती है और येही गुण सोनागेरू में भी जानना चाहिये परन्तु विशेषता से वमन को विनाशती है॥

अब नीलाथोथा के नाम व गुण कहते हैं।

तुत्थ, कर्पूरिकातुत्थ, अमृतासङ्ग और मयूरग्रीवक ये चार नाम नीलाथोथा के हैं तथा दूसरे को शिखिकण्ठ कहते हैं—यह लेखन व भेदन होकर खुजली, कोढ़, विष, कफ और क्रिमियों को नाशता है तथा दूसरा नीलाथोथा उत्तम होकर नेत्रों के लिये हित पहुँचाता है॥

अब कासीस के नाम व गुण कहते हैं ।

कासीस, धातुकासीस, खेचर और तप्तलोमश ये चार नाम हीराकासीस के हैं तथा पुष्पकासीस, तुवर और वस्त्ररागधृक् ये तीन नाम दूसरे कासीस के हैं—ये दोनों खट्टे, गरम व कडुवे होकर बालों को बढ़ातेहुए आँखों के लिये हित करते हैं तथा खुजली विष, सफ़ेद कोढ़, मूत्रकृच्छ्र, कफ और वायु को विनाशते हैं ॥

अब शिंगरफ़ के नाम व गुण कहते हैं ।

हिंगुल, दरद, म्लेच्छ, सैकत और चूर्णपारद ये पाँच नाम शिंगरफ़ के हैं—यह पित्त व कफ को विनाशता हुआ आँखों के लिये हित करता है तथा विष और कोढ़ को हरता है ॥

अब सिन्दूर के नाम व गुण कहते हैं ।

सिन्दूर, नागज, रक्त, श्रीमत्, शृङ्गारभूषण, वसन्तमण्डन, नागरक्त और रक्तरज ये आठ नाम सिन्दूर के हैं—यह गरम होकर विसर्प, कुष्ठ, खुजली और विष को विनाशता हुआ टूटे को जोड़ देता है और घावों को शोधन कर अंकुरों को जमाता है ॥

अब सुरमा के नाम व गुण कहते हैं ।

सौवीर, अञ्जन, कृष्ण, कालनील, सुवीरज, स्रोतोञ्जन, स्रोतोज, नदीज, यामुन और वर ये दश नाम सुरमा के हैं—यह ग्राही, मीठा व नेत्रों के लिये हितदायी होकर वात व कफ को जीतता हुआ सेहुआँ और क्षयी को विनाशता है तथा ठण्ढा होता है और इन्हीं गुणोंवाला स्रोतोञ्जन भी कहाता है ॥

अब रसौंत के नाम व गुण कहते हैं।

रसाञ्जन, रसोद्भूत, तार्क्ष्यशैल, तार्क्ष्यज, रसाग्रय, कृत्रिम, तार्क्ष्य, दार्व्य और दार्वीरसोद्भव ये नव नाम रसौंत के हैं—यह कडुवा होकर कफ, मुखरोग और नेत्र-रोग को जीतता है तथा गरम, रसायन, तीखा और छेदन होकर घावों के दोषों को दूर करता है॥

अब पुष्पाञ्जन के नाम व गुण कहते हैं।

पुष्पाञ्जन, पुष्पकेतु, रीतिज और कुसुमाञ्जन ये चार नाम पुष्पाञ्जन के हैं—यह खारी व गरम होकर काच, अर्म और पटल को नाशता है॥

अब शिलाजीत के नाम व गुण कहते हैं।

शिलाजतु, उष्णज, शैल, निर्यास, गिरिशाह्वय, शिलाह्व, गिरिज, शैल, शैलेय और गिरिजतु ये दश नाम शिलाजीत के हैं—यह गरम, कडुवा, योगवाही तथा रसायन होकर छर्दि, प्रमेह, बादी बवासीर, कोढ़, मुखरोग, उदररोग, पाण्डुरोग, दमा, क्षयी, उन्माद, रक्त, सूजन, कफ और क्रिमियों को विनाशती है॥

अब बोल के नाम व गुण कहते हैं।

बोल, गन्धरस, वीर, निर्लोह, वर्वर, चल, सुगन्धि, नालिका, पिण्ड और रसगन्ध ये दश नाम बोल के हैं—यह दो प्रकार का होता है जो कि रक्तहारी, ठण्ढा व बुद्धिवर्धक होकर मन्दाग्नि को जगाता हुआ अन्न को पकाता है तथा ज्वर, मिरगीरोग और कोढ़ को नाशता हुआ गर्भाशय को शोधता है॥

अब फिटकरी के नाम व गुण कहते हैं।

स्फटिकाख्या, मृता, बाष्पी, काक्षी और सौराष्ट्रसंभवा ये पाँच नाम फिटकरी के हैं तथा आढ़की, तुवरी, भूतिका और सुरमृत्तिका ये चार नाम दूसरी फिटकरी के हैं—यह कसैली व गरम होकर कफ, पित्त, विष, घाव, सफ़ेद कुष्ठ और विसर्प को विनाशती है और येही गुण तुवरी में भी रहते हैं॥

अब समुद्रफेन के नाम व गुण कहते हैं।

समुद्रफेन, हिण्डीर, फेन, वारिकफ और द्विज ये पाँच नाम समुद्रफेन के हैं—यह नयनों के लिये हितदायक, लेखक और शमनक होकर फैलनेवाला कहाता है॥

अब मूँगा के नाम व गुण कहते हैं।

प्रवाल. विद्रुम, सिन्धु, लताग्र और रक्तवर्णक ये पाँच नाम मूँगा के हैं—यह पुष्टि, कान्ति व बलकारी होकर बल और वीर्य को बढ़ाता है॥

अब मोती के नाम व गुण कहते हैं।

मौक्तिक, तौतिला, मुक्ताफल, मुक्ता और शुक्तिज ये पाँच नाम मोती के हैं—यह मीठा, ठण्ढा व रोगहारी होकर विष को विनाशता है॥

अब माणिक्यादिकों के नाम व गुण कहते हैं।

माणिक्य, पद्मराग, वसु, रत्न और सुरत्नक ये पाँच नाम लाल के हैं और सूर्यकान्त, सूर्यमणि, सूर्याक्ष और दहनोपल ये चार नाम सूर्यकान्तमणि के हैं तथा चन्द्रकान्त, चन्द्रमणि, स्फटिक और स्फटिकोपल ये चार

नाम चन्द्रकान्तमणिके हैं तथा गोमेद, सुन्दर, पीत, रत्न और तृणाचर ये पाँच नाम पन्ना के हैं तथा हीरक, भिदुर, वज्र, सूचिवक्त्र और वराईक ये पाँच नाम हीरा के हैं तथा नीलरक्त, नीलमणि, वैडूर्य और बालवायज ये चार नाम लसुनियाँके हैं तथा गारुत्मत, मारकत, दृषद्गर्भ और हरिन्मणि ये चार नाम मरकतमणि के हैं तथा मुक्तास्फोटा, अब्धिमण्डूकी, शुक्ति और मौक्तिकमन्दिर ये चार नाम मोती सीप के हैं और मुक्तिकान्ति, कटुकान्ति, दीपनी और वह्निनाशिनी ये चार नाम मोतीकान्ति के हैं ये आँखों के लिये हितको चाहते हुए लेखन, ठण्ढे, कसैले, मीठे व फैलनेवाले होकर मङ्गल को देते हैं तथा धारने में श्रेष्ठ होकर दाह, दुष्टग्रह और विषोंको विनाशते हैं॥

अब शङ्ख के नाम व गुण कहते हैं ।

शङ्ख, कम्बु, जलधर, वारिज और दीर्घनिस्स्वन ये पाँच नाम शङ्ख के हैं यह पाक में कड़ुवा, कसैला और मीठा होकर हलके रूप से रहता है तथा नयनों के लिये हितदायक, लेखन, पक्तिशूलहारी व पित्तहारी व ठण्ढा तथा हलका होकर पित्त, कफ और रक्त को जीतता है॥

अब छोटे शङ्ख व कौड़ी के नाम व गुण कहते हैं ।

शङ्ख, लघुशङ्खनक, शम्बुक और वारिशुक्त ये चार नाम छोटे शङ्ख के हैं तथा कपर्द, क्षुल्लक, चराचर

१ "रमन्ते जना यस्मिन्निति रत्नम्" कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् । एतानि पञ्चरत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः ॥ सुवर्णं रजतं मुक्ता राजावर्तप्रवालकम् । रत्नपञ्चकमाख्यातं शेषं वस्तु प्रचक्षते ॥ मुक्ताफलं हिरण्यं च वैडूर्यं पद्मरागकम् । पुष्पराग च गोमेदं नीलं गारुत्मकं तथा ॥ प्रवालमुक्तान्युक्तानि महारत्नानि वै दश ॥ १ ॥

और वराटक ये चार नाम कौड़ी के हैं ये दोनों हलके व ठण्ढे होकर आँखरोग और फोड़ों को विनाशते हैं ॥

अब खड़िया व गौड़पाषाण के नाम व गुण कहते हैं।

खटी, कपोल, खटिनी, श्वेता और नाड़ीतरङ्गक ये पाँच नाम खड़िया के हैं और इसीका भेद गौड़पाषाण व क्षीरपाक कहा है—यह दाह व रक्तको हरती हुई ठण्ढी रहती है तथा यही गुण गौड़पाषाण में भी होते हैं ॥

अब कीचड़ व बालू के नाम व गुण कहते हैं।

पङ्क, कर्दमक, बालुका और सिकता ये चार नाम कीचड़ व बालू के हैं—यह (कीचड़) दाह, रक्तपित्त और सूजन को नाशता हुआ ठण्ढा होकर फैलनेवाला होता है तथा (बालू) लेखनी व ठण्ढी होकर घाव और उरःक्षत को विनाशती है ॥

अब चुम्बक पत्थर के नाम व गुण कहते हैं।

चुम्बक, कान्तपाषाण, अयस्कान्त और लोहकर्षक ये चार नाम चुम्बक पत्थर के हैं—यह लेखन व ठण्ढा होकर मेदोरोग, विष और कृत्रिमविष को विनाशता है ॥

अब काँच के नाम व गुण कहते हैं।

काच, कृत्रिमरत्न, विगुण और काचभाजन ये चार नाम काँच के हैं—यह फाड़नेवाला होकर घावों के लिये गुण करता है तथा नेत्रों के लिये हितदायक व लेखन होकर हलके रूप से रहता है ॥

दो०। नृपमुखातिलककटारमल, मदनमहिप जो कीन।
ताही मदनविनोद में, तूर्यवर्ग कहिदीन ॥ १॥

इति श्रीमदनपालविरचिते निघण्टौ श्रीशक्तिधरनिर्मितायां भाषाव्याख्यायां स्वर्णादिश्चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

दो०। भाषब पञ्चमवर्ग महँ, वट आदिक कर नाम।
ऐसेही उन सबनके, वर्णत हौं गुणग्राम॥ १॥

अब बड़ के नाम व गुण कहते हैं।

वट, रक्तपदा, क्षीरी, बहुपाद, वनस्पति, यक्षावास, पदारोही, न्यग्रोध, स्कन्धज और ध्रुव ये दश नाम बड़ के हैं-यह ठण्ढा व भारी होकर मल को बाँधता हुआ कफ, पित्त और घावों को विनाशता है॥

अब पीपल के नाम व गुण कहते हैं।

पिप्पल श्यामल, अश्वत्थ, क्षीरवृक्ष, गजाशन, हरिवास, चलदल, मङ्गल्य और बोधिपादप ये नव नाम पीपल के हैं-यह दुःखों को जीतता हुआ ठण्ढा होकर पित्त, कफ घाव और रक्तरोग को दूर करता है॥

अब पारसपीपल के नाम व गुण कहते हैं।

पारिश, फलीश, कपिनूत और कपीतन ये चार नाम पारसपीपल के हैं-यह पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ चिकना होकर कफ और क्रिमियों को देता है॥

अब गूलर के नाम व गुण कहते हैं।

उदुम्बर, क्षीरवृक्ष, जन्तुवृक्ष, सदाफल, हेमदुग्ध, क्रिमिफल, यक्षाङ्ग और शीतवल्कल ये आठ नाम गूलर के हैं-यह ठण्ढा व घावों के लिये हितदायक होकर कफ, पित्त व रक्तरोग को जीतताहुआ भारीरूप से रहता है॥

अब काले गूलर (कठूँबरि) के नाम व गुण कहते हैं।

काकोदुम्बरिका, फल्गु, मलायु और चित्रभेषज ये चार नाम कठूँबरि के हैं इसमें गूलर के समान समस्त गुण होते हैं परन्तु विशेषता से छिन्नहुए को विनाशती है॥

अब पिलखन (पाकरि) के नाम व गुण कहते हैं।

प्लक्ष, प्लव, चारुवृक्ष, सुपार्श्व, गर्भभाण्डक, वटी, कमण्डलु, यूप, पिप्परि और चारुदर्शन ये दश नाम पिलखन के हैं–यह ठण्ढा होकर घावों को हरता हुआ कफ, पित्त, सूजन और विसर्प को जीतता है॥

अब पञ्चक्षीरवृक्ष के नाम व गुण कहते हैं।

वड़, गूलर, पीपल, पारसपीपल और पिलखन ये पाँच क्षीरीवृक्ष कहेजाते हैं और इन्होंकी छाल पञ्च-वल्कला कहाती है–यह ठण्ढी व क़ाबिज़ होकर घाव, सूजन और विसर्प को जीतती है और कितेक वैद्यलोग पारसपीपल के स्थान में शिरस मिलाते हैं तथा कितेक वेतस को लेते हैं और क्षीरवृक्ष ठण्ढे होकर घावों के लिये हित पहुँचाते हुए योनिदोष, घाव, सूजन, पित्त और कफ को विनाशते तथा स्तनों में दूध को वढ़ातेहुए टूटी हड्डियों को जोड़ते हैं तथा उन्हीं क्षीर-वृक्षों के पत्ते ठण्ढे व क़ब्ज़ता को लातेहुए कफ, पित्त और रक्तरोग को दूर करते हैं व हलके रूप से रहते हैं और इन्होंका फल भी विष्टम्भी होकर मल को वाँधता हुआ रक्तपित्त और कफको विनाशता है॥

अब नन्दीवृक्ष के नाम व गुण कहते हैं।

नन्दीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही और गजपादप ये चार नाम नन्दीवृक्ष के हैं–इसमें पीपल के समान समस्त गुण रहते हैं परन्तु हलका व गरम होकर विष को विनाशता है॥

अब कदम्ब के नाम व गुण कहते हैं ।

कदम्ब, गन्धवत्पुष्प, प्रावृषेण्य और मनोन्नति ये चार नाम कदम्ब के हैं तथा धूलिकदम्ब, नीप और राजकदम्बक ये तीन नाम दूसरे कदम्ब के हैं—यह ठण्ढा होकर कफ, पित्त और रक्तरोग को विनाशता है ॥

अब अर्जुनवृक्ष (कोह) के नाम व गुण कहते हैं ।

ककुभ, अर्जुननामा, नद, मञ्जु और शठद्रुम ये पाँच नाम कोह के हैं—यह ठण्ढा होकर भग्न, क्षत, क्षय, विष और रक्तरोग को जीतता है ॥

अब शिरसवृक्ष के नाम व गुण कहते हैं ।

शिरीष, प्लवग, विप्र, शुकवृक्ष, कपीतन, मृदुपुष्प, श्यामवर्ण, भण्डीर और शङ्खिलीफल ये नव नाम शिरस के हैं—यह ठण्ढा होकर बिगड़े वर्ण को सुधारता हुआ विष, विसर्प और सूजन को विनाशता है ॥

अब आर्तगल (नीली कटसरैया) के नाम व गुण कहते हैं ।

आगट, आर्तगल, बहुकण्ट और प्रघर्षण ये चार नाम आर्तगल के हैं—यह कसैला, ठण्ढा होकर घावों को शोधता हुआ अंकुरों को जमाता है ॥

अब वेतस, जलवेतस व इज्जल के नाम व गुण कहते हैं ।

वेतस, वञ्जुल, नम्र, वानीर, दीर्घपत्रक, नादेय, मध्यपुष्प, तोयकाम और निकुञ्जक ये नव नाम वेतस के हैं तथा जलौकासंभूत, अम्भोज, निचुल और जलवेतस ये चार नाम जलवेतस के हैं तथा इज्जल[१], हिज्जल,

---

१ यह जलवेतस का भेद है अथवा " (निचुलोम्बुज इज्जलः, " इस अमरकोषके प्रमाण से समुद्रफल को भी कहते हैं ॥

गुच्छ, पला और कच्छपीलिका ये पाँच नाम हिज्जल के हैं—इन तीनोंमें से वेतस ठण्ढा होकर दाह, सूजन, बवासीर, योनिरोग, घाव विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, पथरी, कफ और वात को विनाशता है वैसेही जलवेतस ठण्ढा होकर क़ब्ज़ता को लाता हुआ वायु को कुपित करता है और येही गुण इज्जल में भी होते हैं परन्तु यह विशेषता से विष को विनाशता है ॥

अब लसोड़ा के नाम व गुण कहते हैं।

श्लेष्मान्तक, कर्बुदार, पिच्छली, भूतपादप, शेलु, शैलु, शैलूक और शैलिक ये नव नाम लसोड़ा के हैं—यह बालों के लिये हितदायक व गरम होकर विष, फोड़ा, घाव, विसर्प और कोढ़ को जीतता है वैसाही इसका फलभी पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ वात, पित्त, क्षयी और रक्तरोग को जीतता है ॥

अब पीलू के नाम व गुण कहते हैं।

पीलु, शतसहस्रांशी, तीक्ष्णा, करभप्रिय, सहस्राङ्गी और गुड़फल ये छः नाम पीलू के हैं और इसके फल को पीलु व पीलुज कहते हैं—यह गरम व मन्दाग्नि को जगाताहुआ भेदी होकर रक्तपित्त कोकरता है तथा हलका होकर गोला, बवासीर, तिल्लीरोग, वात, पथरी व कफ को हरताहुआ बुढ़ापे को विनाशता है ॥

अब शाक (साग) के नाम व गुण कहते हैं।

शाक, खरच्छद, भूमिसह और दीर्घच्छद ये चार नाम साग के हैं—यह कफ, वात और रक्त को विनाशता व गर्भ को स्थापित करताहुआ ठण्ढा रहता है ॥

अब शाल के नाम व गुण कहते हैं।

शाल, सर्जरस, सर्ज, श्रीकृष्णारि और पत्रक ये पाँच नाम शाल के हैं–यह क़ाबिज़ होकर घाव, कफ, दग्ध और विष को विनाशताहुआ ठण्ढा बनारहता है ॥

अब तमाल के नाम व गुण कहते हैं।

तमाल, तापिच्छ, कालस्कन्ध और मितद्रुम ये चार नाम तमाल के हैं–इसमें शाल के समान गुण रहते हैं तथा सूजन, दाह और विस्फोटकरोग को हरता है ॥

अब खदिर (खैर) के नाम व गुण कहते हैं।

खदिर, रक्तसार, गायत्री और बालपत्रक ये चार नाम खैर के हैं तथा श्वेतसार, कार्मुक और कुब्जकण्टक ये तीन नाम सफ़ेद खैर के हैं–ये दोनों ठण्ढे व दाँतों के लिये हितदायक होकर क्रिमि, प्रमेह, ज्वर, घाव, सफ़ेद कोढ़, आमवात, पित्तरक्त, पाण्डु, कुष्ठ और कफ को जीतताहै तथा इसका गोंद मीठा व बलदायक होकर वीर्य को बढ़ाता है और इसका सार भी विशद व बलकारी होकर मुखरोग, कफ और रक्तरोग को जीतता है ॥

अब अरिमेद (दुर्गन्धितखैर) के नाम व गुण कहते हैं।

अरिमेद, विट्खदिर, गोधास्कन्ध और अरिमेदक ये चार नाम दुर्गन्धित खैर के हैं–यह कसैला व गरम होकर मुखरोग, दन्तरोग व रक्तरोग को हरता हुआ खुजली, विष, कफ, क्रिमि और घावों को जीतता है ॥

अब बबूल के नाम व गुण कहते हैं।

बब्बूल, किंकराल, पीतक और पीतपुष्पक ये चार नाम बबूल के हैं–यह कफहारी व क़ाबिज़ होकर कोढ़,

क्रिमि और विष को विनाशता है और इसका काढ़ा सात दिन पीवे तो रक्तपित्त दूर होता है ॥

अब विजयसार के नाम व गुण कहते हैं।

बीजक, अशनक, सौरी, प्रिय, काम्य और अलकप्रिय ये छः नाम विजयसार के हैं—यह कोढ़, विसर्प, सफ़ेद कोढ़, प्रमेह, ज्वर, क्रिमि, कफ और रक्तपित्त को विनाशता है तथा बिगड़ी खाल को सुधारता व बालों को बढ़ाताहुआ बुढ़ापे को दूर करता है ॥

अब तिनिश (तेंदुवा) के नाम व गुण कहते हैं।

तिनिश, स्पन्दन, नेमी, सर्वसार और अश्मगन्धक ये पाँच नाम तिनिश के हैं—यह कफ, पित्तरक्त, मेदोरोग, कोढ़ और प्रमेहों को विनाशता है ॥

अब भोजपत्र के नाम व गुण कहते हैं।

भूर्ज, भुज, बहुपुट, मृदुत्वक् और लेख्यपत्रक ये पाँच नाम भोजपत्र के हैं—यह भूतदोष, ग्रहदोष, कफ, कर्णरोग और रक्तपित्त को जीतता है ॥

अब पलाश (ढाक) के नाम व गुण कहते हैं।

पलाश, किंशुक, किर्मी, याज्ञिक, ब्रह्मपादप, क्षीरश्रेष्ठ, रक्तपुष्प, त्रिवृत और समिदुत्तम ये नव नाम ढाक के हैं—यह मन्दाग्नि को जगाता व पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ दस्तावर व गरम होकर घाव और गोला को जीतता है तथा टूटेहुए को जोड़ता हुआ ग्रहणी, बवासीर और क्रिमियों को विनाशता है और इसका फूल कफ, पित्तरक्त और मूत्रकृच्छ्र को जीतता व मल को बाँधता हुआ ठण्ढा रहता है तथा इसका फलभी हलका व गरम

होकर प्रमेह, बवासीर, क्रिमि और दुष्ट कफ को हरता है ॥

अब धव के नाम व गुण कहते हैं ।

धव, नन्दितरु, गौर, शकटाक्ष और धुरन्धर ये पाँच नाम धव के हैं—यह ठण्ढा होकर प्रमेह रक्त, पाण्डु, पित्त और कफ को विनाशता है ॥

अब धामिनवृक्ष के नाम व गुण कहते हैं ।

धन्वन, गोत्रविटपी, धर्मण और गोत्रपुष्पक ये चार नाम धामिनवृक्ष के हैं—यह कसैला व हलका होकर कफ, पित्तरक्त और खाँसी को जीतता है ॥

अब सर्ज के नाम व गुण कहते हैं ।

सर्ज, अजकर्ण, स्वेदघ्न, लतावृक्ष और कुदेहक ये पाँच नाम सर्जक (सोज़ा) के हैं—यह बिगड़े वर्ण का सुधारनेवाला होकर कफ, पसीना, मल, पित्त और क्रिमियों को जीतता है ॥

अब शाखोट (सहोरा) के नाम व गुण कहते हैं ।

शाखोट, पीतफल, छागी और क्षीरविनाशन ये चार नाम सहोरा के हैं—यह वातरक्त, रक्त, कफ, वात और अतीसार को जीतता है ॥

अब वरुण (बरना) के नाम व गुण कहते हैं ।

वरुण, वरण, श्वेत, शाकवृक्ष और कुमारक ये पाँच नाम बरना के हैं—यह पित्तकारी व भेदी होकर कफ, मूत्रकृच्छ्र, रक्त, वात, गोला, वातरक्त, क्रिमि और सूजन को विनाशता हुआ मन्दाग्नि को जगाता है ॥

अब जिङ्गिणी के नाम व गुण कहते हैं ।

जिङ्गिणी, झिङ्गिणी, जिङ्गी, मुनि, यासा और मोदकी

ये छः नाम जिङ्गिणी के हैं–यह घाव, हृद्रोग, वायु और अतीसार को जीतता हुआ कड़ुवा रहता है और इसका सत गरम होकर नस्य लेने से बाहुपीड़ा को विनाशता है॥

अब शल्लकी (सालई वृक्ष) के नाम व गुण कहते हैं।

शल्लकी, वल्लकी, मोची, गजभक्षा, महारुहा, गन्धवीरा, कुंदुरुकी, सुस्रावा और वनकर्णिका ये नव नाम सालई वृक्ष के हैं–यह घाव, पित्तरक्त, कफपित्त और अतीसार को जीतता है॥

अब हिंगोट के नाम व गुण कहते हैं।

इंगुद, भल्लकी, वृक्षकण्टक और तापसद्रुम ये चार नाम हिंगोटके हैं–यह कोढ़, भूतादिदोष, ग्रहदोष, घाव, विष और क्रिमियों को हरता हुआ गरम होकर सफ़ेद कोढ़ और शूल को विनाशता है वैसेही इसका फल भी कफ और वायु को विनाशता है॥

अब कटम्भर (कटहा) के नाम व गुण कहते हैं।

कटम्भर, चारुशृङ्गी, कटभी और तृणशौण्डक ये चार नाम कटम्भर के हैं–यह प्रमेह, रक्तरोग, नाड़ीव्रण, विष और क्रिमियों को हरता है तथा गरम होकर कफ व कोढ़ को विनाशता है और इसका फल कफ और वीर्य को दूर करता है वैसेही इसका सत भी भारी होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता व बल को करता हुआ वायु को हरता है॥

अब मोषा के नाम व गुण कहते हैं।

मुष्क, मोक्षकक, घुण्टी, शिखरी और क्षुद्रपाटला ये पाँच नाम मोषा के हैं–यह कफ व वायु को विनाशता व

मल को बाँधता हुआ गुल्म, विष और क्रिमियों को हरता व गरम रहता है और इसका फूल बस्तिरोग, खुजली, कफ और पित्त को जीतता है तथा इसका सत भी धातुओं को अतीव पुष्ट करता हुआ क्षयी, पित्त और वायु को विनाशता है ॥

अब पारिभद्र (पहाड़ीनींब) के नाम व गुण कहते हैं ।

पारिभद्र, निम्बवृक्ष, रक्तपुष्प, प्रभद्रक, कण्टकी, पारिजात, मन्दार और कटिकिंशुक ये आठ नाम पहाड़ी नींब के हैं—यह क्रिमि, कफ, मेद और कफवात को विनाशता है ॥

अब शाल्मलि (सेमर) के नाम व गुण कहते हैं ।

शाल्मली, तूलिनी, मोचा, कुक्कुटी, रक्तपुष्पिका, कण्टकाढ्या, स्थूलफला, पिच्छिला और चिरंजीविनी ये नव नाम सेमर के हैं—यह ठण्ढा होकर धातुओं को पुष्ट करता व वीर्य को बढ़ाता हुआ रक्तपित्त को जीतता है और इसका गोंद पुरुषार्थ को उपजाता हुआ सूजन, पित्त और वातरक्त को विनाशता है तथा रसायन होकर चिकना रहता है और इसका फूल भी क़ाबिज़ होकर पित्त को जीतता है ॥

अब तुनि के नाम व गुण कहते हैं ।

तुणि, कुठेर, आपीत, तनुक और नन्दिपादप ये पाँच नाम तुनि के हैं—यह मल को बाँधती हुई ठण्ढी होकर धातुओं को पुष्ट करती है तथा घाव, कोढ़ और रक्तपित्त को विनाशती है ॥

---

१ षष्टिवर्षसहस्राणि वने तिष्ठति शाल्मलिरिति वचनात् ॥

अब सप्तपर्ण (सातला) के नाम व गुण कहते हैं।

सप्तपर्णा, गुच्छपुष्प, छत्री और शाल्मलिपत्रक ये चार नाम सातला के हैं—यह घाव, कफ, वात व कोढ़ को हरता हुआ दस्तावर होता है॥

अब हारिद्र के नाम व गुण कहते हैं।

हारिद्रक, पीतवर्ण, श्रीमान्, गेरद्रुम और वर ये पाँच नाम हरिद्रु (हलदुआ) के हैं—यह कफ को हरता व घावों को शोधता हुआ अंकुरों को जमाता है॥

अब करञ्ज (कञ्जा) के नाम व गुण कहते हैं।

करञ्ज, नक्तमाल, नक्ताह्व, घृतवर्णक, पूतिक, पूतिवर्णा, प्रकीर्ण और चिरबिल्वक ये आठ नाम करञ्ज के हैं—यह कडुवा, तीखा व वीर्य में गरम होकर योनिदोष को जीतता हुआ कुष्ठ, उदावर्त, गोला, बवासीर, घाव, क्रिमि और कफ को विनाशता है और इसका फल कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, क्रिमि और कोढ़ को जीतता है तथा इसका पत्ता कफ, वात, बवासीर, क्रिमि और सूजन को हरता हुआ उत्तमरूप से रहता है॥

अब करञ्जी के नाम व गुण कहते हैं।

करञ्जी, काकतिक्ता, वयस्या और अङ्गारवल्लरी ये चार नाम करञ्जी के हैं—यह गरम होकर वायु, बवासीर, क्रिमि, कोढ़ और प्रमेहों को दूर करती है॥

अब तिरिगिच्छि के नाम व गुण कहते हैं।

तिरिगिच्छि, गजकण्ट, करञ्जी, क्षीरिणी और द्विप ये पाँच नाम तिरिगिच्छि के हैं—यह कफ, बवासीर, क्रिमि, कोढ़ और प्रमेहों को हरती है॥

अब शमी (जाँठी) के नाम व गुण कहते हैं।

शमी, तुङ्ग, शङ्खफला, पवित्रा, केशहृत्फला, लक्ष्मी, शिवा, अधिमती, भूशमी और शङ्कराह्वया ये दश नाम शमी के हैं—यह ठण्ढी व हलकी हो दमा, कोढ़, बवासीर व कफ को हरती हुई दस्तावर होती है और इसका फल पित्तकारी व रूखा होकर बुद्धि को बढ़ाता हुआ बालों को विनाशता है॥

अब टिंठिणी (झिंझिणी) के नाम व गुण कहते हैं।

शमीषिका, टिरिंठशिका, दुर्बला, अम्बुशिरीषिका ये चार नाम झिंझिणी के हैं—यह कफ, कोढ़, बवासीर, सन्निपात और विष को विनाशती है॥

अब अरिष्ट (रीठा) के नाम व गुण कहते हैं।

अरिष्ट, गर्भपाती, कुम्भवीर्य, फेनिल, कृष्णबीज, रक्तबीज, पीतफेन और अर्थसाधन ये आठ नाम रीठा के हैं—यह त्रिदोषों को नाशता हुआ गरम होकर गर्भ और ग्रहदोषों को दूर करता है॥

अब शिंशपा (शीशम) के नाम व गुण कहते हैं।

शिंशपा, कपिला, कृष्णा, सारमण्डलपत्रिका, कुशिंशपा, भस्मपिङ्गला और वत्सादनी ये सात नाम शीशम के हैं—यह गरम होकर प्रमेह, कोढ़, सफ़ेद कोढ़, छर्दि, क्रिमि, बास्तिरोग, घाव, दाह, रक्त और गर्भको गिरातीहै॥

अब अगस्त्य के नाम व गुण कहते हैं।

अगस्त्य, वङ्गसेनाह्व, मधुशिग्रु और मुनिद्रुम ये चार नाम अगस्त्य के हैं—यह पित्तकफ व गरम को जीतता

---

१ शिशब्दं शपतीति शिंशपा॥

हुआ ठण्ढा रहता है और इसका फूल पीनस, कफ, पित्त और रतौंधी को विनाशता है ॥

दो० । नृपमुखतिलककटारमल, मदनमहिप जो कीन ।
ताही मदनविनोद में, बाणांवर्गकहिदीन ॥ १ ॥

इति श्रीमदनपालविरचिते निघण्टौ श्रीशक्तिधरनिर्मितायां भाषाव्याख्यायां वटादिःपञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

दो० । भाषत्र छठयें वर्ग महँ, द्राक्षादिक कर नाम ।
ऐसेही उन सबनके, वर्णत हौं गुणग्राम ॥ १ ॥

अब दाख के नाम व गुण कहते हैं ।

द्राक्षा, मधुफला, स्वाद्वी, हारहूणा, फलोत्तमा, मृद्वीका, मधुयोनि, रसाला, गोस्तनी और गुडा ये दश नाम दाख के हैं–यह पकी हुई दस्तावर व ठण्ढी होकर आँखों को हित पहुँचातीहुई धातुओं को पुष्ट करती है तथा भारी होकर प्यास, ज्वर, दमा, छर्दि, वातरक्त, कामला, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, क्षयी और मदात्यय को विनाशती है और कच्ची दाख–अल्पगुणों को करतीहुई भारी रहती है तथा खट्टी दाख–रक्तपित्त को हरती है व छोटी दाख–वीर्य से रहित होती है व गोस्तन के समान दाख समान गुणोंवाली कहाती है तथा पहाड़ी दाख हलकी होकर खट्टेपनसमेत कफ व अम्लपित्त को विनाशती है ॥

अब पके व नहीं पकेहुए आम के नाम व गुण कहते हैं ।

आम्र, चूत, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, माकन्द, पिकबन्धु, रसालु और कामवल्लभ ये नव नाम पके

आम के हैं--यह ग्राही होकर प्रमेह, रक्त, कफ, पित्त व घावों को जीतता है व इसका कच्चाफल अतीव खट्टा व रूखा होकर त्रिदोष व रक्तरोग को जीतता है तथा पका हुआ फल मीठा, वीर्यवर्धक व चिकना होकर हृदय के लिये हित करताहुआ बल को देता है तथा भारी, वात-हारी व रुचिकारी होकर रूप को सुधारता हुआ ठण्ढा रहकर पित्त को नहीं उपजाता है और इसका रस दस्ता-वर व चिकना होकर रुचि को जनता हुआ बल व वर्ण को करता है तथा वातहारी, कफपित्तविदारी, कसैला व मीठा होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ भारी व चिकना बना रहता है और पका हुआ आम आयु को करता व मांस, वीर्य और बल को देता है तथा सूखा, कसैला व खट्टा होकर कफ और वायु को जीतता है॥

अब जामुन के नाम व गुण कहते हैं।

महाजम्बू, राजजम्बू, महास्कन्धा, बृहत्फला, क्षुद्र-जम्बू, वीरपत्रा, मेघाभा, कामवल्लभा, नादेयी और क्षुद्र-फला ये दश नाम जामुन के हैं तथा जम्बु और जाम्बव ये दो नाम जामुनफल के हैं--यह मलबन्धिनी व रूखी होकर कफ, पित्त, घाव और रक्तरोग को जीतती है वैसे ही राजजामुन का फल स्वादिल, विष्टम्भी व भारी होकर रुचि को उपजाता है ऐसाही छोटीजामुनका फलभी वैद्यों ने कहा है परन्तु विशेषता से दाह को विनाशता है॥

अब नारिकेल के नाम व गुण कहते हैं।

नारिकेल, दृढफल, महावृक्ष, महाफल, तृणराज, तृणफल, तृणाढ्य और दृढबीजक ये आठ नाम नारिकेल

(नारियल) के हैं और इसका फल ठण्ढा होकर देर में जरता हुआ बस्ति को शोधता है तथा विष्टम्भी होकर धातुओं को पुष्ट करता व पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ वात, पित्त रक्त और दाह को जीतता है और इसका रस भी ठण्ढाहोकर हृदयको हित पहुँचाता मन्दाग्नि को जगाता व वीर्य को बढ़ाताहुआ हलका रहता है तथा इसकी गिरी वीर्य को उपजाती हुई वातपित्त को जीतती है॥

अब छुहारा व खजूर के नाम व गुण कहते हैं।

श्रेणी, खर्जूरिकावृक्ष श्रीफला, द्वीपसम्भवा, पिण्ड-खर्जूरिका, खर्जू दुष्प्रधर्षा, सुकण्टका, स्कन्धफला, स्वाद्वी, दुरारुहा मृदुच्छदा, भूमिखर्जूरिका, काककर्कटी और कासुकर्कटी ये पन्द्रह नाम छुहारा व खजूर के हैं और इसका फल ठण्ढा, मीठा व चिकना होकर घाव व रक्तरोग को जीतता है तथा बलदायक होकर वात, पित्त, मद, मूर्च्छा और मदात्यय को विनाशता है और इससे अल्प गुण छुहारा में होते हैं व इसकी गिरी भी मस्तकरोग को हरती ठण्ढी व पुरुषार्थ को उपजाती हुई पित्तरक्त और दाह को जीतती है॥

अब शिलेमानी के नाम व गुण कहते हैं।

शिलेमानी, लोकपरा, मृदुला और तिवरीफला ये चार नाम शिलेमानी (सुलेमानी) के हैं—यह परिश्रम, भ्रम, दाह, मूर्च्छा और रक्तपित्त को विनाशती है॥

अब कदली (केला) के नाम व गुण कहते हैं।

कदली, ग्रन्थिनी, मोचा, रम्भा, वीरा, आयतच्छदा, काष्ठीला, वारणी, रम्भामोचा और महाफला ये दश

नाम केला के हैं—यह योनिदोष, पथरी और रक्तपित्त को हरतीहुई ठण्ढी रहती है और इसका कन्द ठण्ढा होकर बल को करताहुआ बालों को बढ़ाता है तथा पित्त, कफ और रक्त को जीतताहै और इसका फल मीठा, ठण्ढा, विष्टम्भी, कफकारी, भारी व चिकना होकर पित्त-रक्त, प्यास, दाह, क्षत, क्षयी और वात को जीतता है॥

अब दाडिमी (अनार) के नाम व गुण कहते हैं।

दाडिमी, रक्तकुसुमा, दन्तबीजा और शुकप्रिया ये चार नाम अनार के हैं—यह मन्दाग्नि को जगाता, हृदय को हित पहुँचाता व रुचि को उपजाताहुआ अत्यन्त पित्त को नहीं करता है व कसैला के अनुसार रसवाला होकर मल को बाँधता है और अम्लवेतस की भाँति दो प्रकार का है उनमें से मीठा अनार त्रिदोष को विनाशता है तथा खट्टा अनार वात, बल व रक्त को जीतता है व सूखेहुए खट्टे अनार में भी येही गुण रहते हैं व इसका रस कफ व वायु को विनाशता है॥

अब कतक (निर्मली) के नाम व गुण कहते हैं।

कतक और पयःप्रसादि ये दो नाम निर्मली के हैं और इसका फल कतक कहाता है जोकि आँखों के लिये हित को पहुँचाताहुआ पानी को निर्मल करता है तथा वात व कफ को हरताहुआ ठण्ढा, मीठा व कसैला होकर भारी रहता है॥

अब बदरी के नाम व गुण कहते हैं।

बदरी, कर्कटी, मोघा, कोरण्टी और युग्मकण्टका ये पाँच नाम पहिली बेरी के हैं तथा स्निग्धच्छदा व कोश-

फला ये दो नाम दूसरी बेरी के हैं व "सौवीरिका" यह तीसरी का नाम है तथा 'हस्तिकोलि' चौथी को कहते हैं और 'कर्कन्धु' व 'कीधुका' ये दो नाम छोटी बड़बेरीके हैं यह ठण्ढी, कड़ुवी व रूखी होकर पित्त व कफको विनाशती है और फेनिल, कुवल, कुह, कर्कन्धु, हूरुवबदर, वरट और धुकंधुक ये लौकिक बेरके नाम हैं और पकेहुए गूदेवाला बेर मीठा माना है तथा बड़ाबेर सौवीरक कहाता है यह हलका, ग्राही, रुचिकारी व गरम होकर वायु को जीतता हुआ कफ व पित्त को करता है व कोलनामक बेर भारी व दस्तावर होता है तथा सौवीरनामक बेर ठण्ढा, भेदी व भारी होकर वीर्य को उपजाता हुआ धातु को पुष्ट करता है व पित्त, दाह, रक्त, क्षत, प्यास और वायु को हरता है तथा सूखा बेर भेदी, अग्निकारी व हलका होकर प्यास, ग्लानि और रक्त को जीतता है तथा छोटा बेर मीठा, चिकना व भारी होकर पित्त व वायु को नाशता है व इसकी गिरी भी वायु व पित्त को हरती हुई धातुओं को पुष्ट करती व वीर्य और बल को देती है ॥

अब क्षीरी (खिन्नी) के नाम व गुण कहते हैं।

क्षीरी, क्षत्रिया, राजाह्वा, राजादन, फलाशी, राजन्य, स्तम्भन, अश्वच्चिबुक और मुच्चिलिण्टक ये नव नाम खिन्नी के हैं व इसका फल ठण्ढा, चिकना, भारी व बल-दायक होकर प्यास, मूर्च्छा, मद, भ्रम, क्षयी, त्रिदोष और रक्तरोग को जीतता है ॥

अब चार (चिरौंजी) के नाम व गुण कहते हैं।

चार, धनुष्पट, शाल, प्रियाल और मुनिवल्लभ ये

पाँच नाम चिरौंजी के हैं–यह पित्त, कफ और रक्तरोग को जीतती है व इसका फल मीठा, भारी, चिकना व दस्तावर होकर वात, पित्त, दाह, प्यास और क्षत को विनाशता है व इसकी गिरी मीठी होकर धातुओं को पुष्ट करती व वीर्य को उपजाती हुई पित्त व वायु को जीतती है॥

अब फालसा के नाम व गुण कहते हैं।

परूषक, मृदुफल, परूष, रोपण और पर ये पाँच नाम फालसा के हैं–यह कसैला व खट्टा होकर आम व पित्त को करता हुआ हलका रहता है व पकाहुआ पाक में मीठा, ठण्ढा व विष्टम्भी होकर धातु को पुष्ट करता हुआ हृदय को बल देता है तथा प्यास, पित्त, दाह, रक्त, क्षत, क्षयी और वायु को विनाशता है॥

अब तेंदुवा के नाम व गुण कहते हैं।

तिन्दुक, स्यन्दन, स्फूर्ज्य, कालसार, रावण, काकपीलु और कुपीलु ये सात नाम तेंदुवा के हैं और विषतिन्दुक नामवाला दूसरा कहाता है–यह घाव व वायु को विनाशता है व इसका सार पित्तरोग को जीतता है व इसका कच्चा फल भी ग्राही, वातकारी व ठण्ढा होकर हलका रहता है व पकाहुआ फल पित्त, प्रमेह, रक्त और कफ को विनाशताहुआ भारी कहाता है तथा तेंदुवा में भी येही गुण होते हैं परन्तु विशेषता से मल को बाँधताहुआ ठण्ढा रहता है॥

अब किङ्किणी (काँकई) के नाम व गुण कहते हैं।

किङ्किणील, व्याघ्रपाद, देवदारु और चर ये चार

नाम कोंकई के हैं—यह कसैली व कडुवी होकर पित्त व कफ को हरतीहुई ठण्ढी रहती है और इसका कच्चा फल वायु को करता है तथा पकाहुआ फल मीठा होकर त्रिदोष को विनाशता है॥

अब मधूक (महुआ) के नाम व गुण कहते हैं।

मधूक, मधुक, तीक्ष्ण, सार, गुडपुष्पक, गोलाफल, मधुकोष्ठ, मधुकोष्ठी और मधुद्रुम ये नव नाम महुआ के हैं तथा ह्रस्वफल, मधुर व दीर्घपुष्पक ये तीन नाम दूसरे महुआ के हैं—यह कफ व वायु को हरता हुआ कसैला होकर घावों पै अंकुरों को लाता है व इसका फूल मीठा, वलकारी, ठण्ढा व भारी होकर धातु को पुष्ट करता है तथा इसका फल भी ठण्ढा, भारी व मीठा होकर वीर्य को उपजाता हुआ वातपित्त को जीतता है व हृदय को हित पहुँचाता हुआ प्यास, रक्त, दाह, दमा, क्षत व क्षयी को विनाशता है॥

अब कटहल के नाम व गुण कहते हैं।

पनस, कण्टकिफल, श्वासहा और गर्भकण्टक ये चार नाम कटहल के हैं—यह पकाहुआ ठण्ढा व चिकना होकर पित्तवायु को हरता है तथा बलदायक व वीर्यदायक होकर रक्तपित्त, क्षत व क्षयी को नाशता है और कच्चा विष्टम्भी होकर वायु को उपजाता हुआ कसैला व हलका बना रहता है॥

अब बड़हल के नाम व गुण कहते हैं।

लकुच, क्षुद्रपनस, निकुच और ग्रन्थिमत्फल ये चार नाम बड़हल के हैं—यह भारी, विष्टम्भी, मीठा व खट्टा

होकर रक्तपित्त व कफ को करता हुआ वायु को हरता है तथा गरम होकर वीर्य और अग्नि को विनाशता है॥

अब ताड़ के नाम व गुण कहते हैं।

ताल, ध्वज, दुवारोह, तृणराज और महाद्रुम ये पाँच नाम ताड़ के हैं--यह ठण्ढा होकर वात, पित्त व घाव को जीतता हुआ मद व वीर्य को करता है व इसका फल ठण्ढा, बलकारी, चिकना, स्वादिल, रसवाला, भारी व विष्टम्भी होकर वात, पित्त, रक्त, क्षत और दाह को नाशता है व इसका बीज मूत्रको करता, पुरुषार्थ को बढ़ाता व वातपित्त को हरता हुआ ठण्ढा रहता है॥

अब खर्बूज़ा के नाम व गुण कहते हैं।

खर्बूज, फलराज, अमृताह्व और दशांगुल ये चार नाम खर्बूज़ाके हैं--यह मूत्रकारी, बलकारी, कोष्ठशुद्धिकारी, भारी, चिकना, मीठा व ठण्ढा होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ पित्तवात को हरता है और सब तरह के खर्बूज़ों में से जो खट्टा व मीठा व रस से खारा होता है वह रक्त-पित्त और मूत्रकृच्छ्र को अवश्यही विनाशता है॥

अब सेब के नाम व गुण कहते हैं।

मुष्टिप्रमाण, बदर, सेव, सीवफल और सितिका-फल ये पाँच नाम सेबके हैं तथा अम्भःफल और मह-त्सिञ्चितिकाफल ये दो नाम दूसरे सेब के हैं--यह ठण्ढा, भिरानेवाला, चिकना, मूत्रकारी व स्वादिल होकर त्वग्दाह, अन्तर्दाह व पित्तसे उपजे हृत्कम्प, सञ्चितमल, ज्वर और विष को विनाशता है तथा वातपित्तहारी व भारी होकर धातु को पुष्ट करता हुआ कफको उपजाता है

व स्त्रीरमण में हितदायक व मीठा होकर पाक व रस में ठण्ढा रहता है ॥

अब अमृतफल (नासपाती) के नाम व गुण कहते हैं।

अमृताह्व, रुचिफल, लघुबिल्व और फलाकृति ये चार नाम अमृतफल के हैं–यह गरम, वातहारी, मीठा व खट्टा होकर रुचि और वीर्य को करता है ॥

अब बादाम के नाम व गुण कहते हैं।

बादाम, सुफस, वातवैरि और नेत्रोपम ये चार नाम बादाम के हैं–यह गरम, अत्यन्त चिकना व वातनाशक होकर बल और वीर्य को करता है ॥

अब पिस्ता के नाम व गुण कहते हैं।

निकोचक, चारुफल, अङ्कोट, गलकोजक, पित्त, मुकुलक और दन्तीफलसमाकृति ये सात नाम पिस्ता के हैं–यह भारी, चिकना व स्त्रीरमण में गुणदायक, गरम व मीठा होकर धातु को बढ़ाता, रक्तको बदलता व वात को नाशता हुआ कफ व पित्त को करता है और येही गुण चिलगोजा में भी रहते हैं परन्तु विशेषता से भारी होकर देर में जरता है ॥

अब आल्लूक (आड़ू) के नाम व गुण कहते हैं।

आल्लूक अल्लू, भल्लूक भल्लू और रक्तफल ये पाँच नाम आड़ू के हैं–यह रस में ठण्ढा, मीठा व खट्टा होकर वात और पित्त को हरता है ॥

अब अञ्जीर के नाम व गुण कहते हैं।

अञ्जीर, मञ्जल और काकोदुम्बरिकाफल ये तीन

नाम अञ्जीर के हैं-यह ठण्ढा, मीठा व भारी होकर रक्तपित्त व वात को जीतता है और इससे भिन्नगुणों वाला छोटा अञ्जीर जानना चाहिये ॥

अब अखरोट के नाम व गुण कहते हैं।

अक्षोटक, वैधृतफल, कन्दलाभ और पृथुच्छद ये चार नाम अखरोट के हैं-यह मीठा, बलकारी, भारी व गरम होकर वायु को हरता हुआ दस्तावर होता है ॥

अब पालेवत के नाम व गुण कहते हैं।

पालेवत, सितपुष्प और तिन्दुकफल ये तीन नाम पालेवत के हैं तथा मानवक व महापालेवत ये दो नाम महापालेवत के हैं-यह, ठण्ढा, मीठा, भारी व गरम होकर अग्नि और वायु को जीतता है ऐसेही महापालेवत हृदय को बल देता हुआ वाञ्छित व खट्टा होकर तृषा को विनाशता है ॥

अब सहतूत के नाम व गुण कहते हैं।

तूत, तूद, ब्रह्मघोष, ब्राह्मण्य और ब्रह्मदारु ये पाँच नाम सहतूत के हैं-यह भारी, ठण्ढा व पकाहुआ मीठा होकर पित्त और वायु को विनाशता है ॥

अब गंगेरुवा के नाम व गुण कहते हैं।

गङ्गेरुक, कर्कटक, कारक और मृगलिण्डक ये चार नाम गंगेरुवा के हैं तथा तोदन, क्रन्दन और मृगविट्-सदृश ये तीन नाम दूसरे गंगेरुवा के हैं-यह दस्तावर व पकाहुआ भारी होकर वातरक्त को जीतता है तथा तोदननामक दूसरा ग्राही व मीठा होकर वातरक्त को हरताहुआ हलका रहता है ॥

अब तुम्बरा के नाम व गुण कहते हैं।

तुम्बरा और टिंत्रिक ये दो नाम तुम्बरा के हैं—यह कच्चा खट्टा व गरम होकर पित्त को उपजाता है व समुद्र में उपजे केसर के समान शोभावाले व कालायन फल तथा पत्तों के समान इसका वृक्ष जानना चाहिये इसमें भिलावें के समान गुण रहते हैं और यह कफ को जीतता है तथा पाक में कड़ुवा व गरम होकर घाव व प्रमेहों को करता है॥

अब बिजौरा के नाम व गुण कहते हैं।

बीजपूर, मातुलुङ्ग, कुशरी और फलपूरक ये चार नाम बिजौरा के हैं और इसका फल रुचिकारी व रस में खट्टा होकर मन्दाग्नि को जगाता हुआ हलका रहता है तथा रक्तपित्त को करता व बिगड़े कण्ठ को सुधारता हुआ जीभ व हृदय को शोधता है ऐसेही इसका गूदा धातुवर्धक, ठण्ढा व भारी होकर पित्त व वायु को जीतता है व इसकी केसर भी हलकी व मलबन्धनी होकर शूल, गोला और उदररोग को विनाशती है व इसका बीज गरम होकर क्रिमि, कफ व वायु को जीतता तथा गर्भ को देताहुआ भारी रहता है व इसका फूल वातकारी, मलबन्धक, रक्तपित्तहारी व हलका है तथा शूल, अजीर्ण, अफरा, कफ, वायु, अरुचि, दमा और खाँसी में इसका रस उत्तम कहाता है॥

अब मधुककड़ी के नाम व गुण कहते हैं।

मधुकर्कटिका, स्वादु, लुङ्गी, घण्टालिका और घटा ये पाँच नाम मधुककड़ी के हैं—यह ठण्ढी व लाल होकर

पित्त को हरतीहुई भारी रहती है तथा इसकी जड़ हैज़ा व कर्णसोजा को विनाशती है ॥

अब नारङ्गी के नाम व गुण कहते हैं ।

नारङ्गी, नागरङ्ग, गोरक्ष और योगसागर ये चार नाम नारङ्गी के हैं—यह खट्टी व बहुत गरम होकर वात-पित्त को हरती हुई दस्तावर व मीठी कहाती है तथा खट्टी नारङ्गी हृदय को बल देती व देर में जरती हुई वात को विनाशती है ॥

अब जम्बीरीनींबू के नाम व गुण कहते हैं ।

जम्बीरक, दन्तशठ, जम्भीर और जम्भल ये चार नाम जम्बीरी नींबू के हैं—यह खट्टा, शूलनाशक, भारी व गरम होकर कफवात को जीतता हुआ मुख का विरस-पना, हृत्पीड़ा, मन्दाग्नि और क्रिमिरोग को दूर करता है॥

अब अम्लवेतस के नाम व गुण कहते हैं ।

अम्ल, अम्लवेतस, चुक्र, वेतस और शरभेदक ये पाँच नाम अम्लवेतस के हैं—यह बहुत गरम, भेदन व हलका होकर मन्दाग्नि को जगाता हुआ हृद्रोग, शूल और गोला को विनाशता है तथा भारी होकर पित्त, तृषा और कफ को दूषित करता है ॥

अब साराम्ल के नाम व गुण कहते हैं ।

साराम्लक, सारगुल, रसाल और सारपादप ये चार नाम साराम्ल के हैं—यह अम्ल वातनाशक, भारी होकर पित्त व कफ को विनाशता है ॥

अब नींबू व राजनींबू के नाम व गुण कहते हैं ।

निम्बूक और निम्बुक ये दो नाम नींबू के हैं तथा

राजनिम्बूक यह नाम राजनींबूका है—यह खट्टा, वातनाशक व पाचक होकर मन्दाग्नि को जगाता हुआ हलका रहता है तथा राजनींबू मीठा व भारी होकर पित्तवायु को विनाशता है॥

अब कमरख के नाम व गुण कहते हैं।

कर्मरङ्ग, नागफल, भव्य और पिच्छिलबीजक ये चार नाम कमरख के हैं—यह ठण्ढा, क़ाबिज़, मीठा और खट्टा होकर कफपित्त को दूर करता है॥

अब इमली के नाम व गुण कहते हैं।

अम्लिका, चुक्रिका, चिञ्चा, तिन्तिडी और शुक्तिचन्द्रिका ये पाँच नाम इमली के हैं—यह कच्ची भारी होकर वायु को हरती हुई पित्त, कफ और रक्त को जीतती है तथा पकी हुई इमली भारी व रुचिदायक होकर अग्नि व बस्तिको शोधती है और सूखी इमली हृदय को बल देती व परिश्रम, भ्रम, प्यास और ग्लानि को हरती हुई हलकी रहती है॥

अब तिन्तिडीक के नाम व गुण कहते हैं।

तिन्तिडीक, वृक्षाम्ल, अम्लशाक और अम्लपादप ये चार नाम तिन्तिडीक के हैं—यह कच्चा वातनाशक व गरम होकर भारी रहता है तथा पकाहुआ हलका व क़ाबिज़ होकर ग्रहणी, कफ व वायु को दूर करता है॥

अब करोंदा के नाम व गुण कहते हैं।

करमर्दी, सुषेणा और कृष्णफला ये तीन नाम करोंदा के हैं—यह भारी, गरम व खट्टा होकर रक्तपित्त व कफ को

देता है तथा पकाहुआ मीठा, रुचिकारी व हलका होकर पित्त व वायु को विनाशता है॥

अब कैथा के नाम व गुण कहते हैं।

कपित्थक, दधिफल, कपित्थ और सुरभिच्छद ये चार नाम कैथा के हैं—यह मलबन्धक व हलका होकर त्रिदोष को दूर करता है तथा पका हुआ भारी होकर प्यास व हिचकी को दमन करता हुआ वातपित्त को जीतता है तथा मीठा, खट्टा व कसैला होकर कण्ठ को शोधता हुआ मल को बाँधता व विलम्ब में जरता है॥

अब कैथपत्री के नाम व गुण कहते हैं।

कपित्थपत्री, फणिजा, कुलजा और जीवपत्रिका ये चार नाम कैथपत्री के हैं—यह तीखी व गरम होकर कफ, प्रमेह व विष को विनाशती है॥

अब अम्बाड़े के नाम व गुण कहते हैं।

आम्रातक, आम्रवट, फली, मोद, फल और कपि ये छः नाम अम्बाड़े के हैं—यह कच्चा वातनाशक, भारी व गरम होकर रुचि को करताहुआ दस्तावर होता है तथा पकाहुआ मीठा व ठण्ढा होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ वातपित्त, क्षयी और रक्तरोग को जीतता है॥

अब राजाम्र के नाम व गुण कहते हैं।

राजाम्राह्व, काम्रनाम, कामाह्व और राजपुत्रक ये चार नाम राजाम्र के हैं—यह मीठा व ठण्ढा होकर मल को बाँधताहुआ पित्त व वायु को विनाशता है॥

अब पञ्चाम्ल के नाम व गुण कहते हैं।

तिन्तिडीक, अनार, इमली और कैथा इन्होंके मिलाने

से चतुरम्ल कहाता है और अम्लवेतस, तिन्तिडी, अनार, बेर और बिजौरा के मिलाने से वैद्योंने पञ्चाम्ल कहा है॥

अब कोशाम्र के नाम व गुण कहते हैं।

कोशाम्रक, घनस्कन्ध, जन्तुवृक्ष और कोशक ये चार नाम कोशाम्र के हैं—यह कोढ़, सूजन, रक्तपित्त घाव और कफ को विनाशता है व इसका फल मलबन्धक, वातनाशक, खट्टा, गरम व भारी होकर पित्त को उपजाता है तथा पका हुआ फल मन्दाग्नि को जगाता व रुचि को करताहुआ हलका व गरम होकर कफवात को जीतता है व इसकी गुठली पित्त व वात को हरती हुई मीठी व बलदायक होकर मन्दाग्नि को जगाती है॥

अब पूगीफल (सुपारी) के नाम व गुण कहते हैं।

क्रमूक, क्रमुक, पूग और पूगीफल ये चार नाम सुपारी के हैं—यह भारी, ठण्ढी, रूखी कसैली होकर कफ-पित्त को दूर करती तथा मोहाती मन्दाग्नि को जगाती व रुचि को उपजाती हुई मुखके विरम्पने को विनाशती है और गीली सुपारी भारी होकर कफ को करती हुई अग्नि और दृष्टि को हरती है तथा पकी सुपारी त्रिदोष को हरती है व सूखी सुपारी वायु को उपजाती है व कड़ी सपारी बहुत अच्छी होती है और अनेकानेक सुपारियाँ हैं जोकि ठण्ढी बनी रहती हैं तथा पाक और देशवि-भागसे चिकनी सुपारी समस्त दोषों को हरती हैं व इसका फूल क्रिमियों को करता हुआ कसैला, मीठा व भारी रहता है तथा चिकनी सुपारी त्रिदोषों को हरती

हुई बल को करती है और येही गुण चिकनी सुपारी के भेदों में भी कहना चाहिये ॥

अब नागरपान के नाम व गुण कहते हैं।

ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागिनी, नागवल्लरी और ताम्बूल ये पाँच नाम नागरपान के हैं—यह हृदयको बल देता व रुचि को उपजाता हुआ तीखा, गरम व कसैला होकर फैलनेवाला होता है तथा कड़ुवा, खारा व चर्फरा होकर काम और रक्तपित्तको करता हुआ हलका व बलकारी होता है व कफ, मुखदौर्गन्ध्य, मल, वात और परिश्रम को विनाशता है इसमें चूना कफ और वायु को हरता है व कत्था कफ और पित्त को जीतता है व संयोग से दोषोंको हरताहुआ मनको प्रसन्न करताहै तथा मुखवैरस्य को नाशता हुआ सुगन्धि, कान्ति और शोभा को करता है ॥

अब लवली (हरफारेवड़ी) के नाम व गुण कहते हैं।

घनस्निग्धा, महाप्रांशु, प्रपुन्नाट, समच्छदा, सुगन्धमूला, लवली, पाण्डु और कोमलवल्कली ये आठनाम हरफारेवड़ी के हैं तथा श्याम और ज्योत्स्नाफल ये दो नाम हरफारेवड़ी के फल के हैं—यह पथरी, बवासीर, वात व पित्तको हरता है तथा हलका व विशद होकर हृदय को बल देता व रुचि को उपजाता हुआ पित्तकफ को विनाशता है और वृक्षकेही समान सब फलों में गुण रहते

---

१ ताम्बूलं स्वर्णपर्णं क्रमुकफलयुतं सात्रमप्यगृहीतं कर्पूरेणाण्डजाभ्यां कृतखदिरवटीसारभेणातिचूर्णम् । चूर्णं प्रोधानुजातं शिशिरकिरणवत्प्रोज्ज्वलं नैष साकं दत्त्वा निधाय पूर्वं तदनु नरपतिर्भक्षयेदाप्तदत्तम् ॥ १ ॥

हैं तथा गिरी में भी वेही गुण कहने चाहियें और जाड़ा, अग्नि, दुर्वात, सर्प व कीड़ादिकों से दूषित व अकाल में उपजे व पाक के उल्लङ्घन करनेवाले व बुरीभूमि में उपजे हुए फल को नहीं खावे और बेलफल के विना कच्चाफल विशेष दोषों को हरता है व जिस २ फलका जैसा वीर्य होता है उसी वीर्य के समान मज्जा (गिरी) को भी कहै तथा रोगों व कीड़ों से युत व पाक से अतीत व विना समय उपजे व तत्काल पकेहुए फलको त्यागदेवे ॥

दो०। नृपमुखतिलककटारमल, मदनमहिप जो कीन।
ताही मदनविनोद में, षष्ठवर्ग कहि दीन ॥१॥

इति श्रीमदनपालविरचिते निघण्टौ शक्तिधरनिर्मितायां भाषाव्याख्यायां द्राक्षादिः षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

दो०। कहव सातवें वर्ग महँ, कूष्माण्डादिकनाम।
ऐसेही उन सवन के, वर्णत हौं गुणग्राम ॥१॥
सागन महँ जीवन्तिवर, सरसों साग दुखार।
पत्र पुष्प अरु कन्द फल, हैं ये चार प्रकार ॥२॥
पत्र पुष्प अरु नाल फल, कन्द सस्वेदज जान।
सागनके रस[१] भेद हैं, गुरू यथोत्तर मान ॥३॥

अब सागों में पहिले कूष्माण्ड (कुम्हड़ा) के नाम व गुण कहतेहैं।

कूष्माण्डकी, पुष्पफली, पचनालि, चतुर्विध, कर्कारु, अफला, कन्दी, आरु और राजकर्कटी ये नव नाम कुम्हड़ा (कोहड़ा) के हैं—यह धातुवर्धक, ठण्ढा व भारी होकर पित्तरक्त व वात को जीतता व बल को करताहुआ

१ सर्वशाकेषु जीवन्ती श्रेष्ठा निन्द्यस्तु सर्षपः। शाकं चतुर्धा तत्पुष्पं छदकन्दफलैःस्मृतम् ॥ १ ॥

पित्तको हरता है व मध्यम पकाहुआ ठण्ढा होकर कफ को करता है तथा अत्यन्त पका व क्षारसमेत कुम्हड़ा ठण्ढा नहीं होता है व हलका होकर मन्दाग्नि को जगाता व बस्ति को शोधताहुआ वीर्यरोग और त्रिदोष को विनाशता है और यह बहुत मीठा न होकर वात, पथरी व कफ को दूर करता है व इसका गूदा पित्त को विनाशता व वीर्य को बढ़ाता हुआ मीठा होकर बस्ति को शोधता है॥

अब ककड़ी के नाम व गुण कहते हैं।

कर्कटी, लोमशी, व्यालपत्रा, एर्वारु और बृहत्फला ये पाँच नाम ककड़ी के हैं—यह ठण्ढी व रूखी होकर मल को बाँधतीहुई मीठी व भारी रहती है॥

अब कलिङ्ग (तरबूज़) के नाम व गुण कहते हैं।

कालिङ्ग, कृष्णबीज, कालिङ्ग और फलवर्तुल ये चार नाम तरबूज़ के हैं—यह मल को बाँधता व नेत्ररोग तथा पित्तरोग को हरताहुआ ठण्ढा व भारी रहता है और पका हुआ तरबूज़ खारसहित गरम होकर पित्त को करता व कफ और वायु को जीतता है॥

अब मीठी तूँबी के नाम व गुण कहते हैं।

तुम्बी, मिष्टा, महातुम्बी, राजा, अलाबु और अलाबुनी ये छः नाम मीठी तूँबी के हैं—यह मीठी तुम्बी का फल पुरुषार्थ को बढ़ाता व कफ और पित्त को हरताहुआ भारी रहता है॥

अब कड़ुवी तूँबी के नाम व गुण कहते हैं।

कटुतुम्बी, मिष्टफली, राजपुत्री और दुर्गिधनी ये

चार नाम कडुवी तूँबी के हैं—यह ठण्ढी होकर हृदय को बल देती हुई पित्त खाँसी और विष को विनाशती है ॥

अब खीरा के नाम व गुण कहते हैं।

त्रपुष, कण्टकिलता, सुधावास, कटु, छर्दिपर्णी, मूत्रफला, पित्तक और हस्तिपर्णिनी ये आठ नाम खीरा के हैं—यह मूत्र को उपजाता हुआ ठण्ढा व रूखा होकर पित्त, पथरी और मूत्रकृच्छ्र को विनाशता है तथा पका हुआ खीरा गरम व खट्टा होकर पित्त को उपजाता हुआ कफ और वायु को जीतता है ॥

अब गोरखककड़ी के नाम व गुण कहते हैं।

चिर्भट, धेनुदुग्ध और गोरक्षकर्कटी ये तीन नाम गोरखककड़ी के हैं—यह मीठी, रूखी और भारी होकर पित्त और कफ को विनाशती है तथा ठण्ढी व विष्टम्भी होकर मल को बाँधती है और पकी हुई गोरखककड़ी गरम होकर पित्त को हरती है ॥

अब बालुक के नाम व गुण कहते हैं।

बालुक, काण्डक और बालु ये तीन नाम बालुक के हैं—यह ठण्ढा, मीठा व भारी होकर रक्तपित्त को हरता हुआ भेदी व हलका रहता है तथा पका हुआ अग्नि को करता है ॥

अब शीर्णवृन्त (छोटा तरबूज) के नाम व गुण कहते हैं।

शीर्णवृन्त, चित्रफल, विचित्र और पीतवर्णक ये चार नाम छोटे तरबूज या सेब के हैं—यह हलका, मीठा, भेदी व गरम होकर अग्नि और पित्त को करता है ॥

अब तोरई के नाम व गुण कहते हैं।

कोशातकी, शतच्छिद्रा, जालिनी, कृतवेधसा, मृदङ्ग-फलका, ज्वेरा, घेंटाकी और कर्कशच्छदा ये आठ नाम तोरई के हैं—यह हलकी, कडुवी व रूखी होकर आमाशय को शोधती हुई सूजन, पाण्डु, उदररोग, तापतिल्ली, कोढ़, बवासीर, कफ और पित्त को जीतती है व इसका फल भेदी, ठण्ढा व हलका होकर प्रमेह और त्रिदोषों को जीतता है॥

अब घियातोरई के नाम व गुण कहते हैं।

राजकोशातकी, मिष्टा, महाजालि और सपीतका ये चार नाम घियातोरई के हैं—यह ठण्ढी होकर ज्वर को विनाशती हुई कफ और वायु को उपजाती है॥

अब बड़ी तोरई के नाम व गुण कहते हैं।

महाकोशातकी, हस्तिघोषा और महाफला ये तीन नाम बड़ी तोरई के हैं—यह चिकनी व मीठी होकर पित्त और वायु को विनाशती है॥

अब वृन्ताक (बैंगन) के नाम व गुण कहते हैं।

वृन्ताकी, वार्तिकी, वृत्ता, भण्टाकी और भण्टिका ये पाँच नाम बैंगन के हैं—यह मीठा, तीखा, गरम व पाक में कड़वा होकर पित्त को पैदा करता है तथा कफ व वायु को हरता व हृदय को बल पहुँचाता व मन्दाग्नि को जगाता हुआ वीर्य को उपजाता है तथा हलका होकर ज्वर, अरुचि और खाँसी को विनाशता है और पका हुआ भाँटा पित्त को करताहुआ भारी रहता है॥

अब सफ़ेद बैंगन के नाम व गुण कहते हैं।

श्वेतवार्ताकु और कुक्कुटाण्डफलोपम ये दो नाम सफ़ेद भाँटा के हैं—इसमें पूर्वोक्त बैंगन से अल्प गुण रहते हैं और इसको वैद्यों ने बवासीरवालों के लिये हितदायक कहा है॥

अब कुंदरू के नाम व गुण कहते हैं।

बिम्बी, रक्तफला, गोला, तुण्डी और दन्तच्छदोपमा ये पाँच नाम कुंदरू के हैं—यह छर्दिदायक होकर रक्तपित्त, रक्तरोग और कामला को विनाशता है व इसका फल ठण्ढा, मीठा व भारी होकर पित्तरक्त व दाह को जीतता है तथा विष्टम्भी व भेदी होकर वायुमलमूत्रावरोध और अफरा को करता है॥

अब करेला के नाम व गुण कहते हैं।

कारवेल्ल, कटिल्ल, उग्रकाण्ड, सुकाण्डक, कारवल्ली, वारिवल्ली और बृहद्वल्ली ये सात नाम करेला के हैं—यह ठण्ढा, भेदी, हलका व तीखा होकर वायु को नहीं उपजाता है तथा पित्तरक्त, कामला, पाण्डु, कफ, प्रमेह और क्रिमियों को जीतता है॥

अब ककोड़ा (खेखसा) के नाम व गुण कहते हैं।

कर्कोटकी, पीतपुष्पा और महाजालिनि ये तीन नाम ककोड़ा के हैं—यह मल को हरताहुआ कोढ़, थुकथुकी, अरुचि, दमा, खाँसी और ज्वर को विनाशता है ऐसेही ककोड़ाका फूल सेहुवाँ और अरुचि को दूर करता है॥

अब बाँझककोड़ा के नाम व गुण कहते हैं।

बन्ध्याकर्कोटकी, देवी, नागारि और विषकण्टका ये

चार नाम बाँझककोड़ा के हैं–यह तीखी होकर विष, विसर्प और खाँसी को नाशती है ॥

अब डोडिका (करेरुआ) के नाम व गुण कहते हैं ।

डोडिका, विषमुष्टि, विषयष्टि और समुष्टिका ये चार नाम करेरुआ के हैं–यह कफ, पित्त, बवासीर, क्रिमि-रोग, गोला और विष को विनाशती हैं ॥

अब डिण्डिस (ढेंडस) के नाम व गुण कहते हैं ।

डिण्डिस, रोमसफल, तिन्दिस और मुनिनिर्मित ये चार नाम ढेंडस के हैं–यह वात को उपजाता व रूखा होकर मूत्र को देता हुआ पथरी को भेदता है ॥

अब सुआरासेम के नाम व गुण कहते हैं ।

कोलशिम्बी, कृष्णफला, षड्रसी और करपादिका ये चार नाम सुआरासेम के हैं–यह वायु को विनाशती हुई भारी होकर आम, कफ और पित्त को करती है ॥

अब सेम के नाम व गुण कहते हैं ।

शिम्बी, कुशिम्बी, कुत्सा, अस्त्रशिम्बी और पुत्रकशि-म्बिका ये पाँच नाम सेम के हैं–यह ठण्ढी, भारी व बल-दायक होकर कफको उपजातीहुई वायु को जीतती है ॥

अब बथुवा के नाम व गुण कहते हैं ।

वास्तुक, शाकपत्र, कम्बीर और प्रसादक ये चार नाम बथुवा के हैं–यह पाचक, रोचक व हलका होकर वीर्य व बल को देताहुआ दस्तावर होता है तथा तिल्लीरोग, रक्तपित्त, बवासीर, क्रिमिरोग औरक्षयीको विनाशता है ॥

अब जीवन्तक (जीवाख्यशाक) के नाम व गुण कहते हैं ।

जीवन्तक, शाकवीर, रक्तनाल और प्रशालक ये

चार नाम जीवन्तक (जीवाख्यशाक) के हैं—यह वातहारी, खारी व पाक में मीठा होकर त्रिदोषों को विनाशता है ॥

अब चिल्लीशाक के नाम व गुण कहते हैं ।

चिल्ली, बृहद्दला, रक्ता, चिल्लिका और गौडवास्तुका ये पाँच नाम चिल्लीशाक के हैं—यह फैलनेवाली, हलकी व ठण्ढी होकर रुचि को उपजाती हुई बुद्धि को बढ़ाती है तथा मन्दाग्नि को जगाती व बल को देतीहुई रूखी होकर तापतिल्ली, रक्तरोग, त्रिदोष और क्रिमियों को हरती है ॥

अब कालशाक (नारीशाक) के नाम व गुण कहते हैं ।

कालशाक, कालिका, चुञ्चुका और चुञ्चुक ये चार नाम नारीशाक के हैं—यह दस्तावर व रोचक होकर वात को उपजाता हुआ कफ और सूजन को जीतता है तथा पितरों के कर्म में उत्तम व पवित्र होकर आयु को बढ़ाता है और पित्त को अत्यन्त कुपित नहीं करताहुआ ठण्ढा, फैलनेवाला, रूखा व मीठा होकर त्रिदोष को हरता है ॥

अब चौलाई के नाम व गुण कहते हैं ।

तण्डुलीय, मेघनाद, काण्डीर, तण्डुलीयक, विषघ्न, क्वर, मारिष और मार्षिक ये आठ नाम चौलाई के हैं—यह हलकी, ठण्ढी व रूखी होकर पित्त, कफ और रक्त को जीतती है तथा मूत्र और मलको उपजाती, रुचिको देती व मन्दाग्नि को जगातीहुई रक्तपित्त को विनाशती है ॥

अब फोग के नाम व गुण कहते हैं ।

फोग, मरुद्भव, शृङ्गी, सूक्ष्मपुष्प और शशादन ये

पाँच नाम फोग के हैं—यह ग्राही व ठण्ढा होकर रक्त-पित्त और कफ को विनाशता है॥

अब सफ़ेद मरसा व लाल मरसा के नाम व गुण कहते हैं।

मारिष, बाष्पक और मार्ष ये तीन नाम मरसा के हैं—यह सफ़ेद और लाल होकर दस्तावर कहाता है तथा ठण्ढा, भारी और भेदी होकर त्रिदोषों को हरता है॥

अब परवल के नाम व गुण कहते हैं।

पटोल, पाण्डुक, जातीकल्क, कर्कशच्छद, राजीफल, पाण्डुफल, राजीमान और अमृतफल ये आठ नाम परवल के हैं तथा तिक्तोत्तमा, बीजगर्भा, राज़पटोलिका, ज्योत्सी, पटोलिका, जाली, नादेयी और भूमिजम्बुका ये आठनामदूसरे परवलकेहैं—यह पाचक व हृदयके लिये बलदायक होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता व हलका रहता हुआ मन्दाग्निको जगाता है तथा चिकना व गरम होकर वातरक्त, ज्वर, त्रिदोष और क्रिमियोंको विनाशता है व इसका पत्ता पित्तको हरताहुआ ठण्ढा रहता है व इस की बेल कफ को हरती है व इसकी जड़ दस्तावर कहाती है और इसका फल त्रिदोषनाशक वैद्यों ने कहा है॥

अब चञ्चुड (चिचेंड़ा) के नाम व गुण कहते हैं।

चञ्चुड, वेश्मकूल, श्वेतराजी और बृहत्फला ये चार नाम चिचेंड़ा के हैं—इसमें परवल की अपेक्षा अल्पगुण रहते हैं परन्तु विशेषता से शोषक व हित कहाता है॥

अब पालक के नाम व गुण कहते हैं।

पालक्या, वास्तुकाकारा, क्षुरिका और चीरितच्छदा ये चार नाम पालकके हैं—यह वातको उपजातीहुई ठण्ढी

व भेदनी होकर कफ को करती है तथा भारी होकर क़ब्ज़ता को लातीहुई मद, दमा, रक्तपित्त और कफको विनाशती है ॥

अब पोइ के नाम व गुण कहते हैं।

पोतकी, पोतका, मत्स्या, काली और सुरङ्गिका ये पाँच नाम पोइके हैं—यह ठण्ढी व चिकनी होकर कफको उपजाती हुई वातापित्त को जीतती है तथा कण्ठ को बिगाड़ती हुई पिच्छिल होकर निद्रा व वीर्य को देती व रक्तपित्त को विनाशती है और पातक्या, पोदिका व दिव्या ये तीन नाम दूसरी पोइ के हैं—यह वीर्यदायक होकर रक्तपित्त को जीतती है ॥

अब लोनियाँ के नाम व गुण कहते हैं।

लोणिका, बृहच्छोटी, कुटिर, कुटिञ्जर, दन्दुर, गुडीरक, पिण्डी और पिण्डीतक ये आठ नाम लोनियाँके हैं—यह रूखी, भारी, ठण्ढी, दस्तावर, क़ाबिज़ और सलोनी होकर दोषों को उपजाती है तथा पाक में मीठी रहती है और येही गुण कुटीर में भी रहते हैं—यह हृदय के रोगों को हरती हुई भारी होकर वायु को उपजाती है तथा दमा, खाँसी, कफ और विष को विनाशती है ॥

अब सुषेण (फञ्जी) के नाम व गुण कहते हैं।

सुषेण, स्वस्तिक, वलद, तिलपर्णिका और सुनिषण्ण ये पाँच नाम फञ्जी के हैं—यह ठण्ढी व मलबन्धिनी होकर प्रमेह व त्रिदोषों को हरती है तथा तिलपर्णी ठण्ढी व रुचिदायक होकर मल को बाँधतीहुई कफपित्त को जीतती है ॥

अब रुंटिया के नाम व गुण कहते हैं।

सूक्ष्मपत्र, तीक्ष्णशाक, धनुष्पुष्प, सुबोधक और चौरक ये पाँच नाम रुंटिया के हैं—यह कफ व वात को विनाशता हुआ बड़ा तीखा होकर अत्यन्त पित्त को नहीं उपज़ाता है॥

अब टुण्टुक के नाम व गुण कहते हैं।

टुण्टुक, विटप, रूक्ष, स्वरपत्र और अरण्डज ये पाँच नाम टुण्टुक के हैं—यह वातकारी रूखा व विष्टम्भी होकर कफ को विनाशता है॥

अब नसिया के नाम व गुण कहते हैं।

घनागमभवा, वल्लीप्रसिद्ध और बस्तिज ये तीन नाम नसिया के हैं—यह त्रिदोष को विनाशती है व इसका फूल मीठा होकर दस्तावर होता है व इसका फल दस्तावर होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता है और इसका कच्चा फल वाञ्छित होकर वायु को उपज़ाता है॥

अब कुरण्ड व नलवा के नाम व गुण कहते हैं।

शीतवार और कुरण्डी ये दो नाम कुरण्ड के हैं तथा नाडी और नलिका ये दो नाम नलवा के हैं—इन दोनों में से पहला दस्तावर व हलका होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता व सूजनको नाशता हुआ वात और पित्त को उपजाता है और दूसरा दस्तावर, हलका व ठण्ढा होकर पित्त को हरता हुआ कफ और वायु को उपजाता है॥

अब सरसों व कुसुम्भ के नाम व गुण कहते हैं।

सार्षप व सर्षपोद्भूत ये दो नाम सरसों के हैं तथा कौसुम्भ व कुंकुमोद्भव ये दो नाम कुसुम्भ के हैं—इन दोनों

में से पहला मलमूत्रावरोध को करता हुआ भारी व गरम होकर त्रिदोषों को करता है तथा दूसरा मीठा, रूखा व गरम होकर कफ को जीतता व पित्त को हरता हुआ हलका रहता है॥

अब चना व मटर शाक के नाम व गुण कहते हैं।

चणक और शाक ये दो नाम चना के शाक के हैं—यह देर में जरता हुआ कफ व वायु को हरता है तथा मटर का शाक भेदी व हलका होकर पित्त व कफ को जीतता है॥

अब चूकाशाक के नाम व गुण कहते हैं।

चांगेरी, आम्लिका, चुका, क्षुद्राम्लिका, चतुश्छदा ये पाँच नाम चूकाशाक के हैं—यह मन्दाग्नि को जगाता व रुचि को उपजाता हुआ हलका व गरम होकर कफ-वायु को जीतता है तथा पित्त को उपजाता हुआ संग्रहणी, ववासीर, कोढ़ और अतीसार को विनाशता है॥

अब कसौंदी (गाज़र) के नाम व गुण कहते हैं।

कासमर्द, कर्कश, गृञ्जन और अजगर ये चार नाम कसौंदी (गाजर) के हैं—यह हलकी होकर बिगड़े कण्ठ को सुधारती हुई खाँसी, त्रिदोष, विष और रक्त को विनाशती है तथा गाजर विशेष कड़ुवी, चर्फरी, तीखी व गरम होकर मन्दाग्नि को जगाती है और हलकी व मलबन्धिनी होकर रक्तपित्त, ववासीर, ग्रहणी, कफ और वायु को जीतती है॥

अब मूलक (मूली) के नाम व गुण कहते हैं।

मूलक, हस्तिदन्त, बालमूल और कफान्तक ये

चार नाम मूली के हैं—यह वायु को करती व रुचि को उपजाती हुई बिगड़े स्वर को सुधारती है तथा गरम पाचक व हलकी होकर त्रिदोष से उपजे श्वास, नेत्र-रोग, गलरोग व पीनस को विनाशती है तथा घृत में सिद्ध कीहुई मूलिका त्रिदोषों को हरती है व सूखी मूली सूजन को विनाशती हुई हलकी होकर त्रिदोषों को दूर करती है व इसका फूल कफपित्त को हरता है और इसका फल वायुकफ को विनाशता है ॥

अब करीर के नाम व गुण कहते हैं ।

करीरक, गूढपत्र, क्रकच और ग्रन्थिल ये चार नाम करीर के हैं—यह कड़ुवा, भेदी, तीखा और गरम होकर कफवात को जीतता है तथा घाव, सूजन, विष व बवासीर को विनाशता है व इसका फूल कफपित्त को जीतता है तथा फल ग्राही, कसैला, गरम व मीठा होकर कफ और पित्त को करता है ॥

अब सहींजना के नाम व गुण कहते हैं ।

शिग्रु, सोभाञ्जन, कृष्णगन्ध और बहुलच्छद ये चार नाम सहींजना के हैं तथा दूसरा लाल सहींजना होता है व तीसरा मधुशिग्रु और हरितच्छद इन नामोंवाला कहाता है व इसका बीज श्वेतमरिच कहा है—यह तीखा व गरम होकर आँखों को हित पहुँचाता है और सहीं-जना तीखा, हलका व ग्राही होकर अग्नि को देताहुआ कफवायु को जीतता है तथा गरम होकर विद्रधि, ताप-तिल्ली और घावों को विनाशता हुआ रक्तपित्त को करता है व मीठे सहींजना में भी ये पूर्वोक्त गुण रहते हैं

जो कि विशेषता से मन्दाग्नि को प्रकाशता हुआ दस्तावर होता है व इसका फूल हलका व ग्राही होकर वायु को उपजाता हुआ कफ और सूजन को जीतता है व इसका फलभी मल को बाँधता हुआ कसैला, गरम व मीठा होकर कफपित्त को हरता है॥

अब लहसन के नाम व गुण कहते हैं।

लशुन, उग्रगन्धी, यवनेष्ट, रसोनक, गृञ्जन, महाकन्द, जर्जर और दीर्घपत्रक ये आठ नाम लहसन के हैं—यह धातु को पुष्ट करता व पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ चिकना, गरम, पाचक और दस्तावर होकर टूटेहुए को जोड़ता है तथा बालों को बढ़ाताहुआ भारी होकर पित्त-रक्त व बुद्धि को देता है तथा रसायनरूप होकर कफ, दमा, खाँसी, गोला, ज्वर, अरुचि, सूजन, प्रमेह, बवासीर, कोढ़, शूल, वात और क्रिमियों को विनाशता है व इसका पत्ता मीठा होकर खारी होता है तथा इसका नाल मीठा होकर पित्त को उपजाता है॥

अब प्याज के नाम व गुण कहते हैं।

पलाण्डु, धवलाख्य, दुर्गन्ध और मुखदोषक ये चार नाम प्याज़ के हैं—इसमें लहसन के समान गुण होते हैं और कफ को करताहुआ अतीव पित्त को नहीं उपजाता है तथा उष्णता से रहित वा पाक में स्वादिल होकर केवल वायु और रसोंको जीतताहै और गाजर पित्तको उपजाती हुई मल को बाँधती है तथा तीखी होकर बवासीर को विनाशती है और गन्ध, आकृति व रसों से प्याज़ के समान होकर पतले नालवाली कहाती है॥

अब ज़िमींक़न्द के नाम व गुण कहते हैं।

सूरण, कन्दल, कन्द और गुदामयहर ये चार नाम पहले के हैं तथा वल्लकन्द व सुरेन्द्र ये दो नाम दूसरेके हैं और वन्य व चिन्नकन्दक ये दो नाम तीसरे ज़िमींक़न्द के हैं–यह दीपन, रूखा, कसैला, कड़ुवा, खाजकारी, विष्टम्भी, विशद व रुचिदायक होकर कफ व बवासीर को काटताहुआ हलका रहता है व इसका नाल रुचिकारी होकर कफवायु को हरताहुआ हलका होता है तथा बवासीरवालों को हित पहुँचाताहुआ कामाग्नि को प्रकाशता है तथा वन में उपजे ज़िमींक़न्द में भी ये ही गुण होते हैं वह "वज्रकन्द" कहाता है जो कि कफ को नाशताहुआ पित्तरक्त को करता है॥

अब हड़संहारी के नाम व गुण कहते हैं।

अस्थिशृङ्खलिका, वज्री, ग्रन्थिमान् और अस्थिसंहति ये चार नाम हड़संहारी के हैं–यह पुरुषार्थ को बढ़ाती व कफ को उपजातीहुई मीठी व ठण्ढी होकर हड्डी को जोड़ती है तथा बलदायक होकर पित्तरक्त व वायु को विनाशती है॥

अब वाराहीकन्द के नाम व गुण कहते हैं।

वाराही, मागधी, गृष्टि, वाराहीकन्द, सौकर और किटि ये छः नाम वाराहीकन्द के हैं–यह पित्त को उपजाता व बिगड़े वर्ण को सुधारता हुआ मीठा, तीखा व रसायन होकर आयु, वीर्य और अग्नि को करता है तथा प्रमेह, कफ, कुष्ठ और वायु को विनाशता है॥

अब मुसली के नाम व गुण कहते हैं।

मुसली, तालपत्री, खलिनी और तालमूलिका ये चार नाम मुसली के हैं-यह धातुओं को पुष्ट करतीहुई बलदायक व वीर्य में गरम होकर बवासीर व वायु को विनाशती है॥

अब कञ्चुक के नाम व गुण कहते हैं।

कञ्चुका, पीलुनी पीलु, फेलुका और दलशालिनी ये पाँच नाम कञ्चुक के हैं-यह वात को उपजाता, मल को बाँधता व मन्दाग्नि को जगाता हुआ कफपित्त को विनाशता है॥

अब भूच्छत्र (धरती का फूल) के नाम व गुण कहते हैं।

भूच्छत्र, पृथिवीकन्द, शिलीन्ध्र और बलक ये चार नाम भूच्छत्र के हैं-यह ठण्ढा, बलकारी, भारी व भेदी होकर त्रिदोषों को जीतता है॥

अब स्थूलकन्द व मानकन्द के नाम व गुण कहते हैं।

स्थूलकन्द व ग्रामकन्द ये दो नाम स्थूलकन्द के हैं तथा मानकन्द और महाच्छद ये दो नाम मानकन्द के हैं-इन दोनोंमें से पहला (स्थूलकन्द) भारी होकर कफ व वायु को उपजाता हुआ पित्त और सूजन को विनाशता है तथा दूसरा (मानकन्द) ठण्ढा व मीठा होकर पित्तरक्त को हरता हुआ भारी रहता है॥

अब कसेरु व सिंघाड़े के नाम व गुण कहते हैं।

कसेरुक, स्वल्पकन्द, बृहद्राज और कसेरुज ये चार नाम कसेरुक के हैं तथा शृङ्गाट, जलकन्द, त्रिकोण

और त्रिकटु ये चार नाम सिंघाड़े के हैं—इन दोनों में से कसेरु ठण्ढा, मीठा व भारी होकर पित्तरक्त और वायु को जीतता है तथा सिंघाड़ा मलको बाँधताहुआ पित्त, वात और कफ को देता है॥

अब पिण्डालु, मध्यालु, शङ्खालु, काष्ठालु व हस्तालु के नाम व गुण कहते हैं।

पिण्डालुक, वृष्यगन्ध ये दो नाम पिण्डालु के हैं व मध्यालु और रोमश ये दो नाम मध्यालु के हैं तथा शङ्खालु व चित्रसंकाश ये दो नाम शङ्खालु के हैं व काष्ठालु और स्वल्पकाष्ठक ये दो नाम काष्ठालुके हैं तथा हस्तालुक, महाकाष्ठ, रक्तकन्द और महाफल ये चार नाम हस्तालु के हैं—यह ठण्ढा व शीघ्रही विष्टम्भी होकर मीठा व दस्तावर कहाता है व पतला, मूत्रकारी, रूखा तथा देर में जरता हुआ रक्तपित्त को विनाशता है तथा कफ व वायु को करता व बल को देता व पुरुषार्थ को उपजाता हुआ स्तनों में दूध को बढ़ाता है और पिण्डालुक कफकारी, तीखा व गरम होकर दोषों को उपजाता हुआ भारी रहता है तथा मध्यालु पित्त को करताहुआ पाक में कड़ुवा होकर कफ को विनाशता है॥

अब केयूर (केलूट) के नाम व गुण कहते हैं।

केयूर, स्वल्पविटप, कन्दल और स्वादुकन्दल ये चार नाम केलूट के हैं—यह ठण्ढा व ग्राही होकर पित्त को उपजाता हुआ कफवायु को जीतता है तथा बहुत पुराने, विना समय उपजे, रूखे, चिकने, बबुरी भूमि में लगे, कठोर, कोमल व वातादिकों से दूषित हुए

सूखे समस्त शाकों को मूली के विना नहीं खावे॥

दो० । नृपमुखतिलककटारमल्ल, मदनमहिप जो कीन।
ताहीं मदनविनोद में, शैलवर्ग कहिदीन॥१॥

इति श्रीमदनपालविरचिते निघण्टौ श्रीशक्तिधरनिर्मितायां भाषाव्याख्यायां कूष्माण्डादिः सप्तमो वर्गः॥७॥

दो० । भाषब अष्टमवर्ग महँ, पानीयादिक नाम।
ऐसेही उन सबन के, वर्णत हौं गुणग्राम॥१॥

अब पानीय के नाम व गुण कहते हैं।

पानीय, जीवन, नीर, कीलाल, अमृत, जल, आप[1], अम्भस्, तोय, उदक, पाथस्, अम्बु, सलिल और पयस् ये चौदह नाम पानी के हैं—यह ठण्ढा होकर हृदय को बल देताहुआ पित्त, विष, भ्रम, दाह, अजीर्ण, परिश्रम, छर्दि, मद, मूर्च्छा और मदात्यय को विनाशता है तथा स्तिमितरोग, कोष्ठरोग, गलरोग, नवज्वर, ग्रहणी, पीनस, अफरा, हिचकी, गोला, विद्रधि, खाँसी, प्रमेह, अरुचि, दमा, पाण्डुरोग, वातरोग, पसलीशूल, स्नेहपान, सद्योवान्ति और जुलाब आदिकोंमें ठण्ढापानी अच्छा नहीं होता है तथा दिव्य, तुषारज, धार और करिहैम ये पानी के चार भेद कहे हैं इन्होंमें हलकेपने से दिव्य उत्तम कहाता है और दिव्य भी दो भांति का होता है गाङ्ग और सामुद्रज इन्होंमेंसे गङ्गाजीका जल उत्तम कहाता है और आश्विन के मास में बरसे हुए जल को

१ "आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलमिति" इस (अमरवाक्य) के प्रमाण से अप् शब्द नित्यही बहुवचनान्त है तथा "आपोभिर्मार्जनं कृत्वा" इस स्मृति के वचनसे आपस् शब्द सान्त नपुंसकलिङ्गभी जानना चाहिये॥

सोने चाँदी व मिट्टी के बर्तन में भररक्खे उसको ठण्ढा जानना चाहिये वह त्रिदोष व विष को विनाशता है और वही गङ्गाजी का जल पीने योग्य होकर सब दोषों को हरता है और इससे विपरीत समुद्र का ज न होता है वह खारसमेल नोनखरा पानीमिश्रित होकर वीर्य, दृष्टि और बल को विनाशता है तथा (गङ्गाजीका जल) रसायन होकर प्यास, मूर्च्छा, तन्द्रा दाह और ग्लानि को हरताहै और आकाश से बरसा हुआ पानी सौम्य व रसायन होकर महानिद्रा और त्रिदोष को जीतता है तथा दमा को उपजाता, आनन्दको देता व श्रमको हरताहुआ बड़ी बुद्धि को करता है और आकाश का जल भूमि में पड़कर भौम कहाता है और जब दिव्यपानी का अभाव होजावे तो गुण व दोषों को विचारकर भूमि का पानी लेना चाहिये तथा (कुएं का पानी) कफहारी व खारी होकर पित्त को उपजाता व मन्दाग्नि को जगाता हुआ भारी रहता है तथा (तालाब का पानी) वातल, मीठा व कसैला होकर पाक में कडुवा रहता है और (बावड़ी का पानी) पित्तकारी, खारी व कडुवा होकर वायु व कफ को विनाशता है तथा (झरने का पानी) भेदी व हृदय के लिये बलदायक होकर कफ को नाशता व मन्दाग्नि को जगाता हुआ हलका रहता है और (कुण्डका पानी) हलका होकर पित्त को नाशता व दाह को नहीं करता हुआ अग्नि को बहुतही प्रकाशता है तथा (चोवा का पानी) अग्निदायक, रूखा व मीठा होकर कफ को नहीं करता है और (नदी का पानी) दीपन, रूखा व वातल

होकर हलका व भेदी कहाता है तथा (बड़े सरोवर का पानी) मीठा व बलदायक होकर प्यास को नाशता हुआ कसैला व हलका रहता है व (जङ्गली सरोवर का पानी) मीठा, अग्निकारी व पाक में भारी होकर दोषों को उपजाता है और ऐसेही गुण (तलैया के पानी) में भी होते हैं परन्तु विशेषता से सब दोषों को करता है और आकाश से वरसे पानी की धारा भूमि पै नहीं पड़े किसी पात्र में लीजावे वह दिव्यजल सब दोषों को हरता है और (पहाड़ से झिरा पानी) भारी कहा है जो कि उज्ज्वल होकर कफ व वायु को विनाशता है (तथा बर्फ़ का पानी) बहुत भारी व ठण्ढा होकर पित्त को हरता हुआ वायु को बढ़ाता है और (चन्द्रकान्त पानी) रूखा व हलका होकर पित्त, विष और रक्तरोग को जीतता है तथा दिन में सूर्य की किरणों से तचे व रात्रि में चन्द्रमा की किरणों से युक्तहुए जल को "हंसोदक" जानना चाहिये—यह चिकना होकर त्रिदोषों को विनाशता है तथा अनभिष्यन्दी व दोषों से रहित व आकाशीय जल के समान होकर बलदायक, रसायन व बुद्धिवर्धक होताहुआ ठण्ढा, हलका व अमृत के तुल्य कहाता है और वर्षाऋतु में आकाश व भूमि का पानी उत्तम कहाता है तथा शरद्ऋतु में अगस्त्यतारा के उदय होने से विषरहित हुआ पानी स्वच्छ कहा जाता है और हेमन्त में सरोवर का पानी अथवा तालाब का पानी गुणदायक कहा है और वसन्त तथा ग्रीष्म में कुएं, बावड़ी और झरने का पानी उत्तम कहाजाता है

और वर्षाऋतु में चोवा का पानी उत्तम होकर कब्जता को नहीं करता है तथा शीघ्र बहनेवाली या निर्मल जल-वाली जो नदियाँ हैं उनको हलकी कहते हैं और मन्द बहनेवाली व मैली व सेवारयुक्त जो नदियाँ हैं वे भारी कहाती हैं तथा पत्थरों से आहतहुई जलवाली व हिमा-लय से उपजी नदियाँ पथ्य कही जाती हैं और गङ्गा, सतलज, सरयू व यमुनाआदि नदियाँ उत्तम गुणोंवाली कही हैं जोकि कुछेक पित्त को उपजाती हुई स्वच्छ व पवित्र होकर वायु तथा कफ को विनाशती हैं तथा मल-याचल से उपजी नदियाँ हलकी होकर शीघ्रही बहती हुई हित को करती हैं और कृतमाला व ताम्रपर्णी आदि नदियाँ निर्मल जलवाली कही हैं तथा स्थिरजलवाली व मलयाचल से उपजी जो नदियाँ हैं वे फ़ीलपाँव, अपची, सूजन, पैररोग, शिरोरोग, कण्ठरोग, गलरोग, गाँठ और क्रिमियों को पैदा करती हैं तथा पर्वतों से निकली वेणी व गोदावरी आदि नदियाँ विशेषता से कोढ़ को करती हुई वायु व कफ को विनाशती हैं और विन्ध्याचल से निकली शिप्रा व नर्मदा आदि नदियाँ पाण्डु व कोढ़ को देती हैं तथा पारियात्रपर्वत से निकली चम्मल आदि नदियाँ और जो तालाबसे उपजी हैं वे पथ्य होकर त्रिदोषों को विनाशती हुई बल को हरती हैं और जो कन्दराओं से निकली हैं वे कोढ़, मन्दाग्नि, कफ और फ़ीलपाँव को देती हैं व पूर्व तथा अवन्तिदेश की नदियाँ गुदा के रोगों को करती हैं तथा मरुदेश से निकली नदियाँ मीठी, बलदायक व हलकी

होकर अग्निको देती हैं तथा पश्चिम समुद्रमें गिरनेवाली गोमती व नर्मदा आदि नदियाँ पथ्य होकर वातरक्त व पित्त को नाशती तथा बलको देती हुई खुजली व कफ को हरती हैं तथा दक्षिणसमुद्र में गिरती हुई नदियाँ बल को करती व पित्त को हरती हुई कफ वायु को देती हैं तथा पूर्वसमुद्र में गिरती हुई नदियाँ मन्दगामिनी व भारी होकर कड़ेरूप से रहती हैं और पृथ्वी से उपजे समस्त जलों का ग्रहण करना प्रातःकाल उत्तम कहा है वहाँ भी जो पानी निर्मल होकर ठण्ठा हो वह बहुत उत्तम होता है व भोजन के आदि में पिया जल कृशता और मन्दाग्नि को उपजाता है तथा भोजन के मध्य में पिया हुआ जल मन्दाग्नि को जगाता हुआ बड़ा उत्तम कहाता है और भोजन के अन्त में पिया जल मोटाई व कफ को देता है और पानी से जीवन रहता है व समस्त जगत् जलरूप है इसलिये पण्डित लोग जल को कभी नहीं वर्जित करें व प्राणियों का प्राण पानी है क्योंकि यह विश्व जलमय है इसलिये अत्यन्त निषेध करने में भी पानी कहीं भी निवारित नहीं किया जाता है कहीं गरम, कहीं ठण्ढा व कहीं औटाया हुआ पानी देवे तथा अजीर्ण व आममें औटाया पानी व पकेहुए अजीर्ण में नितरा (निर्मल) पानीको देवे व विदग्ध अजीर्ण में प्यासा मनुष्य ठण्ढे पानी को पीवे तो उसके हृदयकी दाह शान्त होजाती है और शेष रहा अन्न जरजाता है तथा (अनूपदेश का जल) दोषोंको करता व कफ को उपजाता हुआ निन्दित कहाता है और (जाङ्गलदेश का जल) समस्त दोषों को

नाशता हुआ मन्दाग्नि को जगाता है तथा (साधारण देश का जल) ठण्ढा व मीठा होकर प्यास को नाशता व आनन्द को देताहुआ हलका रहता है और जो बरसाती पानी में स्नान करे व नवीन जल को पीवे व जो पत्ते आदिकों से बिगड़े जल को पीता है तो उसके शरीर में भीतरी व बाहरी रोग उपजते हैं और मैले कमल के पत्ते, सेवार व तृणादिकों से आच्छादित व दुष्ट गन्धादिकों से दूषित व सूर्य, चन्द्रमा की किरणों से युक्त जलको व्यापन्न जाने, यह समस्त दोषों को कोपित करता है व जो बिना समय बरसा हुआ जल हो उसको बर्जि देवे तथा तपाया लोह व सूर्यसे गरम किया व बालू रेत आदिकोंसे बुझाया व कपूर, केसर व पाटलादिकों से सुगन्धित व निर्मल व सोने, मोती आदिकोंसे युक्त ठण्ढा जल कहीं भी दोषों को नहीं करता है तथा औटाया, फेना से रहित, वेग-वर्जित जो निर्मल जल वह समस्त दोषों को शमन करता व मन्दाग्नि को जगाता हुआ पाचक व हलका कहाता है तथा गरम किया जल हलका होकर अग्नि को उपजाता व शोधता हुआ पसलीशूल, पीनस, अफरा, हिचकी व वातकफ को विनाशता है तथा जलाने से चौथाई भाग-हीन जल वायु को विनाशता है व अर्धभागसे हीन किया जल पित्त को हरता है व तीन भागों से हीन किया जल कफ को नाशता व मलको बाँधता व अग्नि को देता हुआ हलका रहता है तथा रात्रि में पिया गरम पानी कफसमूह को नाशता व वायु को हरता हुआ अजीर्ण को शीघ्रही जलाता है व चौथाई भाग शेषरहा जल ग्रीष्म

व शरद् ऋतु में उत्तम कहा जाता है व अर्धभाग शेषरहा जल हेमन्त, शिशिर तथा वर्षाकाल में भी श्रेष्ठ कहाता है तथा गरमकर ठण्ढा किया जल सदैव पथ्य व हलका होकर त्रिदोषों को विनाशता है और वही रात्रिभर धरा हुआ जल भारी व खट्टा होकर त्रिदोषों को करता है और दिन में गरम किया जल रात्रि में भारी होजाता है तथा रात्रि में गरम किया पानी दिन में पियाजावे तो भारी दोषों को करता है॥

दो०। याविध जलके भेद बहु, कीन यथामति गान।
दुग्धभेद वर्णन करब, देखें चतुर सुजान॥१॥

अब दूध के नाम व गुण कहते हैं।

दुग्ध, प्रस्रवण, क्षीर, सौम्य, संजीव और पयस् ये छः नाम दूध के हैं—यह बलकारी, ठण्ढा व मीठा होकर वात पित्त को जीतता है तथा चिकना, रसायन, बुद्धि-वर्धक व जीवनरूप होकर धातु को बढ़ाता व बिगड़े पित्त, रक्तरोग, दमा, क्षयी, बवासीर और भ्रम को हरताहुआ भारी रहता है तथा बालक बूढ़े व दुबले आदि व स्त्रियों में आसक्त प्राणियों के लिये श्रेष्ठ कहा है और प्रायः प्राणधारियों के दोषों को समान करता हुआ विशेष बलदायक होता है॥

अब गोदुग्ध के गुण कहते हैं।

गौ का दूध मीठा, ठण्ढा, भारी व चिकना होकर बुढ़ापे को विनाशता हुआ धातु को बढ़ाता है तथा स्तनों में दूध को उपजाता व वर्ण को निखारता हुआ जीवनरूप होकर वात पित्त को हरता है॥

अब काली या सफ़ेदआदि गौओं के दूध के गुण कहते हैं।

काली गौओं का दूध उत्तम कहाता है व सफ़ेद गौओं का दूध कफ को उपजाता हुआ भारी रहता है तथा छोटे बछड़ावाली व मरे बछड़ावाली गौओं का दूध त्रिदोषों को करता है और खली आदिकों के खिलाने से उपजा दूध भारी होकर कफको विनाशता है॥

अब बकरीदूध के गुण कहते हैं।

बकरी के दूध में गाय के दूध के समान गुण रहते हैं परन्तु विशेषता से मल को बाँधता व मन्दाग्नि को जगाता हुआ हलका रहता है तथा क्षयी, बवासीर, अतीसार, पैरा, रक्त, भ्रम और ज्वर को विनाशता है व छोटे शरीर के होनेसे व कडुवा, तीखा आदि खानेसे व थोड़ा पानी पीने से व बहुत घूमने से बकरियों का दूध सब मदों को हरता है॥

अब भेंड़ीदूध के गुण कहते हैं।

भेंड़ी का दूध मीठा, बालवर्धक व चिकना होकर वातकफ को नाशताहुआ भारी रहता है तथा वात की खाँसी व केवल वातरोग में उत्तम कहाता है॥

अब भैंसदूध के गुण कहते हैं।

भैंस का दूध कुछेक मीठा होकर गायके दूध के समान होता है व चिकना, भारी व बलदायक होकर नींद और वीर्यको उपजाता है तथा ठण्ढा व क़ाबिज़ होकर अग्नि को विनाशता है॥

अब नारीदूध के गुण कहते हैं।

नारी का दूध हलका व ठण्ढा होकर मन्दाग्नि को

जगाता हुआ वातपित्त को जीतता है तथा अक्षिशूल व नेत्राघात को शमन करताहुआ नस्य और आश्च्योतन कर्म में हितदायक कहाता है ॥

अब हथिनीदूध के गुण कहते हैं।

हथिनी का दूध मीठा व बलकारी होकर नयनों के लिये हित करता हुआ ठण्ढा व भारी रहता है ॥

अब ऊँटनीदूध के गुण कहते हैं।

ऊँटनी का दूध मीठा, रसीला, सलोना व हलका होकर मन्दाग्नि को जगाता व क्रिमि, कोढ़, कफ, अफरा, सूजन व उदररोग को हरता हुआ दस्तावर रहता है ॥

अब घोड़ीदूध के गुण कहते हैं।

घोड़ी का दूध गरम, रूखा व बलदायक होकर वायु-कफ को नशाता है तथा सलोना, खट्टा व हलका होकर स्वादिल बना रहता है ऐसेही एक खुरवाले चौपायों के दूधों में भी गुण रहते हैं ॥

अब सामान्य दूधों के गुण कहते हैं।

धार से निकला दूध गरम, दीपन, बलदायक, हलका व ठण्ढा होकर त्रिदोषों को विनाशता है तथा तीन मुहूर्त (छः घड़ी) के अनन्तर रक्खा हुआ दूध खाने के योग्य नहीं रहता है और बारह घड़ी के उपरान्त रक्खा हुआ दूध विषकेसमान होकर मनुष्यको मारडालताहै इसलिये तत्काल के निकाले व ठण्ढे गुणवाले दूध का पान करे तो वह अमृतकेसमान होजाताहै और यदि धार का निकाला व ठण्ढा किया दूध पियाजावे तो वह त्रिदोषों को उप-जाता है तथा धारसे निकला गरम गायका दूध अच्छा

होता है और धार से निकला व ठण्ढा किया भैंसका दूध उत्तम कहाता है व गरम किया गरम भेंड़ी का दूध उत्तम होताहै तथा गरम कर ठण्ढा किया बकरी का दूध अच्छा कहा है व गरमकर ठण्ढा किया दूध पित्तको जीतता है व गरमकर गरमही पिया दूध वातकफ को विनाशता है तथा बहुतही पकाया दूध भारी व चिकना होकर पुरुषार्थको उपजाताहुआ बलको बढ़ाताहै व कच्चा दूध आमवात व कफ को हरताहुआ भारी रहता है व स्त्रियों का कच्चाही दूध पथ्य कहाता है व पकाया दूध दोषों को करता है तथा प्रभात का दूध विशेषता से विष्टम्भी व भारी होकर धातु को पुष्ट करता है व रात्रि में चन्द्रगुणों की अधिकता या चलने फिरने आदिकों के बराने से सायँकाल का दूध परिश्रम को विनाशता है तथा बलदायक होकर आँखों के लिये हित पहुँचाताहुआ वातपित्त को हरता है या सूर्य की किरणों के लगने, चलने, फिरने व हवा खाने से बिगड़ा, खट्टा, दुर्गन्धी, नमकीन दूध कुष्ठ आदिरोगों को करता है तथा पके दूध पर आई मलाई रूखी कहाती है और मलाई भारी, ठण्ढी व पुरुषार्थ को बढ़ातीहुई पित्तरक्त और वायुको विनाशती है तथा सात रात्रिके बाद रक्खा दूध निन्दित होजाता है वा जैय्यट ने फटे या धरे हुए दूध को 'मस्तु व मोरट' कहा है तथा तत्काल ब्याई गौ का दूध पीयूषघन (खीस) कहाता है और जो दही के समान दूध डालकर पकाया जाताहै उसे 'दधिकूर्चिका' जानना चाहिये और यदि मठा के समान दूध मिलाया जावे तो उसे 'तक्रकूर्चिका' कहते हैं व विना

औटाया जो जमाया जाता है वह 'किलाट' कहाता है यह मिश्री के साथ बर्ताजाता है व पीयूषसहित 'मोरट' होता है व दही तथा मट्ठा की 'कूर्चिका' होती है 'किलाट' व क्षीरशाक के साथ ये निद्रा, आम और पुष्टिको देते हैं व ये सब भारी होकर कफ को उपजाते व हृदय को बल देते हैं तथा 'तक्रकूर्चिका' वाताग्नि को विनाशती हुई वायुको उपजाती है व विलम्ब में जरती हुई रूखी होकर मलको बाँधती है ॥

अब दही के नाम व गुण कहते हैं।

दधि, स्त्यान, पयस्सम्यक्, ईषत्स्त्यान और मन्दक ये पाँच नाम दही के हैं—यह मीठा, खट्टा व अत्यन्त खट्टा होकर मीठा खट्टा कहाता है तथा गरम, दीपन व चिकना होकर पीछे से कसैलापन लाताहुआ भारी रहता है व पाक में खट्टा होकर मल को बाँधताहुआ पित्तरक्त, सूजन, मेद और कफ को देता है व मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय (पीनस), शीतज्वर, विषमज्वर, अतीसार, अरुचि और कार्श्यरोग में दही श्रेष्ठ होताहुआ बल को बढ़ाता है व मन्दक दही त्रिदोष को उपजाता है व मीठा दही वातपित्त को जीतता है व खट्टा दही पित्तरक्त और कफ को करता है वैसेही बहुत खट्टा दही रक्तपित्त को देता है और खट्टे मीठे दही को मिलेहुए गुणों से पूर्व के समान कहदेवे ॥

अब गायदही के गुण कहते हैं।

गाय का दही—उत्तम, बलदायक व पाक में मीठा होकर रुचि को देता है तथा पवित्र, दीपन व चिकना होकर पुष्टता को करताहुआ वायु को विनाशता है ॥

अब बकरीदही के गुण कहते हैं।

बकरी का दही—उत्तम, बलदायक, क़ाबिज़ व हलका होकर त्रिदोषों को विनाशता है तथा दमा, खाँसी, बवासीर, क्षयी और कार्श्यरोग को हरताहुआ मन्दाग्नि को जगाता है॥

अब भेंड़ीदही के गुण कहते हैं।

भेंड़ी का दही—पुरुषार्थ को जगाता वा कफ व वायु को कुपित करताहुआ अभिष्यन्दिरसवाला कहाता है तथा पाक में मीठा होकर प्रायः दोषों को उपजाता है॥

अब भैंसदही के गुण कहते हैं।

भैंस का दही—अतीव चिकना व कफकारी होकर वातपित्त को हरताहुआ वीर्य को पुष्ट करता है तथा पाक में मीठा व भारी होकर लोहू को दूषित करता है॥

अब नारीदही के गुण कहते हैं।

नारी का दही—त्रिदोषों को हरता व आँखों के लिये हित करता व तृप्ति को पहुँचाता व भारी रहताहुआ बल को देता है तथा पाक में मीठा व चिकना होकर अग्नि को करता है॥

अब हथिनीदही के गुण कहते हैं।

हथिनी का दही—वीर्य में गरम व पाक में कड़ुवा होकर अग्नि को विनाशता है तथा पीछे से कसैले होकर मल को बढ़ाताहुआ कफवायु को जीतता है॥

अब ऊँटनीदही के गुण कहते हैं।

ऊँटनी का दही—पाक में कड़ुवा, भेदी, खारी व खट्टा

होकर उदररोग, कुष्ठ, बवासीर, शूल, बन्धा, वायु और क्रिमियों को विनाशता है॥

अब घोड़ी आदिकों के दही के गुण कहते हैं।

घोड़ी आदि एकखुरवाले पशुओं का दही रूखा व अभिष्यन्दी होकर दोषों को उपजाताहुआ मन्दाग्नि को जगाता है तथा मीठा व आँखों के लिये हितदायक होकर वायु को करताहुआ कफ और मूत्ररोग को हरता है और सब दहियों में गौ का दही उत्तम होकर गुणों को करताहै व कपड़े में छाना दही बहुत चिकना व वातनाशक होकर कफ को उपजाता हुआ भारी रहता है तथा बल व पुष्टता को करता व रुचि को देताहुआ मीठा होकर अत्यन्त पित्त को नहीं करता है व पकाये दूध का दही रुचिदायक व चिकना होकर उत्तम गुणों को धारता है व सब प्रकार का दही पित्तवातको हरताहुआ धातु, अग्नि और बल को बढ़ाता है तथा सार (मलाई) रहित दही मलको बाँधता हुआ कसैला होकर वायु को उपजाता है और हलका, विष्टम्भी, दीपन व रोचक होकर ग्रहणीरोग को विनाशता है तथा खाँड़समेत दही श्रेष्ठ होकर तृषा, पित्तरक्त और दाह को नाशता है और गुड़समेत दही वायु को हरता, पुरुषार्थ को उपजाता, वीर्य को बढ़ाता व तृप्ति को पहुँचाता हुआ भारी रहता है॥

अब वसन्तादि ऋतुओं में दही के गुण कहते हैं।

चैत्र, वैशाख, आश्विन, कार्त्तिक, ज्येष्ठ और आषाढ़ इन महीनों में दही विशेषता से निन्दित होता है तथा अगहन, पौष, माघ और फाल्गुन इन महीनों में दही

उत्तम कहाता है व श्रावण और भादों में दही गुणों को प्राप्त करता है और रात्रि में दही उत्तम नहीं कहा है तथा पानी और घी से मिलाहुआ दही अच्छा कहाता है॥

अब दहीसर के नाम व गुण कहते हैं।

दध्युत्तर, दधिस्नेह, दध्यग्र, कटुक और सर ये पाँच नाम दहीसर के हैं—यह भारी व वीर्यकारी होकर वायु और अग्नि को विनाशता है तथा बस्ति को शोधता हुआ खट्टा होकर पित्त और कफ को बढ़ाता है॥

अब दहीपानी के गुण कहते हैं।

दही का पानी ग्लानिहारी, बलकारी व हलका होकर खाने की चाहना करता है तथा स्रोतों को शोधता व हर्षको देताहुआ कफ, प्यास और वायु को विनाशता है और वीर्य में अहित होकर तृप्ति को पहुँचाता हुआ शीघ्रही मलसंचय को भेदता है॥

अब तक्रवर्ग (मठावर्ग) के नाम व गुण कहते हैं।

दण्डाहत, कालशेय, गोरस और विलोडित ये चार नाम तक्रवर्ग के हैं रससमेत व पानी से रहित दही 'घोल' होता है और रससे हीन दही 'मथित' कहाताहै व समान पानीवाला दही सफ़ेद होता है और आधा पानीवाला दही 'उदश्वित्' कहाजाता है व चौथाई पानीवाला दही 'तक्र' होता है या कितेक वैद्योंने आधे पानीवाले दही को 'तक्र' कहा है यह मलको बाँधता हुआ कसैला, खट्टा व मीठा होकर मन्दाग्नि को जगाताहुआ हलका रहता है तथा वीर्य में गरम, बलदायक, रूखा और तृप्तिकारी

होकर वायु को विनाशता हुआ सूजन, कृत्रिम विष, छर्दि, प्रसेक, विषमज्वर, पाण्डु, मेद, ग्रहणी, बवासीर, मूत्रावरोध, भगन्दर, प्रमेह, गोला, अतीसार, शूल, तिल्ली-रोग, कफ, क्रिमि, सफ़ेद कोढ़, प्यास, उदररोग और अपची को विनाशता है तथा गरमी के समय व आश्विन और कार्त्तिकमें व दुर्बलपन, भ्रम, मूर्च्छा, पित्त-रक्त, मद और शोथ में तक्र कभीभी अच्छा नहीं होता है तथा शीतकाल, ग्रहणी, बवासीर, कफरोग, वातरोग, स्रोतों का रुकना और मन्दाग्नि इन्होंमें 'तक्र' अमृत के समान कहाता है व सब प्रकारका तक्र' मीठा होकर कफ को करताहुआ वातपित्तको हरताहै व खट्टा तक्र वातहारी होकर रक्तपित्त को कुपित करता है तथा सेंधानमक से मिलाहुआ तक्र वात में हित होता है व खाँड से मिला हुआ तक्र पित्त में हित कहाता है व कफरोग में सोंठि, मिरच और पीपल के खार से युक्त किये रूखे तक्रको पीवे व घी से रहित किया तक्र पथ्य होकर विशेषतासे हलका रहता है व कुछेक निकाले घृतवाला तक्र वीर्य को पुष्ट करता व भारी रहताहुआ कफ को विनाशता है व नहीं निकाले घृतवाला तक्र ठण्ढा व भारी होकर कफ को करता है व जो आठ दही कहे हैं उन्हींके समान गुणवाले आठ तक्र होते हैं व सरस, निर्जल, घोल, मथित और रसवर्जित ये पाँच नाम तक्र के हैं घोल और मथित ये दो दही के नाम होते हैं तथा मण्डलतक्रा, लघुतक्रा, कूर्चिका और दधिसंभवा ये चार नाम घोल और मथित के हैं इनमें भी तक्र के ही समान गुण रहते हैं ॥

अब नयनू (माखन) के नाम व गुण कहते हैं।

हैयङ्गवीन, सरज, नवनीत और मन्थन ये चार नाम नयनू के हैं—यह हलका होकर मल को बाँधता है तथा तत्काल का माखन स्वादिल होकर ठण्ढा रहता है व थोड़े दिनों का निकाला माखन (नौनीघृत) कसैला व खट्टा होकर वीर्य को पुष्ट करताहुआ पित्त को विनाशता है तथा अविदाही, अग्निकारी व नयनामयहारी होकर क्षयी, बवासीर, घाव और खाँसी को जीतता है तथा बहुत दिनोंका निकाला नौनीघृत भारी होकर कफ को देता व सूजन को नाशता व बल को करताहुआ वीर्य को पुष्ट करता है और विशेषकर बालकों के लिये यह अमृत के समान कहाता है व दूध से निकाला नवनीत बड़ा चिकना होकर आँखों के लिये हित पहुँचाता हुआ रक्तपित्त को जीतता है तथा वीर्य को पुष्ट करता, बल को धारता व मल को बाँधता हुआ मीठा होकर बड़ा ठण्ढा बना रहता है॥

अब घृत (घी) के नाम व गुण कहते हैं।

घृत, आज्य, हवि, सर्पि, आधार और अमृताह्वय ये छः नाम घी के हैं—यह रसायन, मीठा, नयनामयहारी व भारी होकर मन्दाग्नि को प्रकाशता है व ठण्ढे वीर्यवाला होकर विष, अलक्ष्मी, वातपित्त व वायु को विनाशता हुआ महाभिष्यन्दी रहता है तथा कान्ति, ओज, तेज, सुन्दरता और बुद्धि को करता हुआ उदावर्त, ज्वर, उन्माद, शूल, अफरा और घावों को जीतता है तथा चिकना, कफदायक व रूखा होकर क्षयी, विसर्प

व लोहू को हरता है वा बिगड़े स्वरको सुधारता व घावों को हरता हुआ विशेष कर बालक व वृद्धों के लिये बल-दायक होता है तथा दूध से निकाला घी ग्राही व ठण्ढा होकर नेत्ररोगोंको विनाशता हुआ पित्त, दाह, रक्त, मद, मूर्च्छा, भ्रम और वायुको दूर करता है व पुराना घी पाकमें कडुआ होकर त्रिदोषोंको नाशता हुआ कर्णरोग, नेत्ररोग, शिरशूल, कोढ़, मिरगी और सूजन को जीतता है व योनिरोग, ज्वर, दमा, कोढ़, बवासीर, गोला और पीनस रोग को विनाशता है तथा मन्दाग्नि को जगाता हुआ वस्तिकर्म व नस्यकर्म में उत्तम कहा है और घी का मण्ड (छाँछ) में भी घी के ही समान गुण होते हैं परन्तु तीखा व हलका होकर फैलनेवाला होता है॥

अब दशवर्ष के बाद धरेहुए घी के गुण कहते हैं।

दशवर्ष के अनन्तर रक्खे घी को वैद्योंने 'कौम्भ' कहा है यह राक्षसदोषों को हरता हुआ हलका व गुणों से प्रशंसनीय होकर 'महाघृत' कहाता है तथा घी के गुण व दोष दूध के ही समान कहे हैं व सर्व घृतों में गौ का घी गुणकारी होताहै तथा भेंड़ का घी निन्दित माना गया है॥

दो०। तिल आदिक बस्तून की, चिकनाई को तेल।
तासु रूप जानो यही, जासु बातहर खेल॥१॥

अब तेल के गुण कहते हैं।

तेल गरम व भारी होकर स्थिरता को धारता हुआ बल और वर्ण को करता है तथा पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ विकाशी व विशद होकर रस और पाक में मीठा रहताहै॥

अब गरम किये तेल के गुण कहते हैं ।

गरम किया तेल कसैले के अनुसार रसवाला व तीखा होकर कफवायु को विनाशता है तथा पाक में मीठा व तेज़ होकर धातु को बढ़ाता हुआ रक्तपित्त को जीतता है और कफकारी व कडुआ होकर मल, मूत्र, त्वचा व गर्भाशय को शोधता है तथा मन्दाग्नि को जगाता व बुद्धि को देता व बालोंको बढ़ाता हुआ परिश्रम, घाव और प्रमेहों को हरता है अथवा कर्णरोग, योनिरोग, शिरशूल व नेत्ररोग को विनाशता है तथा मथित, गिरे, कटे व टूटेहुए व सर्पादि के विष, चोट व अग्नि से जले इन्होंमें पीने और मालिश आदिकों के करने से तेल सदैव पथ्यदायक होता है ॥

अब सालभरे के उपरान्त धरे घी व तेल के गुण कहते हैं ।

एक सालभरेके उपरान्त पका हुआ घी हीनवीर्यवाला होजाता है तथा पका हुआ या नहीं पका हुआ या बहुत दिनों का रक्खा हुआ तेल बड़े गुणोंवाला कहाता है ॥

अब एरण्डतैल के गुण कहते हैं ।

एरण्ड का तेल मीठा, गरम, दीपन व शोधन होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ बिगड़ा खाल को सुधारता है तथा अवस्था को स्थापित करता व बुद्धि, कान्ति और बलको देता हुआ कसैले के अनुसार रसवाला होकर हलका कहाताहै और योनि व वीर्यको शोधताहुआ वात, उदररोग, अफरा, गोला, अष्ठीला, कटिग्रह, वातरक्त, शूल, घाव, सूजन, आम और विद्रधि को विनाशता है ॥

अब कडुए तेल के गुण कहते हैं।

इलायची, पीपरामूल, देवदाली, जमालगोटा की जड़, क्यवाँच, सहँजना. नींब. अलसी, करंजुवा, आक, लाल एरण्ड, हस्तिकन्द और हींगन का तेल तथा शङ्खिनीतेल, नींवतेल, मालकाँगनीतेल, कुसुम्भ तेल. सरसोंतेल और सुवर्चलातेल ये सब पाकमें चर्फरे, तज़, गरम, कडुए व फैलनेवाले तथा हलके होकर कुष्ठ, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा और क्रिमियों को विनाशते हैं॥

अब नींव, अलसी, सरसों और कुसुम्भतेल के गुण कहते हैं।

नींब का तेल कोढ़, घाव. कफ, ज्वर और क्रिमियों को जीतता है तथा अलसी का तेल अग्निरूप, चिकना व गरम होकर कफपित्त को हरता है व पाकमें कडुआ हो कर नयनोंके लिये हित पहुँचाता, बलको करता व वायु को हरताहुआ भारी रहता है तथा सरसों का तेल क्रिमियोंको विनाशता व कोढ़ और खुजली को हरता हुआ हलका रहता है व पित्तरक्त को दूषित करता हुआ प्रमेह, कर्णरोग और शिररोगों को नाशता है तथा कुसुम्भ का तेल कडुआ होकर आँखों के लिये हितको नहीं करता हुआ बल को देता है और केवल वायु को हरता हुआ तीखा, विदाही व गरम होकर द्वन्द्वज दोषों को करता है॥

अब मालकाँगनी व अखरोटादि तेलों के गुण कहते हैं।

मालकाँगनी का तेल पित्त को उपजाता हुआ स्मृति और बुद्धि को देता है तथा अखरोट, साँपकी काँचली, बहेड़ा और नारियल इन्होंका तेल पित्तवायु को हरता

व बालों को बढ़ाता हुआ भारी व कफकारी होकर ठण्ढा बना रहता है॥

अब शीशम आदि व भिलावाँतेल के गुण कहते हैं।

शीशम, अगर, थूहर, ईख और देवदारु का तेल कसैला, कडुआ व तीखा होकर दुष्ट घावों को नाशता है और वातरक्त, विष, कफ, खुजली, कोढ़ व वायु को दूर करता है तथा भिलावें का तेल कसैला, वीर्य में गरम, मीठा व कडुआ होकर कोढ़, ऊर्ध्वदोष, अधोरोग, त्रिदोष, रक्तरोग, मेदरोग, प्रमेह और क्रिमियों को करता है॥

अब पलाशादि व कूष्माण्डादि तेलों के गुण कहते हैं।

टेसू, महुआ और पाटलाफल का तेल कसैला व मीठा होकर दाह, पित्त और कफ को जीतता है तथा कुम्हड़ा, ककड़ी, ख़रबूज़ा, लौकी, तरबूज़, परवल, चिरौंजी, जीवन्ती और लसोड़ा इन्हों का तेल भारी व पाक में मीठा तथा ठण्ढा होकर मूत्र को उपजाता है तथा मन्दाग्नि को नहीं जगाता हुआ अभिष्यन्दी व कफदायक होकर वातपित्त को जीतता है तथा पाठा का तेल ठण्ढा होकर पित्त को हरता हुआ कफवायु को करता है॥

अब शङ्खाहूली व आम्रतेल के गुण कहते हैं।

शङ्खाहूली का तेल कुछेक कडुआ होकर बुढ़ापे को नहीं लाता हुआ मन्दाग्नि को जगाता है और लेखन, बुद्धिवर्धक व पथ्यरूप होकर त्रिदोषों को विनाशता है तथा आम का तेल कुछेक कडुआ व मीठा होकर अत्यन्त पित्तको नहीं करता वकफवायुको हरता हुआ रूखा रहता है या सुगन्धवाला होकर परमसुन्दर कहाता है और

स्थावर स्नेह तेल की भाँति वायु के शान्त करनेवाले कहे हैं इन्हों में तेल का होना गौण कहा है और बल, वर्ण को करता है ॥

अब मांस के नाम व गुण कहते हैं।

मांस, पिशित, क्रव्य, आमिष पलल और पल ये छः नाम मांस के हैं यह वातहारी होकर धातु को बढ़ाता हुआ बल व पुष्टता को करता है तथा तृप्तिकारी व भारी होकर हृदय को प्रिय करता हुआ रस और पाक में मीठा रहता है तथा ग्राम्य, अनूप और औदक इन देशों में रहनेवाले जीवों की मेद, मज्जा और वसा भारी, मीठी व गरम होकर वायु को विनाशती है तथा जाङ्गलदेश में बसनेवाले जीवों की मेद मज्जा और वसा कसैली, हलकी व ठण्ढी होकर रक्तपित्त को हरती है तथा (प्रतुद) चोंच से चुगनेवाले तोता, परेवा खञ्जन व कोयल आदि और (विष्किर) बत्तक, लवा, मुर्गा व चकोरादि जीवों की मेद, मज्जा व वसा कफ को विनाशती है तथा घी, तेल, वसा, मेद और मज्जा वायु को हरती है ये पाक में यथोत्तर बड़े स्वादवाले जानना चाहिये ॥

अब मदिरा (शराब) के नाम व गुण कहते हैं।

मद्य, हाला, सुरा, शुण्डा, मदिरा, वरुणात्मजा, गन्धोत्तमा, कल्पा, देवसृष्टा और वारुणी ये दश नाम मदिरा के हैं यह प्रायः पित्त को करती हुई फैलनेवाली होकर रुचिको उपजाती है तथा मन्दाग्नि को जगाती, दाह करती व मल मूत्र को उपजातीहुई तीखी होकर वायु-कफ को विनाशती है तथा अन्न से युक्त व विधिसे पी हुई

मदिरा अमृत के समान होती है व अन्यथा पान की हुई मदिरा रोगों को करती है तथा बहुत पी हुई मदिरा विष के समान गुणों को धारती है॥

अब दाख, महुआ व खजूर आदि मदिरा के गुण कहते हैं।

दाख की मदिरा दाह को नहीं करने से पित्तरक्त में उत्तम कहाती हुई बल व पुष्टिको करती है तथा खूनी बवासीर को हरती हुई मन्दाग्निको जगाती है और महुआ की मदिरा अल्पगुणोंवाली होती है तथा खजूर की मदिरा वायु को देती है और वही विशद व रुचिदायक होकर कफ को विनाशती व दोषों को खींचती हुई हलकी रहती है॥

अब शाली, साठी व पिट्ठी आदिकी बनी मदिरा के गुण कहते हैं।

शालीचावल व साठीचावल तथा पिट्ठी आदि की बनाई मदिरा वैद्यों ने सुरा मानी है यह भारी होकर बल, दुग्ध, पुष्टता, मेद और कफ को देती है तथा मल को बाँधती हुई, सूजन, गोला, बवासीर, ग्रहणी और मूत्रकृच्छ्र को हरती है॥

अब वारुणी मदिरा के गुण कहते हैं।

पुनर्नवा (साठी की जड़) व नवीन शालीचावलों की पीठी से बनाई मदिरा को वैद्योंने वारुणी कहा है इस में सुरा के समान गुण रहते हैं व हलकी होकर पीनस, आध्मान (पेट का फूलना) और शूल को विनाशती है तथा सुराका मण्ड 'प्रसन्ना' होती है व सुरामण्डसे घनरूप 'कादम्बरी' कहाती है उससे नीचे जगल' कहा है व उससे घनरूप 'मेदक' होता है व जगल का साररूप 'पक्कश' कहाता है और सुरा का बीज 'किण्वकसंज्ञक' होता है॥

अब प्रसन्ना, कादम्बरी व जगल के गुण कहते हैं।

प्रसन्ना, अफरा, गोला. बवासीर, छर्दि, अरोचक और वायु को जीतती हुई मन्दाग्नि को जगाती है तथा अफरा को हरती हुई कुक्षिपीड़ा और शूल को विनाशती है और कादम्बरी भारी होकर पुरुषार्थ को बढ़ाती, मन्दाग्नि को प्रकाशती व वादी को करती हुई दस्तावर होती है तथा जगल कफ़हारी व मलबन्धी होकर सूजन, बवासीर और संग्रहणी को हरती है॥

अब मेदक, पक्कश व किण्वक के गुण कहते हैं।

मेदक[1] मीठा व बलदायक होकर वीर्य को स्तम्भन करता हुआ ठण्ढा व भारी रहता है तथा सार (हीर) के हरजाने से पक्कश क़ाबिज़ होकर वायु को बढ़ाता है तथा 'किण्वक' वायु को शान्त करता, हृदय को अहित पहुँचाता व विलम्ब में जरता हुआ भारी रहता है॥

अब आक्षिकी मदिरा के गुण कहते हैं।

बहेड़ा की छाल या शाली चावलों से जो मदिरा बनाई जाती है उसे 'आक्षिकी' कहते हैं यह पाण्डुरोग, सूज़न, बवासीर, पित्तरक्त, कफ और कोढ़ को हरती है व कुछेक बादी को करती हुई रूखी होकर मन्दाग्नि को जगाती है तथा दस्तावर होकर हलकी रहती है॥

अब यवसुरा के नाम व गुण कहते हैं।

यवों की पीठी से बनाई मदिरा को वैद्योंने 'यवसुरा' कहा है तथा क़ाकोलिकी, हली, मैरेय और धान्यजासव ये चार नाम भी यवसुरा के हैं और आसव व सुरा इन दोनोंका एकही पात्र है उसीको साधन जाने व दोनों का

---

१ "मेदको जगलः समौ" (इत्यमरः)॥

'मैरेय' होता है अथवा कहीं धायके फूल, गुण और अन्न केजलसे साधन किया 'मैरेय' कहाता है व यवसुरा–भारी व रूखी होकर क़ब्ज़ता को लाती हुई त्रिदोषों को करती है तथा काकोली धातुको बढ़ाती, पुरुषार्थ को जगाती व दृष्टि को मन्द करती हुई भारी रहती है तथा मैरेय धातु-वर्धक व स्त्रीरमणमें हितदायक व भारी होकर भलीभाँति तृप्त करता हुआ फैलनेवाला या दस्तावर कहाता है॥

अब मधूलक व आसव के गुण कहते हैं।

सब रसों से उपजी मदिरा को वैद्यों ने 'मधूलक' कहा है यह भारी, मीठा व चिकना होकर वीर्य और कफ को देता है तथा आसव दीपन, स्वादिल, पाचक, रोचक व हलका होकर स्त्रीसंग में आनन्ददायक होता हुआ बादी, क्षयी और बस्तिविकार को हरता है॥

अब मध्वासव, गौड़, शीधु व पक्वरस के गुण कहते हैं।

मध्वासव हलका व रूखा हो कर कोढ़, प्रमेह और विष को विनाशता है तथा गुड़ की मदिरा मन्दाग्नि को बढ़ाती, वर्ण को निखारती व बलको देती हुई तृप्ति को पहुँचाती है तथा कड़ुई, तीखी, धातुवर्धक व मीठी होकर मल, मूत्र और बादी को उपजाती है तथा ईख का पका हुआ रस 'शीधु' होता है उसीको वैद्योंने पक्वरस कहा है और आसवोंसे बनेहुए रसको पण्डितोंने शीतरस माना है और शीधु व पक्वरस श्रेष्ठ होकर स्वर, अग्नि, बल व वर्ण को धारताहुआ वातपित्तको करता है व हृदय का प्यारा, चिकना व रोचक होकर अफरा, प्रमेह, सूजन, बवासीर, उदररोग और कफरोगों को जीतता है और इससे अल्प

गुणोंवाला शीतरस दस्तावर या फैलनेवाला होकर भलीभाँति लेखन कहाता है ॥

अब जाम्बव के गुण कहते हैं ।

शहदसे उपजी मदिरा 'जाम्बवसंज्ञक' होती है तथा जामुन का रस व गुड़ से रची मदिरा भी 'जाम्बव' कहाती है—यह नयनों को मिचाती हुई कसैली होकर वायुको कुपित करती है वैसेही यथायोग्य अपने संस्कारों को देखकर कुशल वैद्य अरिष्ट, आसव* और शीधु के गुण व कर्मों को बुद्धि के द्वारा आदेश करे तथा चिकनी, दाह करनेवाली, दुर्गन्धवाली, रसरहित, कीड़ों से युक्त, हृदयको अहित करनेहारी, तरुण, रूखी, बुरे पात्र में धरी, अल्प औषधोंवाली, बहुत दिनों की रक्खी और झागोंवाली मदिरा कफको कुपित करतीहुई विशेषतासे विलम्ब में पकती है तथा बहुत तीखी, गरम व विशेष दहनेवाली मदिरा पित्तको कुपित करती है तथा हृदय को अहित, कोमल, दुर्गन्धवाली, कीड़ों से युक्त, रस-रहित, भारी तथा बासी मदिरा वातको कुपित करती है ॥

अब चिरस्थित मदिरा के गुण कहते हैं ।

बहुत समय की रक्खी व उपजे रसवाली मदिरा मन्दाग्नि को जगाती हुई कफवायुको जीतती है तथा रुचिदायक, प्रसन्न करनेहारी, सुगन्धित व बुद्धि की बढ़ानेवाली मदिराको सदैव सेवना चाहिये इसलिये एकभाँति की मदिराके रस और वीर्यको जानकर नहीं

* यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः । आसवस्य गुणा ज्ञेया बीज-द्रव्यगुणैः समाः ॥ १ ॥

सेवन करे बरन वह मदिरा सूक्ष्मपने से गरम वायुसे व अविकाशी होनेसे अग्निको मन्द नहीं करती है तथा हृदय को भलीभाँति पाकर धमनियों के ऊपर आईहुई मदिरा इन्द्रिय और मनको चलायमान कर वीर्य से शीघ्रही मदको देती है॥

अब कफ वायु पित्त प्रकृतिवाले जनों में मदोत्पत्ति कहते हैं।

कफप्रकृतिवाले जनों में गिरानेवाला मद बहुत देर में उपजता है व वातप्रकृतिवाले जनों में मद थोड़ी देर में होता है तथा पित्तप्रकृतिवाले पुरुषों में शीघ्रही मद हो आता है॥

अब नवीन, अरिष्ट व पुरानी मदिरा के गुण कहते हैं।

नवीन मदिरा अभिष्यन्दी होकर त्रिदोषों को उपजातीहुई फैलनेवाली होती है तथा अरिष्ट धातुवर्धक, दाहकारी, दुर्गन्धवाली और विशद होकर भारी रहती है और पुरानी मदिरा रुचिको करतीहुई क्रिमि, कफ और वायुको विनाशती है तथा हृदय को प्यारी, सुगन्धित, सुन्दर गुणोंवाली व हलकी होकर नाड़ी के स्रोतों को शोधती है॥

अब सात्त्विकादि मद्यपों के लक्षण कहते हैं।

सतोगुणी प्रकृतिवाले प्राणी के लिये मद्य (शराब) गीतगाना व हँसना आदि उपजाता है व रजोगुणी स्वभाववाले प्राणी को साहस आदिकों को कराता है तथा तमोगुणी प्रकृतिवाले जनको निन्दित कर्म व निद्रादिकों में सदैव रमाता है॥

अब चुक्र व गौड़ादिरसयुत मद्य के गुण कहते हैं।

चुक्र—कफहारी, तीखा, गरम, हलका, रोचक और पाचक होकर पाण्डु व क्रिमिरोग को हरता है तथा रूखा व भेदी होकर रक्तपित्त को करता है और मद्योंमें गौड़ादि रसयुक्त जो मदिरा कही हैं वे पूर्व पूर्व क्रम से भारी होकर अभिष्यन्द रोग को करती हैं॥

अब काँजी के नाम व गुण कहते हैं।

काञ्जिक, सौवीर और आरनाल ये तीन नाम काँजी के हैं—यह दोषोंको करतीहुई ठण्ढे स्पर्शवाली, पाचक व रोचक होकर हलकी रहती है तथा कच्चे जवोंसे रचा हुआ 'तुषोदक' कहाता है व तुषोंसमेत कच्चे जवों से या तुष-रहित पक्केजवोंसे कियाहुआ 'सौवीर' कहाता है अथवा कहीं रसोंसे रसाम्लरूप (सौवीरक) माना है और तुषो-दक मन्दाग्नि को जगाता व हृदय को हित करता हुआ पाण्डु और क्रिमियों को हरता है तथा 'सौवीरक' संग्र-हणी व बवासीर को विनाशता हुआ भेदी होकर अग्नि को प्रकाशता है वा छूने से दाह करता व पीनेसे दोषोंको पचाता हुआ कफ को करता है तथा कुल्ला (गरारा) करने से मुख की विरसता व दुर्गन्धता को हरताहुआ कफ को विनाशता है॥

अब गौ व हस्ती आदि मूत्रों के गुण कहते हैं।

गौ, हाथी, भैंसा, घोड़ा, बकरी, भेंड़, गधा, ऊँट और

---

१ "सन्धितं धान्यमण्डादि काञ्जिकं कथ्यते जनैः" धान्यादि के मण्ड को दो तीन दिन धरा रहने दे जब वह खट्टा होजावे तो उसको मनुष्य लोग काँजी कहतेहैं॥

मनुष्य इनसबोंका मूत्र पाचकहोकर मन्दाग्निको जगाता हुआ हलका रहता है तथा नुनखरा, कडुआ व रूखा होकर नाड़ियोंके स्रोतोंको शोधता हुआ पित्तको उपजाता है और चर्फरा, हृदय का प्यारा व भेदी होकर वायु को अनुलोमित करता हुआ वायुगोला, बवासीर, सूजन, उदररोग, कफ, क्रिमिरोग, कोढ़, पाण्डु, अफरा, विष, शूल और अरुचि को विनाशता है तथा मूत्रयोग में उन सर्वमूत्रों में से गोमूत्र श्रेष्ठ कहाता है और (हाथीका मूत्र) विष व बवासीर को हरताहुआ कोढ़, गोला और क्रिमियोंको जीतता है तथा सूजन, गोला, बवासीर, पाण्डु और प्रमेह इन रोगों में (भैंसे का मूत्र) योजित करे तथा (घोड़े का मूत्र) विशेषतासे भेदी होकर कफ, दाह और क्रिमियोंको हरता है तथा (बकरी का मूत्र) गोला, विष, दमा, कामला और पाण्डुदोषोंको विनाशता है तथा (भेंड़का मूत्र) शोथ, कोढ़, बवासीर, प्रमेह और मलबन्ध को हरता है तथा (गधे का मूत्र) संग्रहणी, प्रमेह, कोढ़, उन्माद और क्रिमियोंको विनाशता है तथा (ऊँटका मूत्र) उन्माद (पागलपना), सूजन, बवासीर, क्रिमि, शूल और उदररोगों को दूर करता है तथा (मनुष्यका मूत्र) फैलनेवाला होकर सेवन किया हुआ बुढ़ापे को नहीं लाता है और गौ, बकरी, भेंड़ी, भैंसी इन स्त्रीजातीय पशुओं और नारियों का मूत्र श्रेष्ठ कहाता है तथा गधा, ऊँट, हाथी, मनुष्य और घोड़ा इन जातीय पुरुषों का मूत्र हितदायक वैद्यों ने माना है॥

दो०। नृपमुखतिलककटारमल, मदनमहिप जो कीन।

ताही मदनविनोद में, नागवर्ग कहि दीन ॥१॥

इति श्रीमदनपालविरचिते निघण्टौ श्रीशक्तिधरनिर्मितायां भाषाव्याख्यायां पानीयादिरष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

दो० । भाषब नवयें वर्गमहँ, ईख आदि कर नाम ।
ऐसेही उन सबन के, भनत अहौं गुणग्राम ॥१॥

अब ईखके नाम व गुण कहते हैं ।

इक्षु, महारस, वेणु, निस्सृत, गुडपत्रक, तृणराज, मधुतृण, गण्डीर, अमृतपुष्पक, ह्रस्वमूल, लोहितेक्षु और पौण्ड्रक ये बारह नाम ईख के हैं तथा पौण्ड्रक, रसाल, सुकुमार, कृष्णेक्षु और भीरुक ये पाँच नाम ईखभेद के हैं--यह मीठी, भारी व ठण्ढी होकर पुरुषार्थ को बढ़ाती व चिकनी होती हुई बलको देती है तथा जीवनीय होकर वातपित्त को हरतीहुई मूत्र, कफ और क्रिमियोंको करती है तथा जड़ में बहुत मीठी व मध्य में कम मीठी और अग्रभाग में नुनखरे रसवाली होकर मूत्रको उपजाती है ॥

अब लाल ईख व पौंड़ा आदि के गुण कहते हैं ।

लाल ईख--भारी व ठण्ढी होकर दाह, पित्तरक्त और मूत्रकृच्छ्र को विनाशती है तथा पौंड़ा ठण्ढा व चिकना होकर धातु को बढ़ाता व कफका करताहुआ फैलनेवाला होता है तथा काली ईख उक्तगुणोंवाली होती है और वंशनामक ईख कुछेक खारी होकर पूर्वोक्त गुणों के समान रहती है तथा शतपोरनामक ईख वंशेक्षुके समान गुणों वाली व कुछेक गरम प्रकृतिवाली होकर वायु को जीतती है तथा कान्तार और तापसनामक ईख में भी पूर्वोक्त

गुण रहते हैं और (काष्ठनामक ईख) वात को उपजाती हुई ठण्ढी रहती है तथा (कासकारनामक ईख) भारी व ठण्ढी होकर रक्तपित्त और क्षयी को हरती है ॥

अब नैपालईख के नाम व गुण कहते हैं।

सूचीपत्र, नीलपर, नैपाल और दीर्घपत्रक ये चार नाम नैपाल ईखकेहैं—यह बादीको उपजातीहुई कफपित्त को हरती है तथा कसैली होकर बड़ी दाह को करती है ॥

अब ईखरस के गुण कहते हैं।

दाँतोंसे चूसाहुआ ईखका रस पित्तरक्तको विनाशता हुआ खाँड़ (चीनी) के समान वीर्यवाला होकर दाह को हरता है तथा कफदायक होकर भारी रहता है और यन्त्र (कोल्हू) से निकाला ईखका रस भारी होकर दाह को करताहुआ विष्टम्भी होता है ॥

अब मत्स्यण्डी (राब) आदि के नाम व गुण कहते हैं।

सिता, मत्स्यण्डिका, पल्ली, ममाण्डी, बलक, विषपलद्गन्धा, शिग्रुका, कृत्तिका, अमला, खण्ड, खण्डसिता, माधवी, मधुशर्करा यवाग्रकाथसंभवा, पुष्पसिता, पुष्पसंभृतशर्करा, फाणित, क्षुद्रगुड़क, गुड़ और इक्षुरसोद्भव ये बीस नाम राब, खाँड़ और गुड़ आदि के हैं इन्होंमें से राब मल को बाँधती व बल को करती हुई भारी होकर पित्त और वायु को विनाशती है ॥

अब सितोपला (मिश्री) के नाम व गुण कहते हैं।

सितोपला और सहा ये दो नाम मिश्री के हैं—यह

भारी होकर वातपित्त को हरती हुई ठण्ढी रहती है तथा खाँड़ में भी पूर्वोक्त गुण रहते हैं जोकि रुचि को उपजाती हुई पुष्टि और बल को देती है तथा (शहद की खाँड़) रूखी होकर बादी को जीतती व कफपित्त को हरती हुई भारी रहतीहै तथा गुड़को औटाकर रची हुई खाँड़ ठण्ढी होकर वायु को उपजाती हुई कफपित्त को जीतती है ॥

अब चीनी खाँड़ के नाम व गुण कहते हैं।

सिता और पुष्पसिता ये दो नाम चीनीखाँड़ के हैं–यह हृदय की प्यारी होकर रक्तपित्त को हरती हुई भारी रहती है ॥

अब राव के गुण व मधूक के नाम व गुण कहते हैं।

राव भारी व अभिष्यन्दी होकर दोषों को उपजाती हुई मूत्र को शोधती है तथा मधूक और फाणित ये दो नाम मधूक (राबभेद) के हैं–यह बस्ति को दूषित करताहुआ वातपित्त को उपजाता है ॥

अब गुड़ व पुराने गुड़ के गुण कहते हैं।

ईखरस को पकाय जो डेले के समान गाढ़ा किया जाता है उसे गुड़ कहते हैं यह खारी, भारी व मीठा होकर वातपित्त व अग्निको करता हुआ दस्तावर होता है तथा बलदायक होकर क्रिमि व कफ को करता हुआ मूत्र और लोहू को शोधता है और पुराना गुड़ हृदय का प्यारा व हलका होकर पथ्य को देता व अभिष्यन्दी नहीं होताहुआ अग्नि और पुष्टता को करता है ॥

---

१ श्लेष्माणमाशु विनिहन्ति सदार्द्रकेण, पित्तं निहन्ति च तदेव हरीतकीभिः। शुण्ठ्या समं हरति वातमशेषमित्थं, दोषत्रयक्षयकराय नमो गुडाय ॥ १ ॥

अब ईखरसंविकारों के गुण कहते हैं।

ईख के विकार जितनेही विमल (साफ़) बनायेजावें उतनेही गुणकारी होते हैं तथा प्यास, दाह, मूर्च्छा, पित्तरक्त विष और प्रमेहों को हरतेहुए ठण्ढे रहते हैं या भारी, मीठे, बलदायक और चिकने होकर वात को हरते हुए दस्तावर कहे जाते हैं॥

अब शहद के नाम व गुण कहते हैं।

मधु, पुष्पासव, पुष्परस और माक्षिक ये चार नाम शहद के हैं तथा विस्तार से माक्षिक, पैत्तिक, क्षौद्र और भ्रामर इन चार भेदोंवाला 'शहद' कहाता है जोकि तेल के समान शोभावाला शहद होता है उसे 'माक्षिक' कहते हैं, घृतकेसमान प्रकाशवाला 'पैत्तिक' व कपिलरंगवाला 'क्षौद्र' कहाता है तथा स्फटिकमणि की कान्तिवाला जो शहद होता है उसे 'भ्रामर' कहतेहैं—यह ठण्ढा, हलका, मीठा और रूखा होकर मल को बाँधता है तथा लेखन (भेदन) होकर आँखों को हित करता, मन्दाग्निको जगाता, बिगड़े स्वर को सुधारता व घावों को शोधता हुआ रोपण करता है तथा वर्ण को निखारता, बुद्धिको करता व पुरुषार्थको जगाता हुआ विशद व रोचक होकर कोढ़, बवासीर, खाँसी, पित्तरक्त, कफ, प्रमेह, ग्लानि और क्रिमियों को हरता है और मद, प्यास, छर्दि, दमा, हिचकी, अतीसार, हृद्रोग, दाह, क्षत, क्षय और रक्तरोग को जीतता है और यह योगवाही होकर स्वल्प वायु को उपजाता है॥

अव माक्षिक, पैत्तिक, क्षौद्र व भ्रामर शहद के गुण कहते हैं।

शहदों में माक्षिक शहद उत्तम कहाता है यह नयन-रोगों को हरता हुआ हलका रहता है तथा पैत्तिक शहद रूखा व गरम होकर पित्त, दाह और रक्तवात को करता है और 'माक्षिक' शहद में जो गुण कहे हैं वे क्षौद्र में भी रहते हैं परन्तु विशेषता से प्रमेहों को विनाशता है तथा भ्रामर शहद रक्तपित्त को हरता व मूत्र और जड़ता को करता हुआ भारी रहता है॥

अव नये व पुराने शहद के गुण कहते हैं।

नवीन शहद अभिष्यन्दी व चिकना होकर कफको हरता हुआ दस्तावर रहता है तथा पुराना शहद ग्राही व रूखा होकर मेदरोग को विनाशता हुआ अतीव लेखन होता है॥

अव विषसमेत व घाम से तपाये शहद के गुण कहते हैं।

विषैली मक्खी व भौंरा आदि विषादिकोंसे पोढ़े फूलों से मधुका संचयकर शहद को बनाते हैं इसलिये उसको वैद्योंने विषके समान कहा है उसीसे अग्नि और घामसे तपाया हुआ शहद यदि खायाजावे तो प्राणीको मारडालता है और गरमी के समय व गरमदेश में उक्त द्रव्योंसे युक्त किये उस शहदको बुधजनों ने निरूहबस्ति व वमन में नहीं निवारित किया है इसलिये पाकको नहीं प्राप्त होकर उन दोनोंमें से वह निवृत्त होजाता है और आमरोग में जलके साथ या द्रव्य में भी वह नहीं रोंकाजाता है॥

१ सब पाकों में शहदको ठण्ढाकर देना चाहिये यह चरकादिकों का सिद्धान्त है॥

अब मोम के नाम व गुण कहते हैं।

मदन, मधुज, सिक्थ, मधूच्छिष्ट, मधूलित, मयन, मधुशेष, मध्वाहार और मदनक ये नव नाम मोम के हैं-यह कोमल व बड़ा चिकना होकर भूतोंको विनाशता व घावों पै अंकुरों को लाता हुआ टूटे हुए को जोड़देता है तथा वात, कोढ़, विसर्प और रक्तरोग को जीतता है॥

दो०। नृपमुखतिलककटारमल, मदन महिप जो कीन।
ताही मदनविनोद में, नन्दवर्ग कहिदीन॥१॥

इति श्रीमद्नपालविरचिते निघण्टौ श्रीशक्तिधरनिर्मितायां भाषाव्याख्यायामिक्षुकादिर्नवमो वर्गः॥ ९॥

दो०। भाषब दशयें वर्गमहँ, शालि आदिकर नाम।
ऐसेही उन सबन्न के, भणत अहौं गुणग्राम॥१॥
लालिशालिआदिक ज्वई, शालि कहावत सोय।
साठी चावल आदिकहँ, कहैं व्रीहि सबकोय॥२॥
मूंग आदि वैदल कहे, शूक यवादिक जान।
कंगु आदि सब क्षुद्र हैं, भाषत शक्ति सुजान॥३॥

अब शाली आदि के नाम व गुण कहते हैं।

लालशाली आदि चावलोंको 'शालि' कहतेहैं साठी आदि चावल 'व्रीहि' कहाते हैं व मूंग आदिको 'वैदल' व 'शैल' कहतेहैं और ककुनी आदिकोंको 'तृणधान्य' कहाहै तथा 'क्षुद्रधान्य' और 'कुधान्य' भी कहतेहैं व यवआदिकों को 'शूकधान्य' कहाहै और लालशाली लालरंगवाला होता है तथा गरुड, शकुनीहत, सुगन्धिक, महाशालि,

---

१ शालिधान्यं व्रीहिधान्यं शूकधान्यं तृतीयकम्। शिम्बीधान्यं क्षुद्रधान्य-मित्युक्तं धान्यपञ्चकम्॥

कलम, कलामक, रक्तशालि, दीर्घशूक, पुण्ड्र, महिषमस्तक, पूर्णचन्द्र, महाशालि, पुण्डरीक, प्रमादक, पुष्पाण्डक, शीतभीरु, काञ्चन, शकुनीहृत, पाण्डुगौर, शारिवाख्य, रोध्रपुष्प, सुगन्धक, हायन, दीर्घलात, महादूषक और दूषक ये छब्बीस नाम शालिचावलभेद के हैं—ये मीठे, चिकने व बलकारी होकर मलको बाँधते हुए पित्त को विनाशते हैं तथा अल्पवात व अल्पकफ़वाले होकर मूत्र को उपजाते हुए हलके व ठण्ढे रहते हैं उन में से लालशाली उत्तम होकर बल को करता व वर्ण को निखारता हुआ त्रिदोषों को जीतता है तथा आँखों के लिये हित पहुँचाता, मूत्र को उपजाता व बिगड़े स्वर को सुधारता व वीर्य को पैदा करता, प्यास और ज्वरको विनाशता हुआ विष और घावोंको हरता है और इससे कुछेक अल्पगुणोंवाले अन्य शाली होते हैं तथा महाशालि पुरुषार्थ को उपजाता व बलको देता हुआ लाल शालि के गुणों के समान गुणोंवाला होता है॥

अब साठीआदि के नाम व गुण कहते हैं।

कार्मुक, पीत, आमोद और मुकुन्द ये चारों हलके होकर पुरुषार्थ को बढ़ाते हैं तथा महाषष्टिक, केदार, पुष्पांकुर और वक आदि ये साठी चावल के भेद हैं—ये मीठे, ठण्ढे व हलके होकर मल को बाँधते हुए वातपित्त को शान्त करते हैं तथा शालीगुणों के समान गुणोंवाले

१ "गर्भस्था एव ये पाकं यान्ति ते षष्टिका मताः। षष्टिरात्रेण पर्यन्ते षष्टिकास्ते उदाहृताः॥" बोने के समय से लेकर जो साठ रात में पकते हैं उनको साठी आचार्यों ने कहा है॥

कहाते हैं और उन्होंमें से साठी चावल उत्तम, हलका व चिकना होकर त्रिदोषों को जीतता है तथा पाक में मीठा, कोमल (नरम) होकर मलको बाँधता व स्थिरता को करता हुआ बल को देता है तथा इससे अल्पगुणवाले साठीके चावल लालशालिके समान गुणवाले कहाते हैं॥

अब व्रीहि के नाम व गुण कहते हैं।

कृष्णव्रीहि, तुरितक, कुक्कुटाण्डक, पाटल, शालायु, राजीवाक्ष, नन्दी और जन्तुमुख आदि ये नाम व्रीहिभेद के हैं—ये मीठे व ठण्ढे होकर साठी गुणों के समान गुणवाले कहाते हैं और इन्होंमें से कृष्णव्रीहि उत्तम कहाता है इससे परे व्रीहि अल्पगुणोंवाले होते हैं और भुनेहुए शालि हलके व रूखे होकर कफ को हरते हैं तथा स्थूलजशालि मीठे होकर पित्तकफ को हरतेहुए वायु और अग्नि को देते हैं और केदारशालि वातपित्तनाशक व भारी होकर कफ व पित्त को देते हैं तथा रौप्य व अतिरौप्य ये दोनों हलके होकर मूत्र को उपजाते हुए श्रेष्ठ गुणोंवाले कहाते हैं और छिन्नरूढ़शालि ठण्ढे व रूखे होकर पित्त को नाशते हुए शीघ्रही दोषों को पकाते हैं तथा पुराना चावल अन्धों का नेत्र कहाता है जोकि बड़े यत्न से पानी में भिगोया व भलीभाँति घाम में सुखाया हुआ रूखा होकर हलका रहता है तथा मन्दाग्नि को जगाता हुआ पाचक व बुद्धिवर्धक होकर वायु व कफ को हरता है और साठी चावल का भी व्रीहित्व कहा है व शीघ्र पाक से अलग रहता है॥

अब गेहूँ के नाम व गुण कहते हैं।

गोधूम, सुमन, क्षुद्र, मधूली, रूपशीतला, नन्दीमुख, अल्पगोधूम, लोकेशी और पासिका ये नव नाम गेहूँ के हैं-यह मीठा, ठण्ढा, वातपित्तहारी व भारी होकर कफ और वीर्य को देता है तथा बलदायक व चिकना होकर टूटे हुए को जोड़ता हुआ दस्तावर होता है और जीवन व धातुवर्धक होकर वर्ण को निखारता व भिरनेवाला होता व रुचि को उपजाता हुआ स्थिरता को करता है तथा (मधूली) ठण्ढी व चिकनी होकर पित्त को विनाशती हुई हलकी रहती है और (नन्दीमुख नामक) गेहूँ वीर्य को उपजाता व धातु को बढ़ाता हुआ पथ्य होता है इस गेहूँ से क्षुद्र गेहूँ में बहुत थोड़े गुण रहते हैं॥

अब यव के नाम व गुण कहते हैं।

यव, शुचि, तीक्ष्णशूक, निशूक और अतियव ये पाँच नाम यव (जव) के हैं-यह कसैला, मीठा व ठण्ढा होकर पित्त, कफ और लोहू को जीतता है तथा घावों में तिलों के समान पथ्य व रूखा होकर बुद्धि और मन्दाग्नि को बढ़ाता है व लेखन होकर बन्धा को करता व बिगड़े स्वर को सुधारता हुआ प्रमेह और प्यास को हरता है तथा बहुत वात व मल को धारता व स्थिरता व वर्णको करता हुआ पिच्छिलरूपसे रहता है और इस से कुछेक गुणों से अल्पगुणोंवाला अतियव कहा है॥

अब शिम्बी के नाम व गुण कहते हैं।

शिम्बी, मूँग, चना, उड़द, मटर, मोठ, मसूर, चौला, गवार और त्रिपुट आदि 'वैदल' कहाते हैं-ये मीठे, रूखे,

कसैले व पाक में कड़ुवे होकर बादी को उपजाते, कफ-पित्त को विनाशते व मलमूत्रावरोधको करते हुए ठण्ढे रहते हैं तथा मूँग और मसूर के विना अन्य सब पेटको फुलाते हैं और शिम्बीधान्य विष्टम्भी (क़ाबिज़) होकर प्रमेह व दृष्टि को हरतेहुए वातपित्त को करते हैं तथा विशद, भारी, हृदय के लिये हितदायक व रूखे होकर पाक में कड़ुवे होते हैं और सफ़ेद व नहीं सफ़ेद इन भेदों से वे अनेक भाँति के कहे हैं॥

अब मूँग व वनमूँग के नाम व गुण कहते हैं।

मुद्ग, बलाढ्य, मङ्गल्य, हरित, शारद, पीत, प्रचेत, बलाक और माधव ये नव नाम मूँग के हैं तथा वनमुद्ग, तुबरक, राजमुद्ग और खण्डक ये चार नाम वनमूँग के हैं—यह रूखी, हलकी व क़ाबिज़ होकर कफपित्त को हरतीहुई ठण्ढी रहती है तथा इन्हीं गुणोंवाली मूँगभी कहाती है जोकि स्वादिल होकर अल्पवात को करती व आँखों के लिये हित को पहुँचाती हुई बिगड़े वर्ण को सुधारती है तथा इन्होंमें हरी मूँग उत्तम कहाती है और इसका साग भी बहुतही तीखा होकर उत्तम कहा है॥

अब उड़द व लोबिया के नाम व गुण कहते हैं।

माष जीर्णकर, धारी, धवल और राजमाषक ये पाँच नाम उड़दके हैं—यह भारी, पाकमें मीठा व चिकना हो-कर पुरुषार्थको जगाताहुआ वायुको हरताहै तथा गरम, तृप्तिकारी व बलदायक होकर वीर्य को उपजाता हुआ धातुको बढ़ाता है और मूत्र, कफ व स्तनोंको भेदता व पित्तकफ को देता हुआ गुदकील, लकवा, दमा और

पक्तिशूल को विनाशता है तथा राजमाष (लोबिया) स्वादिल, रूखा, कसैला व हलका होकर मल को बाँधता हुआ वात, कफ, दूध, बहुत मल और लोहू को देता है ॥

अब मसूर के नाम व गुण कहते हैं ।

मसूरिका, मसूर, निष्पाव और वल्लक ये चार नाम मसूर के हैं—यह बादी को करता व मलको बाँधता हुआ कफपित्त को हरता है तथा भारी होकर छर्दि को जीतता, पाक में मीठा रहता व क्रिमियों को करता हुआ ज्वर को विनाशता है तथा निष्पाव (मोठ, भटवाँसु,) वायु, पित्त-रक्त, मूत्र व दूध को उपजाता हुआ दस्तावर होता है और विदाही, गरम व भारी होकर कफ और सूजन को करता हुआ वीर्य को विनाशता है ॥

अब मटर के नाम व गुण कहते हैं ।

वर्तुल, सतीन, हरेणु और स्वल्पवर्तुल ये चार नाम मटर के हैं—यह ठण्ढा व क़ाबिज़ होकर कफपित्त को हरता हुआ हलका रहता है तथा पाक में मीठा व रूखा कहाता है और येही गुण हरेणु में भी रहते हैं ॥

अब खेसारी (चटरी=दुबिया) के नाम व गुण कहते हैं ।

कलाय, खण्डिक, त्रिपुट और क्षुद्रखण्डिक ये चार नाम चटरी के हैं—यह कफपित्त को विनाशती व मल को बाँधती हुई ठण्ढी होकर अत्यन्त बादी को उपजाती है और ऐसेही गुण त्रिपुट में भी होते हैं तथा इसका साग कफपित्त को जीतता है ॥

अब चना के नाम व गुण कहते हैं ।

चणक, हरिमन्थ, वाजिमन्थ और जीवन ये चार नाम

चना के हैं—यह ठण्ढा व रूखा होकर रक्तपित्त व कफ को विनाशता हुआ हलका रहता है तथा कसैला व विष्टम्भी होकर वायु को उपजाता हुआ कोढ़ को नाशता है ॥

अब मसूरभेद के नाम व गुण कहते हैं ।

मसूकारि, मसूरि, मङ्गल्या और पाण्डुरापल ये चार नाम मोठभेदके हैं—यह पाकमें मीठी, मलबन्धिनी, ठण्ढी व हलकी होकर कफ व पित्तरक्तको जीततीहुई बलको देती है और इसका साग भी हलका होकर तीखा होता है ॥

अब कुलथी के नाम व गुण कहते हैं ।

कुलत्थ, चक्रक, चक्र, कुलाल, वनज, अपरा, दृक्प्रसादा, चक्षुष्या, कुलत्थिका, कुलाली, लोचनहिता, कुम्भकारी और मलापहा ये तेरह नाम कुलथी के हैं—यह पाक में कडुवी व कसैली होकर रक्तपित्त को दूर करती है तथा हलकी, दाहकारिणी व वीर्य में गरम होकर दमा, खाँसी, कफ, वायु, हिचकी, पथरी, वीर्यरोग, नेत्ररोग, अफरा और पीनस को हरती हुई पसीना को रोकती है व गोला, मेदोरोग और क्रिमियों को विदारती हुई दस्तावर होती है तथा वनकुलथी विशेषता से ठण्ढी होकर नेत्ररोग और विष को विनाशती है ॥

अब तिल व वन्यातिल के नाम व गुण कहते हैं ।

तिलपुष्प, तैलफल, तिलपिञ्ज, सित, जातिल और वनजात ये छः नाम तिल व वन्यातिल के हैं—यह कसैला, मीठा, तीखा व रसमें कडुवा होकर मल को बाँधता है तथा भारी, स्वादिल व चिकना होकर रक्त, कफ व पित्त को उपजाता है और बलको करता व बालों को

बढ़ाता हुआ ठण्ढे स्पर्शवाला व बिगड़ी खाल का सुधा-रनेवाला होकर घावों को अच्छा करता है तथा वन्य-तिल अल्पमूत्रकारी व धातुनाशी होकर मन्दाग्नि को जगाता हुआ बुद्धिको देता है तथा काले तिल सब तिलों में उत्तम होकर वीर्य को उपजाते हैं व सफ़ेद तिल मध्यम कहाते हैं और लाल आदि तिल पण्डितों ने अत्यन्त हीनगुणवाले कहे हैं ॥

अब अरहर के नाम व गुण कहते हैं।

आढकी, तुवरी और शणपुष्पिका ये तीन नाम अरहर के हैं—यह मलको बाँधती हुई ठण्ढी व हलकी होकर कफ, विष और रक्तरोगको जीतती है ॥

अब अलसी के नाम व गुण कहते हैं।

अलसी, मसृणा, नीलपुष्पा, चेलूत्तमा और क्षुमा ये पाँच नाम अलसी के हैं—यह वीर्य व दृष्टिको विनाशती हुई चिकनी होकर वातरक्तको जीतती व भारी रहती है ॥

अब कुसुम्भ के नाम व गुण कहते हैं।

कुसुम्भ, वार्धकी, पीत, अलक्त और वस्त्ररञ्जिनी ये पाँच नाम कुसुम्भ के हैं तथा किरटी, लध्वी और शुद्धपयोत्तरा ये तीन नाम कुसुम्भबीज के हैं—यह वात को उपजाता हुआ मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त और कफ को विनाशता है तथा इसके बीजमें अलसी के समान गुण होते हैं परन्तु विशेषता से विष को दूर करता है ॥

अब सरसों व राई के नाम व गुण कहते हैं।

सर्षप, कटुक, स्नेह, भूतघ्न, रक्षिताफल, तुतुभ, सिद्धार्थ और श्वेतसर्षप ये आठ नाम सरसों केहैं

तथा राजिका, वासुरी, राजी, सुतीक्ष्ण और कृष्णसर्षप ये पाँच नाम राई के हैं इन दोनों में से सरसों कफवातहारी, तीखे व गरम होकर रक्तपित्त को करते रूखे रहते व अग्नि को देतेहुए खुजली, कोढ़ और कोठेके क्रिमियों को हरते हैं और येही गुण राई में भी जानने चाहियें परन्तु यह विशेषतासे तीखी व तीव्र कहाती है॥

अब सन के नाम व गुण कहते हैं।

शण, मातुलानी, जन्तुतन्तु और महाशण ये चार नाम सन के हैं—यह ठण्ढा व भारी होकर मलको बाँधता है तथा इसका फूल भी प्रदर और रक्तरोगको जीतता है॥

अब तृणधान्य के नाम व गुण कहते हैं।

कंगू, श्यामाक, नीवार वरक, उद्दाल, नर्तक, वरट्टिका, तोदपर्णी, कोद्रव, मधूलिका, नन्दीमुख, वेणुयवा, प्रियंगु, कोरदूषक, गवेधुका, नल, नाली, मुकुन्द और वारिकादि ये उन्नीस नाम तृणधान्य के हैं—यह हलका, मीठा, पाक में कडुवा, लेखन, रूखा व गरम होकर बन्धाको करता हुआ वातपित्तको कुपित कराता है तथा पीततण्डुलिका, कंगु, प्रियंगु, कर्कटी, सितकंगु, मुसटी, रक्तकंगु, शोधिका, चीनाक, काककंगु, श्यामाक, शणकंगुक और शालि आदि ये तेरह नाम ककुनीभेद के हैं तथा कोद्रव, कुरस, कोरदूष, उद्दाल और वनकोद्रव ये पाँच नाम कोदों के हैं इन्होंमें से ककुनी पित्त को जीतती, पुरुषार्थ को जगाती व टूटे हुए को जोड़ती हुई भारी रहती है तथा सावाँ सुखानेवाला, ठण्ढा व रूखा होकर पित्तकफ को विनाशता है और कोदों ठण्ढा व

मल को बाँधता हुआ विष, पित्त व कफको जीतता है ॥

अब नीवार के नाम व गुण कहते हैं।

नीवार, उटिका, नाडी, मुनिव्रीहि और मुनिप्रिय ये पाँच नाम नीवार (तिन्नी) के हैं—यह ठण्ढा व ग्राही होकर पित्तको विनाशता हुआ कफ वायुको करता है ॥

अब ज्वार के नाम व गुण कहते हैं।

यावनाल, देवधान्य, जुह्लोलि, जुह्लल और अनल ये पाँच नाम ज्वार के हैं—यह ठण्ढी व मीठी होकर बादी को उपजाती हुई कफपित्त को जीतती है ॥

अब गवेधुका (गोहुँवाँ=सेहुँवाँ) के नाम व गुण कहते हैं।

गवेधुका, कर्षणी, गोजिह्वा और आकर्षिणी ये चार नाम गोहुँवाँ के हैं—यह कड़ुवा व मीठा होकर दुबला करता हुआ कफ को विनाशता है ॥

अब धान्यों में विशेषता कहते हैं।

सामर्थ्यरहित, व्याधिपीड़ित, विना समय भूमि से अन्य जगह में उपजा, नया व कीड़े आदिकों से युक्त जो अन्न होता है वह गुणकारी नहीं माना जाता है तथा नया अन्न अभिष्यन्दी भारी व मीठा होकर कफ को देता है और एक साल के बाद समस्त धान्य भारीपन को छोड़देते हैं परन्तु अपने अपने वीर्यको नहीं त्यागते हैं बरन क्रमसे दो वर्ष के बाद वीर्यको भी त्याग देते हैं और इनमें भी जव, गेहूं, तिल और उड़द ये नवीनही हितकारी होते हैं तथा पुराने विरस व रूखे होकर यथार्थ गुण को नहीं करते हैं ॥

---

१ "पुराणयवगोधूमक्षौद्र जाङ्गलशूल्यभुगिति" यह वाग्भट ने कहा है ॥

दो० । नृपमुखतिलककटारमल, मदनमहिप जो कीन ।
ताही मदनविनोद में, दशमवर्गकहिदीन॥१॥

इति श्रीमदनपालविरचिते निघण्टौ श्रीशक्तिधरनिर्मितायां भाषाव्याख्यायां शाल्यादिर्दशमो वर्गः ॥ १० ॥

दो० । भाषब ग्यरहें वर्ग महँ, आहारादिक नाम ।
ऐसेही उन सबन के, भणतअहौंगुणग्राम॥१॥

अब आहार के नाम व गुण कहते हैं ।

आहार, भोजन, जग्धि और नित्यशोजीवन ये चार नाम आहार (भोजन) के हैं–यह शीघ्रही बलकारी होकर तृप्तिको पहुँचाता व देहको धारता हुआ पराक्रम, तेज, स्वर, उत्साह, धैर्य, स्मरण और बुद्धिको देता है ॥

अब ओदन (भात) के नाम व गुण कहते हैं ।

भक्त, अन्धस्, भिस्सा, अहंकार, दीदिवि और ओदन ये छः नाम भात के हैं–यह अग्निकारी व पथ्यरूप होकर तृप्ति को पहुँचाता व मूत्र को उपजाता हुआ हलका रहता है तथा सुन्दर धोया व भलीभाँति निचोड़ा हुआ भात गरम व स्वच्छ होकर गुणोंवाला मानाजाता है तथा नहीं धोया व नहीं निचोड़ा हुआ भात ठण्ढा व भारी होकर वीर्य को पोषता व कफ को करता है तथा भुना हुआ चावल रुचिकारी व सुगन्धित होकर कफ को जीतता व हलका रहता है और मांस, फल, दूध, वैदल (उड़द, मूँग आदि अन्न) व खट्टारस आदि व स्नेह तथा सागों से साधन किया भात बहुत भारी व वीर्यपुष्टिकारी होकर बलको धारता हुआ कफ को देता है तथा मांसरस में पकाया भात भारी, पुरुषार्थ-

कारी व बलधारी होकर वातज्वर को विनाशता है वा घोलसंज्ञक भात ग्रहणी, बवासीर व परिश्रम को हरता हुआ पाचक व ठण्ढा रहता है तथा बहुत गरम स्वभाववाले प्राणियों के लिये बलहारी, ठण्ढा व गरम होकर विलम्ब में जरता है और बहुत गला हुआ भात ग्लानिकारी होता है तथा किनकों से युक्त भात बड़ी देर में जरता है या पका हुआ भात मन को प्रसन्न करता हुआ बल, पुष्टि, उत्साह, हर्ष व सुख को उपजाता व मीठा रहता है तथा कच्चा भात उलटे स्वादवाला कहाता है ॥

अब पेयादिकों के लक्षण व गुण कहते हैं।

छःगुने जल में साधन कीहुई जो पतली रहजाती है उसे यवागू (लप्सी व गीला भात) कहते हैं और चौगुने पानी में जो पकाई, गाढ़ी व किनकोंवाली रहती है उसको वैद्यों ने विलेपी (लप्सी) कहा है व चौदह गुने पानी मे पकाई किनकोंसमेत जो होती है उसे 'पेया' कहते हैं व चौदहगुने पानी में पकाया जो किनकों से रहित होजाता है वह मण्ड (माँड़) कहाता है इन्होंमें से 'यवागू' मलबन्धिनी होकर प्यास व ज्वर को विनाशती हुई बस्ति को शोधती है तथा विलेपी मन्दाग्नि को जगाती, बल को धारती व हृदय को हित पहुँचाती व मल को बाँधती हुई हलकी रहती है तथा घाव व नेत्ररोगवालों के लिये पथ्य होकर तृप्ति को करती हुई प्यास और ज्वर को विनाशती है तथा पेया कुक्षिशूल, जी घुमराना, ज्वर, स्तम्भ व अतीसारको जीतती रुचि व अग्नि

को करती हुई हलकी होकर मलदोष व पसीना को अनुलोमित करती है तथा माँड़ ग्राही, हलका व ठण्ढा होकर मन्दाग्नि को जगाता हुआ धातुओं को समान करता है अथवा नाड़ी के स्रोतों को नरम करता हुआ पित्तज्वर, कफ और परिश्रम को विनाशता है ॥

अब याव्यमण्ड व लाजमण्ड के गुण कहते हैं ।

भुने यवों से साधन किये हुए को 'याव्यमण्ड' व भुने शालिचावलों से साधन किये को 'लाजमण्ड' कहते हैं इन दोनों में से याव्यमण्ड' हलका होकर मल को बाँधता हुआ शूल, अफरा व त्रिदोषों को हरता है तथा नवीन ज्वर में भी यह परवल व पीपल से युक्त होकर पथ्य कहाता है और 'लाजमण्ड' हलका व मलबन्धी होकर शीघ्रही पाचन व दीपन होता है ॥

अब अठगुने माँड़ के गुण कहते हैं ।

कुछेक भुने हुए चावलों के साथ आधी मूँग को पकावे उसमें हींग, सेंधानमक, धनियां, तेजपात, सोंठ, मिरच और पीपलको मिलावे वह अठगुना मण्ड जानना चाहिये जोकि ज्वर व त्रिदोषों को हरता, रागको उपजाता हुआ भूख को लगाता है तथा प्राणदायक होकर मन्दाग्नि को जगाता हुआ ठण्ढा व हलका रहता है ॥

अब मूँग आदि यूष के गुण कहते हैं ।

अठारह गुने जलमें पकाये हुए मूँग आदिकों का यूष कहाता है-यह उत्तम, अग्निप्रकाशक, ठण्ढा व हलका होकर घाव, ऊपरी जन्तुरोग, दाह, कफ, पित्तज्वर और रक्तरोग को हरता है ॥

अब अनार, आमलायूष व मूँग, आमलायूष के गुण कहते हैं।

अनार व आमला का यूष पित्तवात को हरता हुआ हलका रहता है तथा मूँग व आमला का यूष भेदी व कफपित्तजयी होकर प्यास व दाहको शान्त करता हुआ ठण्ढा रहता है तथा मूर्च्छा, परिश्रम व मदको दूर करता है॥

अब कुलथीयूष के व सूप्यमूलकयूष के गुण कहते हैं।

कुलथी का यूष गोला, बवासीर, कफ, वात, पथरी, शर्करा, तूनी, प्रतूनी व मेदोरोग को नाशता व अग्नि को करता हुआ दस्तावर होता है तथा दाल व मूली का यूष गलग्रह, कफ, ज्वर, दमा, पीनस, खाँसी, मेदोरोग, अरुचि और क्रिमियों को हरता है॥

अब चनायूष व मोठयूष के गुण कहते हैं।

चना का यूष गरम नहीं होकर कसैला व हलका रहता हुआ रक्तपित्त, पीनस, खाँसी और पित्तकफ को विनाशता है तथा मोठ का यूष ग्राही पित्तविदारी व कफज्वरहारी व हलका होकर भलीभांति तृप्तिको करता हुआ पथ्य होता है व हृदयका प्यारा होकर पीनस और खाँसी को जीतता है॥

अब किये व नहीं किये यूष के गुण कहते हैं।

नमक व तेल के साथ साधन किया कृतयूष भारी कहाता है तथा नमक व तेलसे रहित किया अकृतयूष हलका होता है॥

अब यूषों के सामान्य गुण कहते हैं।

गोरस, काँजी व खट्टे रसादिकों से मिले यूष उत्तरोत्तर बहुत भारी होते हैं तथा बादी को हरते हुए रुचि

को करते हैं अथवा जिन अन्नों व औषधों से वैद्यों ने मण्डादि बनाये हैं उन्हींके गुणों का विचारकर उन्हीं गुणों को कहै ॥

अब सूप्य (दाल) के नाम व गुण कहते हैं।

सूप्य, सूप्यक ये दो नाम दाल के हैं भुने व छिलकों रहित मूँग व उड़द आदिकों से की दाल कहाती है-यह विष्टम्भी होकर रूखी होती है तथा खटाई रहित अतीव रूखी व छिलकारहित भुनाकर पकाई हुई बहुतही हलकी होजाती है ॥

अब कृसरा (खिचड़ी) व क्षिप्रा के गुण कहते हैं।

कहीं उड़दोंके साथ व कहीं तिलों के साथ चावलों से खिचड़ी होती है यह बलको करती हुई मलको बाँधती है तथा चावल व मूँगआदि दालों से सिद्ध हुई खिचड़ी वीर्य को उपजाती व बल को धारती हुई भारी रहती है तथा पित्त व कफ को देती व विलम्ब में जरती और पुष्टि, विष्टम्भ व मलको करती हुई बादी को विनाशती है तथा येही गुण क्षिप्रा में भी रहते हैं और वह अच्छे धान्यों के समान गुण करती है ॥

अब खीर के नाम व गुण कहते हैं।

क्षीर, परमान्न, पायस और क्षैरेयी ये चार नाम खीरके हैं-' इसके बनाने की विधि यह है " कि निष्प्रनिया अधौटे दूध में घी के भुने चावल डालके पचावे इसमें सफ़ेद बूरा व गौ का स्वच्छ घी मिलावे तो वह क्षीरिका (खीर) होती है-यह विलम्बमें जरती, बल को करती व धातु को पोषती हुई भारी व विष्टम्भिनी

रसाला, शिखरा, मार्जिका व माञ्जिका ये चार नाम इसी उक्त रसाला के हैं-यह वीर्य को उपजाती, बलको धारती व रुचि को देतीहुई वातपित्त को विदारती है तथा चिकनी व भारी होकर विशेषता से नासिकारोगों को विनाशती है॥

अब पना के गुण कहते हैं।

दाख, इमली और फालसादिकों के रस में खाँड़ आदिकों से संयुक्त तथा मिरच, अदरक, कपूर, दाल-चीनी, इलायची, तेजपात और नागकेसर आदिकों से मिलाया हुआ पना कहाता है अम्ल और अनम्ल इन भेदों से पना दो भाँति का होता है तथा दाख, खजूरिया, कम्भारी, महुआ और फालसों से युत व सूर्य और चन्द्रमा से अधिवासित किया हुआ पञ्च-सारनामक पना कहाजाता है-यह मूत्रकारी व हृदय का प्यारा होकर तृप्तिको पहुँचाताहुआ परिश्रम (थका-वट) को हरता है और यह जिन जिन द्रव्यों से बनाया गया हो उन्हींके गुरु व लघु आदि गुणों को वैद्य लोग कहें तथा पञ्चसारनामक पना पिड़िका, प्यास, दाह और परिश्रम को विनाशता है और दाखों (मुनक्कों) का पना परिश्रम, दाह, रक्तपित्त, ग्लानि (हर्षक्षय) व प्यास को हरताहुआ रूखी प्रकृतिवालों के लिये कोमल व हृदय का प्यारा होकर पाचक व बलदायक कहाता है तथा इमली का पना प्यास, क्रिमिरोग, दाह और परिश्रम को विनाशता है॥

अथ सट्टक (शर्बत) के गुण कहते हैं।

घी से रहित दही को मथ खाँड़ मिला पकावे उसमें सोंठ, मिरच, पीपल, अनार और जीरा को मिलावें तो उसे वैद्यों ने 'सट्टक' कहा है—यह रुचिदायक होकर बिगड़े स्वर को सुधारता व पित्तवात को हरताहुआ भारी रहता है तथा मन्दाग्नि को जगाता व तृप्ति को पहुँचाता हुआ बलदायक होकर परिश्रम, ग्लानि और प्यास को दूर करता है॥

अथ मण्डक (डबलरोटी) के गुण कहते हैं।

तुप की अग्नि, पुराना कपड़ा, दाग्व और कटेली में पकाये हुए मण्डक आदि क्रम से भारी होकर धातु को बढ़ाते हैं या सुन्दर व महीन तथा कपूर आदिकों में पकाया हुआ 'मण्डक' उत्तम कहाता है वही यदि कुछेक मोटा होजावे तो उसे विद्वानों ने 'पूपालिका' माना है तथा अङ्गारों पे पकाया हुआ वही अङ्गारकर्कटी (बाटी या लिट्टी) जानना चाहिये तथा बहुतही गरम मण्डक पथ्य कहाता है और वही ठण्ढा किया हुआ भारी होता है और 'अङ्गारमण्डक' मलबन्धी व हलका होकर त्रिदोषों को हरता है तथा पोलिका (पूरी=लुचई) कफ को करती, बल को देती, पित्त को उपजाती व वादी को हरती हुई भारी रहती है तथा अङ्गारकर्कटी (लिट्टी=

१ [illegible] ॥ [illegible] ॥

२ [illegible] ॥

मौंरिया) बल को देती, धातु को बढ़ाती व वीर्य को उपजातीहुई हलकी रहती है तथा मन्दाग्नि को जगाती हुई कफ, हृद्रोग, पीनस, दमा और बादी को जीतती है॥

अब शालिपिष्टरचित भक्ष्यों के गुण कहते हैं।

शालीचावलों की पीठी से बने भक्ष्यपदार्थ—अत्यन्त बलदायक नहीं होकर विशेषता से दाह करते हैं तथा वीर्य को नहीं पुष्ट करते हुए भारी होकर कफ व कफ-पित्त को कोपित कराते हैं॥

अब गेहूँ आदिकों से बनाये भक्ष्यों के गुण कहते हैं।

गेहूँ से बनाये भक्ष्यपदार्थ—बलदायक होकर पित्त-वात को विनाशते हैं तथा वैदलसंज्ञक अन्नों से बने भक्ष्य—भारी व कसैले होकर ठण्ढे रहते हैं तथा उड़द की पीठी से रचे भक्ष्य—बलकारी होकर पित्तकफ को देते हैं॥

अब गुड़ से मिले भक्ष्यों के गुण कहते हैं।

अन्नों के गुणों का विचार कर अन्य भक्ष्यों को भी बना लेवे उनमें गुड़ के भक्ष्य भारी होकर बादी को हरते हुए कफ और वीर्य को उपजाते हैं॥

अब घृतपक्व व तैलपक्व भक्ष्यों के गुण कहते हैं।

घी में पकाये भक्ष्यपदार्थ बलकारी होकर पित्त और कफ को विनाशते हैं तथा तैल में पकाये भक्ष्य दृष्टि और बादी को हरते हुए गरम होकर रक्तपित्त को दूषित कराते हैं॥

अब दूध के संयोग से बने भक्ष्य के गुण कहते हैं।

दूध में भिगोये गेहूँ और शालीचावलों की पीठी से

वनाये भक्ष्यपदार्थ वातपित्तहारी व हृदय के प्यारे होकर वीर्य और बल को देते हैं॥

अब घृतपूर (घेवर) के गुण कहते हैं।

अन्न के गुणोंका विचारकर अन्य भक्ष्योंका भी साधन करे तथा गेहूँकी मैदा को भलीभाँति छान दूध से मर्दित व घी से विस्तारित करे तदनन्तर सफ़ेद खाँड़ कपूर और मिरचके मिलानेसे यह घेवर कहाताहै अथवा मैदाको दूध, नारियल और मिश्री आदिकों से मर्दित कर पके घीमें भिगोवे तो वह दूसरा घेवर कहाजाता है- यह भारी व वीर्यपुष्टिकारी व हृदयको हितदायक होकर पित्तवात को नाशता, शीघ्रही प्राणों को देता, बल को करता व घावोंको जीतताहुआ धातुओंको वढ़ाता है॥

अब संयाव (गूझा=गुझिया) के गुण कहते हैं।

मैदाको घी में भूनकर उसको उसनले फिर टिकिया बनाय उन्होंमें मिरच, इलायची, लौंग, कपूर इन्होंका चूर्ण मिलाय सुन्दर घी में तले फिर पीछे पकीहुई खाँड़ की चाशनीमें धरे इसको वैद्योंने संयाव कहा है अथवा सुन्दरी मैदाको शहद व दूधसे माड़, घी में भून व दुगुनी खाँड़ मिलाय पकाय नये घड़ामें घाले तदनन्तर मिरचों का चूर्ण, इलायची और मिश्रीके चूर्णसे युक्तकर कपूरसे धूपित करे तो यह संयाव अमृत के समान कहाता है॥

अब मधुशीर्षक (खाजा) के गुण कहते हैं।

मैदाको घी और पानी से माड़कर महीन पूरी बना घीमें पकाय खाँड़से गलेफे तो यह 'मधुशीर्षिका' कहाती है अथवा मैदाको घीसे कोमल माड़ महीन पूरी बनाय

उसमें बिजौरा की छाल और अदरकको भर गोल पुआ बना सुगन्ध और केसर से युक्तकर घीमें पकाय खाँड़ से गलेफे तो उसे 'मधुशीर्षक' कहते हैं॥

अब मालपुओं के गुण कहते हैं।

मैदा में गुड़ और पानी मिला भलीभाँति माड़कर कोमल व गोल मालपुओं को घी में विस्तृतकर पकावे अथवा शालीचावलों की पीठी को दही से मथकर घी में पकावे पीछे खाँड़ की चाशनी में गलेफे तो उसे दही के मालपुवे कहते हैं मधुशीर्षिका, संयाव और दहीके मालपुवे आदि भारी, धातुवर्धक व हृदयको हितदायक होकर पुरुषार्थ को बढ़ातेहुए पित्तवात को विनाशते हैं तथा संस्कारके भेदसे ये अनेक प्रकार के होकर पूर्वोक्त गुणों को देते हैं॥

अब विस्यन्द के गुण कहते हैं।

दही व दूधको समान भाग लेकर पकावे जब आधा भाग शेष रहजावे तो लालशालि के चावल, तिल, पिस्ते और पनस आदि बीजों की मुष्टि मिलाय पकावे तथा दूध के समान घी व उतनीही खाँड़ मिला सोंठ, मिरच और पीपल से संयुक्तकर कपूर से अधिवासित करे—यह विस्यन्दननामक देवलोक में भी दुर्लभ है क्योंकि पकेहुए में भी चारोंतरफ़ घी झिरता रहता है इसलिये सूपशास्त्र के ज्ञाता विद्वानोंने विधि के समान कहा है—यह धातुवर्धक व हृदय का प्यारा होकर पित्त और बादी को हरताहुआ भारी रहता है॥

अब लप्सी के गुण व फेनी के नाम व गुण कहते हैं।

मैदा को गरम घी में भून पीछे से बूरा मिलाय पानी, गिरी और दूध आदिकों से तथा इलायची आदिकों से युक्त करे इसे वैद्योंने 'लप्सी' माना है यह धातु को बढ़ाती व पुरुषार्थ को उपजाती हुई वातपित्त को हरती व भारी रहती है तथा फेनिका, पुटिनी और शुभ्रा ये तीन नाम फेनी के हैं यह वातपित्त को हरतीहुई हलकी रहती है और फेनी आदिकों के लक्षण सूपशास्त्र से विचार करे॥

अब लड्डू के नाम व गुण कहते हैं।

मोदक, लड्डुक ये दो नाम लड्डुओं केहैं उनको वैद्यों ने अनेकप्रकार से माना है परन्तु वे जब अम्लत्व (खट्टे-पन) को प्राप्त होजावें तो गेहूँ की मैदा मिलावे फिर दही, दूध, मुठिया मैदा, उड़द की पीठी, ज़िमींक़न्द, अदरक, कुम्हड़ा, शालूक मांस और मछली आदिकों के मिलाने से सूपशास्त्र के विचारद्वारा वे अनेक प्रकार के होते हैं इसलिये बुद्धिमान् वैद्य द्रव्यों का विचारकर उनके गुणों को भी बतावे ये विलम्ब में पकते व पुरुषार्थ को बढ़ातेहुए बलदायक होकर पित्तवात को हरते हैं॥

अब उड़दबड़े व मूँगबड़े के गुण कहते हैं।

उड़द व मूँग आदिकों की पीठी (धोई) से बनाये बड़े आदि कडुवे होते हैं इसलिये उनके कारण गुणों को जानकर वैद्यलोग उनके गुणों को भी बतावें तथा उड़दोंका बड़ा हृदयका प्यारा व बलदायक होकर बादी को हरताहुआ भारी रहता है तथा घोल बड़ा विष्टम्भी होकर विशेष दाहको करताहुआ बादी को विनाशता है॥

अब काँजीबड़े व यवकाँजीबड़े के गुण कहते हैं।

काँजी का बड़ा दृष्टि को हरता व दोषों को उपजाता हुआ भारी रहता है तथा जवों की काँजी का बड़ा रुचि-दायक होकर पित्त को उपजाता हुआ कफवात को जीतता है तथा बड़ी वीर्य को उपजाती हुई रूखी व विष्टम्भिनी होकर कफवात को करती है॥

अब सुहारी व जलेबी के गुण कहते हैं।

सुहारी भारी होकर पुरुषार्थ को जगाती व रुचि को देतीहुई पित्त को विनाशती है तथा एकसौ अट्ठाईस तोलेभर शुद्ध मैदा लेकर चौंसठ तोलेभर गेहूँका आटा मिलाय दूध से मथे जबतक खट्टा न होजावे तबतक धरा रक्खे बाद छेदरहित नारियल के साफ़ बर्तन में डाल घुमाय तचे घी में धीमी आगि से पकावे पीछे कपूर से सुवासित किये पात्र में धरे फिर भलीभाँति पकी कङ्कण समान आकारवाली ज़लेबी को खाँड़ की चाशनीमें डाले इसे वैद्योंने 'राजवल्लभा' कहा है—यह नाम से ही पुष्टि, कान्ति और बलको देती, धातु को बढ़ाती व पुरुषार्थ को जगाती हुई हृदय की प्यारी होकर इन्द्रियों को तृप्त करती है॥

अब कुल्माष, सत्तू व मन्थादिकों के गुण कहते हैं।

कहीं आधे पकेहुए गेहूँ व यवादिकों को वैद्योंने कुल्माष माना है ये भारी व रूखे होकर बादी को उपजाते हुए मल को भेदते हैं तथा नये, भूसीरहित भुनाये जव-चून को वैद्यों ने सत्तू कहा है जो कि घी से मिले व ठण्ढे पानी से विलोड़ित किये सत्तू होते हैं और जो न बहुत

पतला हो न बहुत गाढ़ा हो उसको सज्जनों ने 'मन्थ'
कहा है—यह शीघ्रही बल को करता व परिणाम में बल
को देता हुआ मोह, प्यास, क्षयी, छर्दि, कोढ़, दाह और
परिश्रम को जीतता है तथा मिश्री व ईख के स्वरस से
मिली दाख पित्त रक्त और दाह को जीतती है व शहद
से मिली दाख बलको करतीहुई कफ, परिश्रम व मदको
हरती है तथा मिश्री. ईख का रस व शहद से मिली
दाख दोष और मल को अनुलोमित करती है तथा
यवों के सत्तू ठण्ढे होकर अग्नि को जगाते व हलके
रहतेहुए दस्तावर होते हैं व कफपित्त को हरतेहुए रूखे
होकर लेखन कहाते हैं तथा पीने से शीघ्रही बलदायक
होकर घाम आदिकों से पीड़ित देहवालोंके लिये 'पथ्य'
होते हैं तथा छिलकों से रहित भुने व पीसे हुए चने व
यवोंसे बने सत्तू खाँड़ और घी के संयोग से गरमियों
में पूजित होते हैं और सत्तुओं की पिण्डी भारी होती
है तथा द्रवत्व (गीलेपने) से 'लेहिका' हलकी कहाती
है तथा भोजन करके नहीं व दाँतों पै स्थित करके नहीं
व रात्रि में नहीं व बहुत नहीं अथवा जल से अन्तरित
नहीं या केवल नहीं इसप्रकार सत्तुओंका भोजन करे॥

अब लाजा (खील) व धाना (बहुरी) के गुण कहते हैं।

भुनेहुए शालिचावल आदिकों की लाजा (लाई=
खील) होती है—यह बहुत हलकी व ठण्ढी होकर बल
को धारती, पित्त व कफको विदारती हुई छर्दि, अती-
सार, दाह, रक्त, प्रमेह और प्यास को विनाशती है
तथा भुनेहुए यवोंकी धाना (बहुरी) विष्टम्भिनी व रूखी

होकर कफ व मेदोरोग को हरती हुई भारी रहती है ॥

अब चिउरा, होरा व लम्बी (ऊँबी) के गुण कहते हैं ।

पके व गीले चावल भुनाये जावें तो उनको वैद्योंने 'चिउरा' कहा है ये भारी व बलकारी होकर कफ को उपजातेहुए बादी को बिनाशते हैं तथा अधपके शिम्बी संज्ञक अनाज को भलीभाँति भुनावे उसको वैद्यों ने 'होरा' माना है—यह अल्प वातवाला होकर स्वभाव से मेद व कफ को देता है तथा नहीं पके व अधपके हुए गेहूँ व यवों की बालियों को तिनकों से भूने तो उसे उलञ्च, लम्बी और लम्बिका कहते हैं—यह कफ को देती व बलको करती हुई हलकी होकर पित्त और बादी को विनाशती है ॥

अब परिशुष्क व प्रदिग्धमांस के गुण कहते हैं ।

हींग से पके व घी में देकर भुनेहुए मांस को चलाय प्रमाण से पानी डाल बुद्धिमान् वैद्य भलीभाँति पकावे उसमें मिरच और अदरक मिलाय सुगन्धित द्रव्यों से वासित करे—यह परिशुष्क अमृतके समान कहाहै तथा कड़ी द्रव्यों से लपटाहुआ मांस 'प्रदिग्ध' कहाता है—यह वायु को जीतता व बलको धारताहुआ भारी होकर वीर्य को बढ़ाता है ॥

अब सरस, शूल्य व उल्लिप्तमांस के गुण कहते हैं ।

रस से संयुक्तहुआ मांस 'सरस' कहाता है तथा शूल से पकाया हुआ मांस 'शूल्य' होता है और धरा हुआ

---

१ "अर्द्धपक्वैः शमीधान्यैस्तृणभृष्टैश्च होलकः" फलियों के अधभुने दानों को कि जिनका खर ,जलगया हो उनको 'होरा' कहते हैं ॥

मांस 'परिशुष्क' कहा जाता है जो कि चिकना व रुचि-दायक होकर तृप्ति को करता व भारी रहताहुआ बल, बुद्धि, अग्नि, मांस, पराक्रम और वीर्य को बढ़ाता है और वही पीठी से लपेटने में 'उल्लिप्त' कहाता है यह भारी व पथ्यरूप होकर गुणों से 'परिशुष्क मांस' के समान गुणोंवाला होता है तथा 'प्रदिग्धमांस' बादीको जीतता व बलको करताहुआ भारीहोकर वीर्य को बढ़ाता है और यही पूर्वोक्तगुण 'सरसमांस' में भी रहते हैं परन्तु यह विशेषता से हलका होकर मन्दाग्निको जगाता है॥

अब शूल्यमांस व अङ्गारतप्तमांस के गुण कहते हैं।

शूल से पिरोया सुगन्धित पानी से भिगोया व धूम रहित अँगारों पै पकाया हुआ मांस 'शूल्यमांस' कहाता है यह सब मांसों में उत्तम व हलका कहाता है इसे वैद्यों ने उत्तम पथ्य माना है तथा अँगारादिकों में जो पकाया जावे वह 'प्रतप्तमांस' कहा है॥

अब पिष्ट, भर्जित व तन्दुपक्व मांस के गुण कहते हैं।

अनार, सेंधानमक और सुगन्धआदिकों को मिलाय पीसकर पुआआदि की भांति जो बनाया जावे उसको 'पिष्टमांस' कहते हैं तथा घृत आदिकों में भूनकर जो बनाया जावे उसे 'भर्जितमांस' कहा है तथा सुगन्धसे लिपटा व शहदकी समान कान्तिवाला जो मांस होताहै उसे 'तन्दुपक्वमांस' कहते हैं तथा प्रदिग्ध, सरस पक्व, भर्जित, मृदुपाचित, प्रतप्त, परिशुष्क, शूल्य और ऐसेही अन्यमांस तथा तैलपक्वमांस ये वीर्य में गरम व भारी होकर पित्त को उपजाते हैं तथा घी से पकाया हुआ जो

मांस होता है वह हलका व रुचिदायक होकर पित्त को नहीं करता हुआ बहुत गरम होताहै और वीर्य व बलको देताहुआ हृदयका प्यारा होकर दृष्टिको निर्मल करताहै॥

अब तक्रादिपक्व व सुस्विन्नमांस के गुण कहते हैं ।

तक्र, स्नेह, काँजी, खट्टारस और कडुआ आदिकों से बनाया मांस बल को देता, रुचि को करता व मन्दाग्नि को जगाता हुआ भारी रहता है तथा भली भाँति पकाया मांस बहुत रसवाला व रूखा होकर बादी को करता हुआ भारी कहाता है ॥

अब वेसवार, सौरभ व स्वानिष्क के गुण कहते हैं ।

हड्डियों से रहित मांस को भलीभाँति सिजाय पत्थर पै पीसे उसमें सोंठ, मिरच और पीपल आदिकों को मिलाय घीमें पकावे यह 'वेसवार' कहाहै जोकि बलदायक होकर वातको विनाशता हुआ भारी रहता है तथा सिजाये हुए मूँगआदि के कल्क को भी दूसरा 'वेसवार' कहा है यही हल्दी, सोंठ, मिरच, पीपल, सेंधानमक, हींग, धनियाँ, अनार और जीरासे मिलाहुआ 'सौरभ' कहाताहै तथा मूँगआदि के वेसवारको जैसी द्रव्य मिले उसीके समान गुणोंवाला कहे तथा पिसेहुए मांसरस से उपजा जो मांसरस उसे रस, सौरभ और सौरस इन तीन नामों से कहते हैं परन्तु जो रस नमक से मिलाहो या वेसवार से संयुक्त किया गयाहो उसको 'स्वानिष्क' कहते हैं ॥

अब मांसरस व अनारयुक्त मांसरस के गुण कहते हैं ।

मांस का रस हृदय को बलदायक होकर परिश्रम,

दमा, वात, पित्त और क्षयी को विनाशता है तथा घावों वाले, क्षीणवीर्यवाले व अल्पवीर्यवालों को तृप्त करता हुआ अलग व टूटी सन्धिवाले, शुद्धहुए व शुद्धि की काङ्क्षावाले व बिगड़े स्वरवाले व दृष्टि, आयु तथा सुनने की चाहनावाले जनों के लिये उत्तम कहाता है तथा अनार आदिकों के रस से मिलाहुआ मांस का रस बलदायक होकर दोषों को विनाशता है ॥

अब सौवीर (शोरवा) आदि के गुण कहते हैं ।

शोरवा पुष्टिकारी व ठण्डा होकर मुखशोष व परिश्रमको हरता हुआ मन्दाग्नि को जगाता है तथा ग्लानि व वादी को विनाशता हुआ सर्व धातुओं को बढ़ाता है और स्वानिष्कनामक मांसरस भारी होकर दीप्ताग्नि वालों के लिये पथ्य कहाता है तथा अल्पमांस से युक्त होकर जो नमक व पानी से पकाया जावे उसे 'दलका' और 'चणिका' जानना चाहिये तथा रसआदिकों को वैद्यों ने हलका माना है ॥

अब कथिता (कढ़ी) व पकौड़ी के गुण कहते हैं ।

पहले कढ़ाई में घी अथवा तेल डालकर हल्दी व हींग को भूने फिर वेसन, सेंधानमक व मठा को मिलाय छौंकदेवे उसको वैद्यलोग 'कढ़ी' कहते हैं यह पाचिनी व हृदय की प्यारी होकर रुचि को करती व अग्नि को देती हुई हलकी रहती है तथा कफ, वात व क़ब्ज़ता को लाती हुई कुछेक पित्त को कोपित कराती है तथा चने

१ परन्तु यह राँड़कढ़ी कहलाती है और पकौड़ी आदि के डालने से सुहागिल होजाती है ॥

की बिनी व छनी दाल को चक्की में पीसे उस चून को "बेसन" कहते हैं इसकी फुलौड़ियों को 'पकौड़ी' माना है यह रुचि को उपजातीहुई विष्टम्भिनी होकर बल व पुष्टता को करती है॥

अब कथित (रायता) के गुण व साग बनाने की विधि कहते हैं।

मट्ठे आदिकों से भलीभाँति बनाया साग कथित (रायता) कहाता है यह मन्दाग्नि को जगाता व रुचि को करता हुआ वात, कफ और परिश्रम को विनाशता है कि जिसका कारण आपही है ऐसा साग अपने गुणों को त्यागकर उसी गुणवाला होजाता है तथा पहले साग को भलीभाँति सम्हार ले फिर कढ़ाई में तेल डाले उसमें हींग और ज़ीरा को भून छौंक देवे फिर नमक, खटाई और मसाला के डालने से सिद्धहुए साग को उतार लेवे इसी प्रकार बुद्धिमान् वैद्य सब सागों को बनालेवें॥

अब पापड़ के गुण कहते हैं।

उड़द आदि की पीठी (धोई) में हींग, हल्दी, नमक व ज़ीरा को मिलाय कड़ीकर उसन ले फिर ओखली में कूट एकज़ीव कर छोटी लोई तोड़कर चकले (होरसा) में बारीक बेले इनको अँगारों पै अथवा घी में भूने उनको 'पापड़' कहते हैं ये परमरुचि को उपजाते व मन्दाग्नि को जगाते हुए पाचक व रूखे होकर कुछेक भारी रहते हैं तथा मूँग के पापड़ हलके होकर रुचि को उपजाते हैं और चना के पापड़ों में चना के समान गुण होते हैं व खारसहित पापड़ बहुतही हलके कहाते हैं॥

अब पीना के नाम व गुण कहते हैं।

पिण्याक, तिलकिट्ट, पलल और तिलपिष्टक ये चार नाम खली (पीना) के हैं यह हलका, रूखा व क़ब्ज़ता को लाता हुआ आँखोंकी ज्योति को दूषित करता है॥

अब तिलकुट के गुण कहते हैं।

तिलों में गुड़ व शक्कर आदि मिलाय कूटडाले उस को वैद्यों ने पलल (तिलकुट) कहा है यह मल को करता, पुरुषार्थ को जगाता, बादी को विनाशता व कफ पित्त को करता हुआ धातुवर्धक, भारी व चिकना होकर अधिक मूत्र उतरने को दूर करता है तथा औषध, समय, क्रिया, योग और देहादिकों का विचार कर जिनके गुण नहीं कहे गयेहैं उनके गुणोंको भी बुद्धि के द्वारा बुद्धिमान् वैद्य कह देवें॥

दो०। नृपमुखतिलककटारमल, मदनमहिप जो कीन।
ताही मदनविनोद में, रुद्रवर्ग कहि दीन॥ १॥

इति श्रीमदनपालविरचिते निघण्टौ श्रीशक्तिधरकृतायां भाषाव्याख्यायामाहारादिरेकादशो वर्गः॥११॥

दो०। भाषब बरहें वर्गमहँ, हस्तिआदिकर नाम।
ऐसेही उन सबन के, मांसकर गुणग्राम॥ १॥

अब हाथी व हथिनी के नाम व गुण कहते हैं।

हस्ती, मतङ्गज, दन्ती, मातङ्ग, अनेकप, करी, सिन्धुर, कुञ्जर, पद्मी, वारण, द्विरद, द्विप, इभ, दन्तावल, नाग, कुम्भी, स्तम्बेरम और गज ये अठारह नाम हाथी के हैं तथा हस्तिनी, धेनुका, करेणु और करिणी ये चार नाम हथिनी के हैं इन्हों में से हाथी का मांस कफवात-

हारी व गरम होकर रक्तपित्त को कुपित कराता है॥

अब घोड़ा व घोड़ी के नाम व गुण कहते हैं।

घोटक, सैन्धव, वाजी, तुरङ्ग, तुरग, हय, तुरङ्गम, अश्व, गन्धर्व, वाह, सप्ति, यजुः और जवी ये तेरह नाम घोड़े के हैं तथा घोटिका, बडवा, वामी, प्रसूता, अश्वा और वाजिनी ये छः नाम घोड़ी के हैं इन्होंमें से घोड़ाका मांस पचने के समय कड़ुवा होकर मन्दाग्नि को जगाता हुआ कफपित्त को करता है तथा बादीको हरता, धातुओं को बढ़ाता, बल को देता व आँखों को हित पहुँचाता हुआ मीठा और हलका रहता है॥

अब खच्चर के नाम व गुण कहते हैं।

घोड़ी में गदहे से या अन्यप्रकार के घोड़े से उपजा हुआ अश्वतर, शीघ्रवेग और अङ्गपूजित इन तीन नामोंवाला 'खच्चर' कहाता है इसका मांस बलकारी व धातुवर्धक होकर कफपित्त को विनाशता है॥

अब ऊँट के नाम व गुण कहते हैं।

उष्ट्र, क्रमेलक, वक्रग्रीव, शाखाशन, मय, शृङ्खल, करभ, दीर्घजङ्घ, धूम्र और मरुत्प्रिय ये दश नाम ऊँट के हैं इसका मांस हलका और स्वादिल होकर आँखों को हित पहुँचाता, बादी को विनाशता व मेद को शान्त करता हुआ पित्त और कफ को देता है॥

अब गधे के नाम व गुण कहते हैं।

गर्दभ, रासभ, भारवाही, दूरगम और खर ये पाँच नाम गधे के हैं इसका मांस पित्तकारी, बलदायक व धातुवर्धक होकर कफपित्त को करता हुआ पाक में

कड़ुवा व हलका रहता है और इससे जङ्गली गधे का मांस उत्तम कहाता है ॥

अब भैंसे के नाम व गुण कहते हैं ।

महिष, सौरभ, शृङ्गी, वाहवैरी, घनाघन, कासर, गवल, दंशी, लुलाय और कालवाहन ये दश नाम भैंसा के हैं इसका मांस मीठा, चिकना व गरम होकर बादी को विनाशता व निद्रा, वीर्य, बल, दूध और दृढ़ता को करता हुआ भारी रहता है और येही गुण वनगैले भैंसे में भी रहते हैं परन्तु विशेषता से शोष (क्षयी) वालों के लिये हितदायक होता है ॥

अब रीछ व गैंड़ा के नाम व गुण कहते हैं ।

ऋक्ष, अच्छ, भल्लू और भल्लूक ये चार नाम रीछ के हैं इसका मांस चिकना, भारी, धातुवर्धक, स्वादिष्ठ और गरम होकर बादी को विनाशता है तथा खड्गी, खड्ग और गण्डक ये तीन नाम गैंड़ा के हैं इसका मांस मल व मूत्र को बहुतही उपजाता हुआ पवित्र होकर बादी को हरता है ॥

अब सिंह व शार्दूल के नाम व गुण कहते हैं ।

सिंह, पञ्चानन[1], हस्त, मृगेन्द्र, केसरी और हरि ये छः नाम सिंह के हैं तथा शार्दूल, पञ्चनख, मृगनाथ और सकृत्प्रज ये चार नाम शार्दूल के हैं इन दोनोंका मांस गरम होकर नेत्ररोग को विनाशता है ॥

अब बाघ, चीता, भेड़िया, हुंडार व कुत्ते के नाम व गुण कहते हैं ।

व्याघ्र, मृगारि, मृगहा, व्याल और भीमपराक्रम

---

१ पञ्च विस्तृतमाननं यस्येति ॥

ये पाँच नाम बाघ के हैं तथा चित्रक, वेगवान्, चित्री, द्वीपी और दीर्घदंष्ट्रक ये पाँच नाम चीते के हैं तथा वृकदेह, वृक, कोक और इहामृग ये चार नाम भेड़िया के हैं–और तरक्षु और मृगादन ये दो नाम हुंडार या तेंदुवा के हैं–तथा कुक्कुर, शुनक, श्वा, कौलेय, सुनक, शुन, सारमेय, कृतज्ञ भक्षण और मृगदंशक ये दश नाम कुत्ते के हैं–इन सबोंका मांस भारी व गरम होकर बादी को हरता व बिगड़े स्वर को सुधारता हुआ नेत्ररोगियों के लिये हितदायक होता है ॥

अब सूकर के नाम व गुण कहते हैं ।

सूकर, रोमश, पोत्री, कोल, घोणि, किरि, किटि, दंष्ट्री, क्रोष्टु, ऊर्ध्वरोमा, भूदार और वराहक ये बारह नाम सूकर (सुअर) के हैं इसका मांस स्वादिल, बलदायक, वातनाशक, भारी व चिकना होकर वीर्य को करता, रुचिको उपजाता हुआ निद्रा, बुढ़ापा और दृढ़ता को करता है ॥

अब बकरी व बकरे के नाम व गुण कहते हैं ।

छागी, गलस्तनी, मण्डा, सर्वभक्ष्या, अजा और भृजा ये छः नाम बकरी के हैं तथा बर्कर, छागल, छाग, बस्तेय, कालक और पशु ये छः नाम बकरे के हैं इसका पकाहुआ मांस भारी, चिकना और हलका होकर त्रिदोषों को नाशता है तथा दाहरहित व धातुवर्धक होकर अतीव ठण्ढा नहीं होता हुआ पीनसरोग को हरता है अथवा देह और धातु की समानता से अभिष्यन्दी नहीं होकर वीर्य को पुष्ट करता है ॥

अब भेड़ व मेदःपुच्छ (मेढ़ा) के नाम व गुण कहते हैं।

मेष, भेड़ी, हुड़, मेढ़ू, उरभ्र, उरण, अविक, ऊर्णायु, एडक, वृष्णि, मेदःपुच्छ और दुम्बक ये बारह नाम भेड़ व मेढ़ा के हैं इसका मांस भारी, चिकना व बलकारी होकर पित्त और कफ को देता है तथा मेद समेत पूँछवाले मेढ़े का मांस पुरुषार्थ को जगाता व कफपित्त को करता हुआ भारी रहता है॥

अब मृग (हिरन) के नाम व गुण कहते हैं।

हरिण, ताम्रवर्ण ये दो नाम हिरन के हैं तथा कुरङ्ग, चारुलोचन, सारङ्ग, जिनयोनि, वातायु, चपल और मृग ये सात नाम काले हिरनके हैं तथा कालेवर्णवाला दूसरा 'एण' कहाता है और कृष्णकुरङ्ग व कृष्णसार ये भी दो नाम मृगभेद के हैं इसका मांस ठण्ढा व रुचिदायक होकर मल को बाँधताहुआ त्रिदोषों को विनाशता है तथा यही क्षःरसवाला बलदायक, पथ्य व हलका होकर हृदय को हित पहुँचाताहुआ ज्वर और लोहू को जीतता है॥

अब गोकर्ण व शाबर मृग के नाम व गुण कहते हैं।

गोकर्ण, अविकट, शृङ्गी, विड्बद्ध और शम्बर ये पाँच नाम गोकर्ण व शाबर मृग के हैं इन दोनोंका मांस ठण्ढा, भारी, चिकना, कफदायक व रस और पाक में मीठा होकर रक्तपित्त को विनाशता है॥

अब गवय (नीलगाह) के नाम व गुण कहते हैं।

रूक्ष, मीलाण्डक, नील, गवय और चारुदर्शन ये पाँच नाम नीलगाह (रोझ) के हैं इसका मांस मीठा,

वीर्यपुष्टिकारी, चिकना व गरम होकर कफ और पित्तको उपजाता है॥

अब कस्तूरी व मुण्डनीमृग के नाम व गुण कहते हैं।

कस्तूरी, हरिणी, गन्धी, मुण्डनी और मृगमातृका ये पाँच नाम कस्तूरी व मुण्डनी मृग के हैं इन दोनों में से कस्तूरी मृग का मांस स्वादिल व मलवन्धी होकर मन्दाग्निको जगाता हुआ हलका रहता है तथा मुण्डनी मृग का मांस ज्वर, खाँसी, रक्तरोग, क्षयी और दमा को विनाशता हुआ ठण्ढा रहता है॥

अब चीतल व छिक्कार मृग के नाम व गुण कहते हैं।

कृतमाल, वर्णचर, पृषत और बिन्दुचित्रक ये चार नाम चितले मृग के हैं तथा वातप्रमी, वातमृग, छिक्कार और कृष्णपुच्छक ये चार नाम छिक्कार (बहुत जल्द चलनेवाले) मृग के हैं इन दोनोंका मांस मीठा व ग्राही होकर मन्दाग्नि को जगाताहुआ हृदयको बल पहुँचाता है तथा ठण्ढा व हलका होकर दमा, ज्वर और त्रिदोषों को दूर करता है॥

अब रुरु व न्यंकु (बारहसींगा) मृग के नाम व गुण कहते हैं।

रुरु, शरन्मुक्तमृग, न्यंकु और बहुविषाणक ये चार नाम रुरु व न्यंकु मृग के हैं इन दोनों में से रुरु का मांस भारी व स्वादिल होकर वीर्यकी पुष्टता करताहुआ पित्त-वात को हरता है तथा न्यंकु का मांस स्वादिल व हलका होकर बल को देताहुआ त्रिदोषों को विनाशता है॥

अब खरगोश व महामृग के नाम व गुण कहते हैं।

शश, शूली, रोमकर्ण, लम्बकर्ण और बिलेशय ये

पाँच नाम खरगोश के हैं इसका मांस ठण्ढा, हलका, स्वादिल, ग्राही व पथ्य होकर मन्दाग्नि को जगाता हुआ सन्निपात, ज्वर, दमा, रक्तपित्त और कफ को हरता है तथा काश्मीर देश में उपजा, सरस, आठ पैरोंवाला, उत्साही, ऊपरले चार पांवोंवाला, ऊंट के समान प्रमाण रखनेहारा व बहुत बड़े सींगोंवाला व वनमें टिकाहुआ महामृग कहाता है इसका भी मांस पूर्वोक्त गुणोंवाला होकर उत्तम होता है॥

अब साही व सेधा के नाम व गुण कहते हैं।

शल्लक, शल्ली, श्वावित्, सेधा सूचिनी और खरा ये छः नाम साही व सेधा के हैं इनमें से साही का मांस खाँसी, रक्तरोग, सूजन और त्रिदोषों को विनाशता है और येही गुण सेधाके मांस में भी होते हैं परन्तु विशेषता से बल को बढ़ाता है॥

अब बिलार व नेवला के नाम व गुण कहते हैं।

बिडाल, मार्जार, विषदंशक और आखुभुक् ये चार नाम बिलार के हैं तथा नकुल, पिङ्गल, बभ्रु, सर्पारि और सर्पभक्षक ये पाँच नाम नेवला के हैं इन दोनों में से बिलारका मांस मीठा, चिकना व वीर्य में गरम होकर कफवात को जीतताहुआ कृशता (दुबलापन) दमा और खाँसी को विनाशता है और येही उक्तगुण नेवला के मांस में भी रहते हैं॥

अब वानर के नाम व गुण कहते हैं।

वानर[1], मर्कट, कीश[2], वनौकस, वलीमुख, हरि,

---

१ वने भवं फलादि वानं तद्रातीति वानरः वा किञ्चिन्नरो वेति॥

२ कौ इति शब्दमीष्टे कीशः, कस्य वायोरपत्यं किर्हनुमानीशो यस्येति वा॥

शाखामृग, प्लावी, प्लवङ्ग, प्लवग और कपि ये ग्यारह नाम वानर के हैं इसका मांस बादी, दमा, मेद, पाण्डु और क्रिमियों जीतता है ॥

अब शृगाल (गीदड़) के नाम व गुण कहते हैं।

शृगाल, जम्बुक, फेरु, गोमायु, फेरव, शिव, शिवेश, वञ्चक, क्रोष्टु, नेपाल और स्वल्पजम्बुक ये ग्यारह नाम गीदड़ के हैं इसका मांस बलदायक होकर वीर्य को पोषताहुआ सर्ववात व क्षयी को हरता है ॥

अब मूषक (चूहा) के नाम व गुण कहते हैं।

मूषक, खनक, स्तेयी, वृष, उन्दुरु और आखुक ये छः नाम चूहा के हैं इसका मांस मलमूत्रावरोधक व बलदायक होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता हुआ बादी को विनाशता है ॥

अब पक्षियों (चिड़ियोंमात्र) के नाम व गुण कहते हैं।

पक्षी, विहङ्गम, पत्री, शकुन्ति, विहग, खग, अण्डज, वि, पत्ररथ, पतत्री, शकुनि और द्विज ये बारह नाम पक्षियों के हैं इन्होंमें से जो धान व अंकुरों को खाते हैं उनका मांस हलका होकर उत्तम होता है और जल-संचारी पक्षियों का मांस बलकारी व हलका होकर अत्यन्त भारी रहता है ॥

अब बत्तक़, बटेर व लवा के नाम व गुण कहते हैं।

वर्त्तिर, वर्तिका, चित्र और वर्त्तका ये चार नाम बटेर या बत्तक़ के हैं इसका मांस अग्निकारी व ठण्ढा होकर ज्वर और त्रिदोषों को विनाशता है तथा लाव, चित्र और चित्रतनु ये तीन नाम लवा के हैं तथा पांशुल, गैरिक,

पौण्ड्रक और दर्भर इन भेदोंसे पण्डितोंने लवा चारप्रकार का माना है इसका मांस हृदय के लिये बलदायक, ठण्ढा व चिकना होकर मल को बाँधता हुआ मन्दाग्नि को जगाता है व (पांशुल का मांस) कफ को करता हुआ वीर्य में गरम होकर बादी को विनाशता है तथा (गैरिकमांस) कफवातहारी व रूखा होकर अत्यन्त अग्निदायक होताहै तथा (पौण्ड्रकमांस) पित्तकारी व कुछेक हलका होकर कफवात को हरता है तथा (दर्भरमांस) रक्तपित्तहारी होकर हिये के रोगोंको हरता हुआ ठण्ढा बना रहता है ॥

अब तीतर के नाम व गुण कहते हैं ।

तित्तिरि, तित्तिर ये दो नाम तीतर के हैं यह चित्र पंखोंवाला तथा काला दो भाँति का होता है और सफ़ेद वर्णवाला कपिञ्जल कहाता है इसका मांस वर्णदायक व मलबन्धी होकर हिचकी व त्रिदोषों को विनाशता है तथा दमा व खाँसी को हरताहुआ पथ्यरूप से रहता है और इससे अधिक गुणोंवाला कपिञ्जल होता है ॥

अब चटक (गवँरैया) के नाम व गुण कहते हैं ।

चटक, कलविङ्क, ग्राम्य और पुण्ड्रक ये चार नाम गवँरैया (घरूचिड़िया) के हैं इसका मांस ठण्ढा, चिकना व स्वादिल होकर वीर्य वा कफ को देता हुआ सन्निपातको हरताहै और घरमें बसनेवाली चिड़ियों का मांस अतीव वीर्यको उपजाताहै तथा वार्तिक (बगेरा) का मांस मीठा, ठण्ढा व रूखा होकर कफपित्तको विनाशता है ॥

अब परेवा व कबूतर के नाम व गुण कहते हैं ।

पारावत, कलरव, मञ्जुघोष और मदोत्कट ये चार

नाम परेवा के हैं तथा कपोत, घुघुकृत, पाण्डु, काण और कपोतक ये पांच नाम कबूतरके हैं इनमें से परेवाका मांस भारी व चिकना होकर रक्तपित्त व बादी को हरता हुआ मलको बाँधताहै या वीर्यको उपजाताहुआ ठण्ढा रहताहै तथा येही उक्तगुण कबूतरमेंभी होतेहैं परन्तु काण कबूतर का मांस कुछेक हलका होकर समस्त दोषोंको करता है ॥

अब मयूर (मोर) के नाम व गुण कहते हैं ।

मयूर, चन्द्रक, केकी, मेघराव, भुजङ्गभुक्, शिखी, शिखावल, बर्हीं, शिखण्डी, नीलकण्ठक, शुक्लापाङ्ग, कलापी, मेघनाद और लासक ये चौदह नाम मोर के हैं इसका मांस धातुओं को बढ़ाता हुआ कर्णरोग, शिरो-रोग, बादी और क्षयी को जीतता है तथा गरम होकर बल, आयु, बुद्धि, अग्नि, बालदृष्टि और श्रेष्ठवर्ण को देता है और हेमन्त, शिशिर और वसन्त में सदैव सेवना चाहिये तथा शरद् और ग्रीष्म में पथ्य नहीं होता है और सर्पाहारी होनेसे इसका मांस वर्षाकाल में भी पथ्य नहीं कहाजाता है ॥

अब मुर्गा व वनमुर्गा के नाम व गुण कहते हैं ।

कुक्कुट, विकिर, शौण्डी, कालज्ञ, चरणायुध, कृक-वाकु, ताम्रचूड़ और अरण्यकुक्कुट ये आठ नाम मुर्गा व वनमुर्गा के हैं इसका मांस धातुवर्धक, चिकना व वीर्य में गरम होकर बादी को जीतताहुआ भारी रहता है तथा आँखों के लिये हितदायक होकर वीर्य और कफ को करता है तथा जङ्गली मुर्गा का मांस रूखा होकर कसैला

१ कृकेन-गलेन वक्तीति ॥

होता है और जलमुर्गा का मांस चिकना व धातुवर्धक होकर कफ को करताहुआ भारी रहता है ॥

अब तोता व मैना के नाम व गुण कहते हैं।

शुक, रक्तमुख, कीर, वाग्ग्मी और सुन्दरदर्शन ये पाँच नाम तोता के हैं तथा सारिका, रसिता, दूती, सुमति और प्रियवादिनी ये पाँच नाम मैना के हैं इन दोनोंमें से तोता का मांस ठण्ढा, हलका व मलबन्धी होकर क्षत की खाँसी और क्षयी को नाशताहुआ रूखा रहताहै और येही गुण मैना के मांस में भी रहते हैं परन्तु विशेषता से चिकना होकर बुद्धि-बल और अग्नि को करता है ॥

अब कोयल के नाम व गुण कहते हैं।

कोकिल, कलकण्ठ, परपुष्ट, वनप्रिय, पिक, परभृताहारी, ताम्राक्ष और मधुदूतक ये आठ नाम कोयल के हैं इलका मांस मन्दाग्नि को जगाता, मल को बाँधता व आँखों के लिये हित पहुँचाता हुआ क्षयी और खाँसी को विनाशता है ॥

अब काक व भास के नाम व गुण कहते हैं।

काक, ध्वांक्ष, गूढकामी, बलिपुष्ट, सकृत्प्रज, वायस, बलिभुक्, काण, करट, चतुर और द्विज ये ग्यारह नाम काक (कौआ) के हैं तथा भास, सिखाभ्रसत, गृद्धाकार और रजःप्रज ये चार नाम भास (उजली चील्ह) के हैं इन्होंका मांस आँखों की ज्योति को प्रकाशता व मन्दाग्नि को जगाता हुआ हलका रहता है तथा आयुको बढ़ाता, धातुओं को पोषता व बल को देता हुआ व्रणदोष और क्षयी को हरता है ॥

अब गीध के नाम व गुण कहते हैं।

गृध्र, सुदृष्ट, शकुनि, वक्रदृष्टि और दूरदृक् ये पाँच नाम गीध के हैं इसके मांस में काकमांस के समान गुण रहते हैं परन्तु विशेषता से नेत्ररोगों को जीतता है॥

अब हंस के नाम व गुण कहते हैं।

हंस, श्वेतगरुत, चक्राङ्ग, मानसौकस ये चार नाम हंस के हैं जो देह से सफ़ेद व चोंच और चरणों से लाल हैं उनको 'राजहंस' कहते हैं तथा काले पंखोंवाले हंसको धार्तराष्ट्र व मालिक भी कहते हैं तथा मलिनपंखोंवाला कलहंस कहाता है वा पीले पंखोंवाले हंस को कादम्ब-कारण्डव, प्लव और मद्गु कहते हैं तथा हंसिनी को वरटा' कहते हैं इसका मांस चिकना व भारी होकर वीर्य को पुष्ट करता व वीर्य में गरम रहता हुआ स्वर और वर्ण को सुधारता है तथा बादी व रक्तपित्त को हरता व धातुओं को बढ़ाताहुआ बल और अग्नि को देता है॥

अब सारस व चकवादि के नाम व गुण कहते हैं।

सारस, लक्ष्मण, रक्तमूर्द्धा और पुष्कराह्वय ये चार नाम सारस के हैं और इसकी स्त्री को 'लक्ष्मणा' कहते हैं तथा चक्रवाक, पत्ररथ, चक्र, चक्री, सुकार्मुक, रथाङ्ग-नामा और कोक ये सात नाम चकवा के हैं तथा कङ्क और लोहपृष्ठक ये दो नाम उजलीचीलह के हैं तथा बक, बकोट, धवल, बलाका और बिसकण्ठिका ये पाँच नाम

१-यह काकके समान चोंच, दीर्घपाद और कृष्णवर्णवाला होता है॥
२ वत्तक समान॥
३ जलमुर्गा वा जलकाक॥

बगुला के हैं तथा आडि, शिरारि, आति और विचित्र-जलचारिणी ये चार नाम आडि (देशान्तरीय तीतर) वा पक्षीविशेष के हैं इन सबोंका मांस चिकना, ठण्ढा, भारी व मीठा होकर मल, मूत्र को उपजाताहुआ बादी और पित्तरक्त को विनाशता है॥

अब करेटु (देशान्तरीय सारस) के नाम व गुण कहते हैं।

कर्करेटु, करेटु, कर्कण्टु, कुरट, कृकण और क्रकर ये छः नाम करेटु के हैं इसका मांस धातुवर्धक व बलदायक होकर वातपित्त को हरताहुआ हलका रहता है॥

अब खञ्जन, पपीहा व भरदूल के नाम व गुण कहते हैं।

खञ्जरीट, खञ्जनक, चाषनामा और किकीदिवि ये चार नाम खंडरैचा के हैं तथा चातक, घनरव, सारङ्ग, तोकक और भ्रम ये पाँच नाम पपीहा के हैं तथा भरद्वाज, कर्कराट, व्याघ्राट और अहिकुटि ये चार नाम भर्दूल के हैं इन्होंमें से खञ्जन व पपीहा का मांस कफवात को हरता है तथा भर्दूल का मांस बादी को करता व वातपित्त को विनाशता हुआ कफरक्त को जीतता है॥

अब बाज, चील्ह व उलूक (उल्लू) के नाम व गुण कहते हैं।

श्येन, समादन और पत्री ये तीन नाम बाज (शिकरा) के हैं तथा चीरि, चिल्ली और चिरिल्लिका ये तीन नाम चील्हके हैं—इन दोनोंका मांस विशेषतासे दोषोंको करता हुआ भारी रहता है तथा उलूक, कौशिक, काकवैरी, घूक और निशाचर ये पाँच नाम उल्लू के हैं इसका मांस भ्रान्ति को लाताहुआ वात को कोपित कराता है॥

अथ चकोर व क्रौञ्चादि के नाम व गुण कहते हैं ।

चकोर, चन्द्रिकापायी, जीवंजीव और सुलोचन ये चार नाम चकोर के हैं इसका मांस धातुवर्धक, बलदायक, चिकना और गरम होकर बादी को विनाशता है तथा क्रौञ्च, क्रौञ्चक और कुङ् ये तीन नाम कराकुल के हैं व 'पेचक' यह नाम घुग्घूका है व पुच्छाधोभाग लोहित व क्रोश और कुरर ये तीन नाम कुरर के हैं तथा कोयष्टिक और टिट्टिभ ये दो नाम टिटिहरी के हैं इन्होंमें से 'कराकुल' का मांस पित्त और बादी को विनाशता है और 'पेचक' का मांस कफवात को जीतता है तथा 'कुरर' का मांस कराकुलमांस के समान जानना चाहिये तथा टिटिहरी का मांस अल्पबादी को करता है तथा हारीत, रक्तपित्त और हरित ये तीन नाम हरियल के हैं इसका मांस रूखा, गरम, रक्तपित्तहारक व कफनाशक होकर पसीनाको लाता व बिगड़े स्वर को सुधारता हुआ कुछेक बादी को करता है तथा पिढुकियाँ दो भाँति की होती हैं पहली चित्ररंगवाली व दूसरी सफ़ेद रंगवाली कहाती हैं इन्होंमें से पहली का मांस कफहारक, वातनाशक होकर संग्रहणी को हरता है तथा दूसरीका मांस ठण्ढा होकर रक्तपित्त को विनाशता है तथा पक्षियों के अण्डे[1] चिकनाई से रहित धातुवर्धक, वातनाशक व अतीववीर्यकारी होकर भारी रहते हैं ॥

अब मछलियों के नाम व गुण कहते हैं ।

मत्स्य, झष, तिमि, मीन, कण्ठी, वैसारिण, द्रव,

१ बङ्गभाषा में डिम्ब कहते हैं ॥

पृथुरोमा, अभिसार, विसार, शकुली, रक्तोदर, रक्तमुख, रोहित, मत्स्यपुङ्गव, सहस्रदंष्ट्र, पाठीन, कृष्णावर्ण और महाशिर ये उन्नीस नाम मछलियों के हैं तथा शफर, क्षुद्रमत्स्य, प्रोष्ठी और शफरी ये चार नाम शफरी के हैं तथा नलमीन, चिलिचिम, तिम और समुद्रज ये चार नाम मछलीभेद के हैं-यह बलको देती व वीर्य को पुष्ट करती हुई भारी होकर कफपित्त को विनाशती है तथा गरम, अभिष्यन्दिनी व चिकनी होकर धातुओं को बढ़ाती हुई बादी को हरती है ॥

अब नादेय आदि मत्स्यभेदों के गुण कहते हैं।

नदीकी मछलियाँ धातुओंको बढ़ातीहुई भारी होकर बादीको हरती हैं तथा कुएंकी मछलियाँ वीर्यको पोषती हुई कफ, अष्ठीला (गिलटी), मूत्र, कोढ़ और क़ब्ज़ता को देती हैं तथा तालाब की मछलियाँ भारी, वीर्यपुष्टिका व ठण्ढी होकर बल और मूत्रको उपजाती हैं और झरना की मछलियों में तालाब की मछलियों के समान गुण होते हैं परन्तु विशेषता से बल, आयु, बुद्धि और दृष्टिको निर्मल करती हैं तथा सरोवरकी मछलियाँ मीठी, चिकनी व बलदायिका होकर बादीको दूर करती हैं तथा समुद्र की मछलियाँ भारी होकर अत्यन्तपित्त को नहीं उपजाती हुई बादी को विनाशती हैं तथा कुण्ड की मछलियाँ बल को करती हैं और निर्मल पानी में पैदा हुई मछलियाँ बल को नहीं धारती हैं ॥

अब हेमन्तादिकों में हित मछलियाँ कहते हैं।

हेमन्त में कुएं की मछलियाँ हितदायक होती हैं व

शिशिर में सरोवरकी मछलियाँ हितदायक होती हैं तथा वसन्त और ग्रीष्म में नदी, झिरना व तालाबोंकी मछलियाँ बलदायक होती हैं तथा शरत्काल में झिरने की सब मछलियाँ हितको देती हैं और वर्षाकाल में वर्षा से उपजी मछलियाँ समस्त दोषोंको देती हैं और इन समस्त मछलियोंमें से रोहितनामक मछली उत्तम होकर अत्यन्त पित्तको नहीं करतीहुई हलकी रहती है व कसैले के अनुसार रसवाली होकर बल को धारती है तथा पढ़िना मछली कफ को उपजातीहुई भारी रहती है ॥

अब छोटी मछलियों व अण्डों के गुण कहते हैं ।

छोटी मछलियाँ स्वादु रसवाली होकर त्रिदोषों को विनाशती हैं तथा बहुतही छोटी मछलियाँ पुरुषार्थ को जगाती व रुचि को उपजाती हुईं खाँसी और बादी को हरती हैं तथा चिमचिमनामक मछलियाँ त्रिदोषों को करती हुईं परमबलको धारती हैं तथा मछलियोंका गर्भ (अण्डा) वीर्य को अत्यन्त पुष्ट करता हुआ चिकना, स्थिरकारी व भारी होकर कफ व मेदको देता है अथवा बलदायक होकर ग्लानि को करता हुआ प्रमेहों को विनाशता है ॥

अब शिशुमार के नाम व गुण कहते हैं ।

शिशुमार, हतितुल्य मकर और तिमिदंष्ट्रक ये चार नाम शिशुमार मछली के हैं यह भारी होकर वीर्य को पोषती, कफको करती व बादीको विनाशती हुई धातुओं को बढ़ाती है तथा बलको देतीहुई चिकनी रहती है और येही उक्तगुण मकर (मगर) में भी होते हैं ॥

अब कछुवे व मेढ़क के नाम व गुण कहते हैं।

कच्छप, गूढ़पात्, कूर्म, कमठ और दृढ़पृष्ठक ये पाँच नाम कछुआ के हैं इसका मांस बलदायक व चिकना होकर बादी को जीतता हुआ पुरुषार्थ को जगाता है तथा मण्डूक, प्लवग, भेक, वर्षाभू, दर्दुर और हरि ये छः नाम मेढ़क (मेघा) के हैं इसका मांस कफ को उपजाता हुआ अत्यन्त पित्तकारी न होकर बल को धारता है॥

अब कर्कट (केंकड़ा) के नाम व गुण कहते हैं।

कर्कट, कुरुचिल्ल, कुलीर और षोडशाम्बिक ये चार नाम केंकड़ा (ककेरा) के हैं इसका मांस धातुओं को बढ़ाता व वीर्य को पुष्ट करता हुआ ठण्ढा होकर प्रदर (पैरा) रोग को विनाशता है॥

अब सर्प (साँप) के नाम व गुण कहते हैं।

सर्प, भुजङ्ग, भुजग, फणी, भोगी, भुजङ्गम, कुण्डली, कञ्चुकी, चक्री, पन्नग, पवनाशन, गूढ़पात्, उरग, नाग, जिह्मग, सरीसृप, चक्षुःश्रवाः, दीर्घपृष्ठ, व्याल, आशीविष, अहि, दर्वीकर, विषधर, दन्दशूक, बिलेशय, कुम्भीनस, पृदाकु, दंष्ट्री, काकोदरी और विषी ये तीस नाम साँप के हैं तथा डुण्डुभ[1] (डिण्डिभ), राजिल, अजगर[2], वाहस, शयु, जलसर्प[3], अलगर्द, तिलत्स्य[4] और गोनस ये नव नाम डुण्डुभआदि साँपोंके हैं इनका मांस चिकना व आँखों के लिये हितदायक, धातुवर्धक व भारी होकर

१ डुण्डुभ, राजिल ये २ नाम दुमुहा साँप के हैं॥
२ अजगर, वाहस, शयु ये ३ नाम अजगर साँप के हैं॥
३ जलसर्प, अलगर्द ये २ नाम पनिहा साँप के हैं॥
४ तिलत्स्य और गोनस ये २ नाम छोटे साँप के हैं॥

दूषीविष व क्रिमियों को हरता हुआ बुद्धि, अग्नि और बल को बढ़ाता है॥

अब गोह के नाम व गुण कहते हैं।

गोधा, घोरफटा, पञ्चनखरा और जनिप ये चार नाम गोह के हैं तथा कालेसाँप से जो गोह में पैदा हुआ है उसको गौधेय और गौधेर कहते हैं इसका मांस अधिक गुणोंवाला होकर मन्दाग्नि को जगाता, बल को बढ़ाता व पुरुषार्थ को उपजाता हुआ पित्त और बादी को विनाशता है॥

अब तत्कालहत जीवों के मांस का गुण कहते हैं।

तत्काल मारे, अच्छी अवस्थावाले व मोटे जीवों का मांस जो प्राणी सेवता है उसकेलिये बल को देता है और व्याधि, पानी तथा विषसे मरे जीवों का मांस वर्जित करे॥

अब वृद्ध व बालआदि जीवों के मांस का गुण कहते हैं।

बूढ़े जीवों का मांस दोषों को उपजाता है व बाल-जीवों का मांस बलदायक होता हुआ भारी रहता है तथा झिरे (गिरे) गर्भवाली व गर्भवाली स्त्रीसंज्ञक जीवों का मांस भारी होता है अथवा आपही मरे जीवों का मांस बलहीन होकर अतिसार को करता हुआ गरुआ होता है तथा विष, जल और रोगों से मरे जीवों का मांस मृत्यु, त्रिदोष और रोगों को प्राप्त करता है॥

अब पुरुष व स्त्रीसंज्ञक जीवों के मांस का गुण कहते हैं।

पक्षियों (परवेरुओं) में पुरुषसंज्ञक पक्षी और चौपायों में स्त्रीसंज्ञक पशु श्रेष्ठ कहाता है और पुरुषों में पिछला आधाभाग हलका होता है तथा स्त्रीसंज्ञक जीवों

का पहला आधाभाग हलका कहाता है तथा बड़े डील वाले व समान जातियों में मोटे डीलवाले जीव पूजित होते हैं और छोटे डीलवालों में मोटी देहवाला जीव अच्छा माना है और आलसी जीवों में से इधर उधर विचरनेवाले जीवों का मांस बहुतही हलका कहाता है और प्रायः सर्व प्राणियों के डीलका मध्यभाग भारी मानागया है तथा पंखों के हिलाने चलाने से पक्षियों का मध्यभाग समान कहाजाता है और समस्त पक्षियों के सब अङ्ग, गला और ग्रीवा ये भारी रहते हैं तथा जो मृग और पक्षी पानी से दूरपै बसते हैं वे अभिष्यन्दी नहीं होते हैं और जो इनसे विपरीत वर्तते हैं वे 'अभिष्यन्दी' कहाते हैं तथा पानी व अनूपदेश में उपजे या विचरनेवाले या भारी पदार्थों के खानेहारे जीवों का मांस अत्यन्त भारी होता है तथा धन्वदेश (बागड़) में उपजे या घूमनेवाले या हलके भोजन करनेवाले जीवों का मांस हलका होता है तथा जांघ, कन्धा, पेट, माथा, हाथ, पाँव, कमर, पीठ, खाल, यकृत् और आंत ये क्रम से उत्तरोत्तर भारी होते हैं॥

दो० नृपमुख तिलक कटारमल. मदनमहिप जो कीन।
ताही मदनविनोद में, सूर्यवर्ग कहिदीन॥१॥

इति श्रीमदनपालविरचिते निघण्टौ श्रीशक्तिधरनिर्मितायांभाषाव्याख्यायां हस्त्यादिमांसवर्णनानाम द्वादशोवर्गः॥ १२॥

दो० भाषब तेरहें वर्गमहँ, मिश्र वस्तु कर नाम।
तैसेही उन सबन के, गुण गँभीर अभिराम॥१॥

अब वातादिकों में पानी का अनुपान कहते हैं।

वात में चिकना व गरम अनुपान करना हितदायक होता है तथा कफ में रूखा व गरम अनुपान कहा है और पित्त में चिकना अनुपान हित को करता है तथा स्नेहपानमें ठण्ढा जल हितदायक नहीं कहाता है तथा भिलावें के स्नेह से प्राप्त मूर्च्छावालोंके लिये ठण्ढा जल भला होता है अथवा शालिचावल और मूँग आदि भक्ष्यों का यूष और मांस का रस अच्छा कहा है॥

अब माषादिभोजियों को अनुपान कहते हैं।

उड़दआदि भक्ष्य पदार्थोंके खानेवालों के लिये दही का पानी, कांजी या दहीका अनुपान करना हितदायक होता है तथा शोष (क्षयी) रोगवाले व विषपीड़ित व मन्दाग्निवालों के लिये मदिरा का अनुपान भला कहा है तथा व्रत, मार्ग, बोझा व स्त्रीप्रसंग से पीड़ित व क्षीण तथा रक्तपित्तवाले प्राणियों के लिये दूध का अनुपान करना अमृतके समान कहा है तथा प्रकृति के अयोग्य, दोषों का उपजानेवाला, अधिक व भारी जो अन्न खाया गया वह पूर्वोक्त अनुपानसे भलीभांति जरता है तथा आदि में पिया हुआ प्राणी को दुबला करता है व मध्य में सेवन किया मनुष्यको ठहराता है और पीछे से पान किया प्राणीको बढ़ाता है इसप्रकार विचारकर अनुपानों को प्रयुक्त करे तथा दमा, खाँसी, बवासीर, क्रिमिरोग और घावों से व्यथित हुआ रोगी पानी को नहीं पीवे अथवा पीकर अधिक बतलाना, पढ़ना और सोना आदिकों को नहीं सेवन करे॥

अब प्रभात जलसेवन के गुण कहते हैं।

प्रातःकाल कफ, वात और पित्तमें एक, दो, तीनपल यानी चार तोले पानी को पीवे तो वह दृष्टि की ज्योतिको निर्मल करताहुआ बुढ़ापे को नहीं लाता है अथवा जो मनुष्य प्रातःकाल चौसठ तोलेभर पानीको पीवे तो वह शरीर में बलियों का पकना, बालों का सफ़ेद होजाना व स्वरका बिगड़ना, पीनस, दमा और खांसीको जीतता है॥

अब धान्यादिकों में अनुक्तगुणों का विचार कहते हैं।

अन्नों, मांसों व समस्तसागों में भी प्रमाद से जो गुण नहीं कहेगये हैं उनकोभी बुद्धिमान् वैद्य स्वाद और पृथ्वी आदि पञ्चमहाभूतों के गुणों को ग्रहणकर कह देवे॥

अब धान्यों में श्रेष्ठ धान्यों को कहते हैं।

सांठीचावल, यव, गेहूँ, लाल शालिचावल, मूँग, अरहर और मसूर ये अन्नों में उत्तम कहाते हैं इन्होंका सेवनेवाला पुरुष बुढ़ापा और व्याधियों से छुटा हुआ सुखी होकर सौ वर्षतक जीता बना रहता है॥

अब भोजन के अनन्तर बैठने आदि के गुण कहते हैं।

भोजन कर बैठनेवालेका पेट तुँदीला होजाताहै या भोजन कर उताने सोनेवाले के लिये बल को देता है व भोजनकर बाईंकरवट टिकनेवालों की आयुर्दाय बढ़ती है और भोजनकर दौड़नेवालोंकी मौत होजाती है॥

अब जागने, सोने व नींद के गुण कहते हैं।

जिन प्राणियों को रात्रि में जागना रूखा कहा है उन को दिन में शयन करना चिकना होताहै उन्हीं लोगों के सोने और जागने में दोष नहीं उपजता है तथा भोजन

के अनन्तर जो नींद आजावे तो वह बादी को नाशती हुई कफ और पुष्टि को करती है तथा कफ, मेद और विषसे पीड़ित जनोंको रात्रि में जागना हितदायक होता है और प्यास, शूल, हिचकी, अजीर्ण व अतीसार वालों को दिन में सोना अच्छा होता है ॥

अब दँतवन के गुण व निषेध कहते हैं ।

दन्तधावन (दँतवन) करना मुख में सुन्दरता को करताहुआ प्रसेक, अरुचि, दुर्गन्ध, मल, पित्त और कफ को विनाशता है तथा मद से पीड़ित, दुबला, थका हुआ, दन्तरोगी, तालुरोगी, ओष्ठरोगी, हिक्कारोगी, छर्दिरोगी, शिरपीड़ावाले, मूर्च्छारोगी और शोषरोगी ये दन्तधावन को त्याग देवें ॥

अब मुखधोने व पांवधोने के गुण कहते हैं ।

ठण्ढे पानी से मुँहका धोना रक्तपित्त को जीतताहुआ मुख की फुन्सियां, शोष, नीलिका और व्यङ्ग को दूर करता है तथा पांवों का धोना दृष्टि को निर्मल करता व वीर्यको पुष्ट करताहुआ परिश्रम को विनाशता है ॥

अब पैरों पै मालिश के गुण कहते हैं ।

पांवों पै मालिश करना पुष्टिकारी, बलदायक व उत्साहवर्धक होकर नींद व सुख को करता हुआ सुप्ति, परिश्रम और नेत्ररोग को दूर करता है ॥

अब कुल्ला के गुण व निषेध कहते हैं ।

स्नेह से कुल्ला करना मुखशोष, दन्तरोग, स्वरघात, ओठ का कड़ापन और रक्तवात को हरता है तथा सुख-दायक गरम किये जल का कुल्ला कफ, अरुचि और मल

को विनाशता है तथा विष, मूर्च्छा व मद से पीड़ित, शोषवाले, रक्तपित्तवाले, कोपवाले, दरिद्री और रूखे लोगों के लिये कुल्ला हितदायक नहीं कहाता है॥

अब अञ्जन के गुण व निषेध कहते हैं।

अञ्जन (सुरमा) का लगाना आँखों को निर्मल करता व दृष्टिको जगाताहुआ रोगों को हरता है तथा रात्रिमें जागेहुए, परिश्रमवाले, छर्दिवाले, भोजन किये, ज्वर से पीड़ित और शिरको धोयेहुए ये लोग कदापि अञ्जन को नहीं लगावें॥

अब व्यायाम (कसरत करने) के गुण कहते हैं।

व्यायाम (कसरत करना) कर्मों में सामर्थ्य व स्थिरता को करता व दोषों को विनाशता हुआ अग्नि को करता है तथा बलवान् व चिकने भोजन करनेवालों के लिये सदैव गुणदायक होता है और कसरत करने से दृढ़ (मज़बूत) चित्तवालों को कदापि व्याधियाँ नहीं आती हैं तथा विरुद्ध या जलाहुआ किया भोजन शीघ्र ही पचता है और उस कसरती पुरुष के शरीर में बलियों का पड़ना, शिथिल होना और बुढ़ापा ये भी शीघ्रता से नहीं होते हैं तथा वसन्त और शीतकाल में कसरत का करना हितदायक माना है और अन्य समय में भी अपनी आधी सामर्थ्य से बल व अबल के अनुसार कसरत करना चाहिये॥

अब व्यायाम का प्रतिषेध कहते हैं।

देहको निहारकर कण्ठ, ग्रीवा व ललाटमें पसीनावाला या किये भोजनोंवाला व स्त्री में रमा हुआ, खाँसीवाला,

दमावाला, क्षयी और दुबले शरीरवाला, रक्तपित्तवाला
और शोषरोगवाला ये लोग कसरत न करें और बहुत
कसरत करने से खाँसी, ज्वर व छर्दि ये रोग पैदा होते हैं।

अब देह दाबने के गुण कहते हैं।

देहका दाबना परिश्रम व बादी को विनाशता हुआ
निद्रा, पुष्टि और बल को देता है तथा बाल, डाढ़ी
और नखों का कतरना अच्छे रूप को करता है॥

अब मालिश के गुण कहते हैं।

तेल आदिकों से मालिश करना बादीको विनाशता
हुआ धातुओं की समता, बल, सुख, नींद, वर्ण, कोम-
लता, दृष्टि और पुष्टता को करता है॥

अब बाल ऐंछने व शिर की मालिश के गुण कहते हैं।

ककवा व ककई से बालों का ऐंछना बालों को बढ़ाता
हुआ धूलि, जुवाँ और मल को विनाशता है तथा शिरमें
तेलआदिकी मालिश शिर की तृप्ति, बालों की दृढ़ता
और आँखोंकी पुष्टता करतीहुई ऊँचा सुनना, बधिरता,
मल, मन्याग्रह व हनुग्रह को विनाशती है॥

अब कानों में तेल डालने के गुण कहते हैं।

कानरोगवालों के कानों में तेल आदिका पूरण करना
जैसे वृक्षों की जड़में पानी सींचने से पत्तेआदि हरेभरे
होजाते हैं वैसेही तेलसे सींचेहुए प्राणी के धातु बढ़ते हैं
तथा स्नेह में गोता लगाना बादी को विनाशता हुआ
धातुओं के लिये पुष्टताको देता है तथा तीन, चार, पाँच,
छः, सात व आठ इन मात्राओं से गोता लगाना रस,
रक्त, मांस, मेदा और मज्जा को क्रम से प्राप्त करता है

और वमन किये, नये ज्वरवाले, अजीर्णवाले व जुलाब लियेहुए व केवल आमरोगवाले ये लोग निरूहबस्ति, तर्पण और मालिश आदिकों को वर्जित करें॥

अब उबटन लगाने के गुण कहते हैं।

उबटनका लगाना बादीको विनाशताहुआ भ्राजक अग्नि को जगाता है तथा अङ्गों की स्थिरता, सुखता व खाल की स्वच्छता और कोमलता को करता है॥

अब स्नान (नहाने) के गुण व निषेध कहते हैं।

स्नान करना (नहाना) बादी, थकावट, अलक्ष्मी (दारिद्र), पामा, खुजली व मल को हरता, हृदय को हित करता व खाँसीको विदारताहुआ अग्नि और सर्व इन्द्रियों को जगाता है तथा गरम जलसे शिर को नहीं धोना चाहिये क्योंकि आँखों के लिये हितदायक नहीं होता है और कफ व वातके कोपमें औषध के लिये गरम जल को देवे तथा अतीसार, ज्वर, कर्णरोग, वातरोग, अफरा, अरोचक और अजीर्ण इन रोगों से व्यथित व भोजन किये प्राणियों को नहाना निन्दित कहा है॥

अब चन्दनादि लगाने के गुण कहते हैं।

चन्दन आदिकों का अनुलेप प्यास, मूर्च्छा, दुर्गन्धता, परिश्रम और बादी को विनाशता हुआ तेज, खाल का वर्ण, प्रीति, पराक्रम और बलको बढ़ाता है॥

अब पुष्पमालादि धारने के गुण कहते हैं।

पुष्पमाला, वस्त्र और रत्नों का धारना कान्ति को करता, पाप, रक्षोदोष व ग्रहदोषोंको हरता हुआ काम, पराक्रम और शोभा को बढ़ाता है तथा जूतोंका पहनना

आँखों को हित पहुँचाता व आयुको बढ़ाताहुआ पाँव-रोगों को विनाशता है ॥

अब पगड़ी व छतरी धारने के गुण कहते हैं।

पगड़ीका बाँधना शुचिदायक होकर बालों को बढ़ाताहुआ धूलि, वायु और घाम को हरता है तथा छतरी का लगाना बलको धारता व नयनों के लिये हित पहुँचाताहुआ ठण्ढा और घाम को जीतलेता है ॥

अब पंखा व लठिया धारने के गुण कहते हैं।

बालव्यजन (छोटा पङ्खा) बल को करता हुआ मक्खी आदिकों को निवारता है तथा व्यजना की हवा शोष, मूर्च्छा, पसीना और थकावट को हरती है तथा लाठी का धारना उत्साह, स्थिरता, अविष्टम्भ व वीर्य को करताहुआ राक्षस व साँपआदि की भय को भगाता है और विशेषता से बुढ़ापे में भी सहारा भरता है ॥

अब चलने व फिरने के गुण कहते हैं।

चलना फिरना अङ्गों को मोटा नहीं करता व रुचि को उपजाता हुआ कफ, सुकुमारता व सुख को देता है इसलिये जहांतक देह में पीड़ा नहीं होवे वहांतक चलना फिरना आयु, बल, बुद्धि और अग्नि को देता हुआ इन्द्रियों को जगाता है ॥

अब शय्या (पलंग) के गुण कहते हैं।

शय्या त्रिदोषोंको शान्त करती है व सौड़िया बिछौना वातकफ को हरता है तथा येही गुण सुखशय्या में भी होते हैं परन्तु यह विशेषता से निद्रा, पुष्टि और इन्द्रियों को बलवान् करती है ॥

अब घाम, छाया, अग्नि व धुवाँ आदि के गुण कहते हैं।

घामका सेवना—पसीना, मूर्च्छा, रक्तरोग, प्यास, दाह, थकावट और ग्लानि को करता है तथा छाया का सेवना—पित्त, वर्णका विगड़ना और पसीना को विनाशता है तथा आगी का सेवना—जाड़ा, वात, स्तम्भ, कफ व कम्प को नाशता, रक्तपित्त को दूषित करताहुआ आम को गलाता व पकाता है तथा धुवाँ—पित्त और बादी को करता है व ओस—कफ व बादी को करती है तथा चाँदनी—ठण्ढी होकर बादी व स्तम्भ को देती हुई प्यास, पित्त और दाह को जीतती है तथा अँधेरा—भय को पहुँचाता हुआ मोह, कफ, पित्त व ग्लानि को देता है तथा वर्षा—पुष्टिकारिणी व ठण्ढी होकर निद्रा, अभिष्यन्द व आलस को करती है तथा बड़ीहवा—रूक्षता, विवर्णता व स्तम्भ को करती दाह व पित्त को हरती हुई पसीना, मूर्च्छा और प्यास को विनाशती है और इससे विपरीत हवा विपरीत फल को देती है तथा ग्रीष्म व शरत्काल के विना सुख से बड़ी हवा का सेवन करे तथा आयु और आरोग्य के लिये सदैव वायु का सेवन करना चाहिये॥

अब शीघ्र प्राणकारक षड्वस्तुओं को कहते हैं।

तत्काल का मांस, नवीन अन्न, बाला[1] (सोलहवर्ष की स्त्री), दूध, घृत और गरम पानी से नहाना ये छः शीघ्रही प्राणों को करते हैं॥

अब शीघ्र प्राणहर छः वस्तुओं को कहते हैं।

दुर्गन्धित मांस, बूढ़ी स्त्री, कन्याराशि व प्रभात का

१ बालेति गीयते नारी यावद्वर्षाणि षोडश। ततस्तु तरुणी ज्ञेया द्वात्रिंशद्वत्सरावधि॥

सूर्य, ताजा दही, प्रभात में स्त्रीरमण और निद्रा ये छः शीघ्रही प्राणों को हरते हैं॥

अब अन्न से पिष्टादिकों में विशेष गुण कहते हैं।

अन्न से अठगुणा चून व चून से अठगुणा दूध व दूध से अठगुणा मांस व मांस से अठगुणा घृत गुणकारी कहाताहै तथा घृतसे अठगुणा तेल मालिश करनेमें गुण-दायक होताहै परन्तु भोजनमें गुणोंको नहीं करता है॥

अब लङ्घन में गुण व प्रतिषेध कहते हैं।

लङ्घन करना—कफ व मेदको विनाशता व आमज्वर को हरताहुआ हलका रहता है तथा पाचन होकर मन्दाग्निको जगाता व बादी को हरता हुआ शूल और अतीसारको जीतताहै तथा नयारोगी, बालक, गर्भिणी, बूढ़ा और दुबला मनुष्य या शोक, काम, भय, क्रोध, मार्गगमन और परिश्रम से उपजा रोग और पुराना ज्वर इन्हों में लङ्घन कराना हितदायक नहीं होता है॥

अब पूर्वादि वायुओं के गुण कहते हैं।

पूर्वदिशा का वायु—भारी, स्वादिल व चिकना होकर पित्तरक्त को बढ़ाता हुआ विषसेवी, क्षतरोगी व घायल मनुष्यों को रोगी करता है तथा विदाही व वातल होकर थके, कफी व शोथवालों को हितदायक होता है तथा दक्षिण का पवन—स्वादिल होकर रक्तपित्तको हरताहुआ हलका रहता है तथा अविदाही, बलदायक व आँखों को हितदायक होकर बादी को नहीं उपजाता है तथा पश्चिम का वायु—रूखा, तीखा व चिकना होकर बल को नाशता, हृदय को हित देता व शोषता व मनुष्यों के कफ

व मेद को हरताहुआ हलका रहता है तथा उत्तर का वायु–ठण्ढा व चिकना होकर दोषों को कुपित करता, गीला करता व प्रकृति में टिकेहुए जनों को बल देता हुआ मीठा व कोमल रहता है परन्तु विशेषता से क्षयी, क्षीण व विषपीड़ित जनों को गुणकारी होता है॥

अब मधुर (मीठे) रस के गुण कहते हैं।

मीठारस–ठण्ढा होकर धातु, दूध व बल को बढ़ाता, आँखों को हित पहुँचाता व वातपित्त को नाशता हुआ मोटाई, कफ और क्रिमियों को करता है और वही अत्यन्त प्रयुक्त किया हुआ ज्वर, दमा, गलगण्ड और अर्बुद आदिकों को करता है॥

अब खट्टेरस के गुण कहते हैं।

खट्टारस–पाचक होकर रुचि को उपजाता व पित्तकफ को करताहुआ हलका रहता है तथा लेखन, गरम व बाहिरी ठण्ढा होकर ग्लानि को देता हुआ बादी को विनाशता है तथा अत्यन्त प्रयुक्त किया खट्टारस रक्तपित्त आदि रोगों को करता है॥

अब कडुवेरसादि के गुण कहते हैं।

कडुवारस–पित्तकारी होकर कफ, क्रिमि, खुजली और विष को विनाशता है तथा छर्दि (वान्त) कफपित्त को दूर करती है, जुलाब रक्तपित्त को नाशता है तथा बस्ति वातहारिणी जानना चाहिये तथा स्वेद और मान्द्य में अपकारक होता है तथा (गरमरस) बादी को उपजाता व दूध, मेद और स्थूलता को हरताहुआ भारी रहता है तथा अतीवयुक्त किया गरमरस भ्रम, दुर्बलता,

तालुशोष और बड़ी दाहको देताहै तथा तिक्तरस–ठण्ढा होकर प्यास, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त व कफ को जीतता है तथा बादी को उपजाता, अग्नि को करता, दूध को शोधता व शोषता हुआ हलका रहता है तथा बहुत प्रयुक्त किया तीखारस–शिरश्शूल, मन्यास्तम्भ और घुमनी को करता है तथा सलोनारस–शोधता व रुचि को उपजाता हुआ पाचक होकर कफ व पित्त को देता है और यही अत्यन्त प्रयुक्त किया पुरुषपन व बादी को हरता हुआ देह में शिथिलता को लाता है तथा आँखों को पकाता हुआ रक्तपित्त, कोष्ठ व आँखों में दाह करता है तथा कसैलारस–घावों पै अंकुरों को जमाता, मल को बाँधता व शोषता हुआ वात को कुपित करता है तथा अतीव प्रयुक्त किया कसैलारस–ग्रहरोग, पेटका फूलना, हृद्रोग और आक्षेप आदि रोगों को करता है॥

अब नस्य (नास) लेने के गुण कहते हैं।

जो प्राणी नास को लेता है तो वह निर्मल दृष्टिवाला, दृढ़दाँतों व बालोंवाला, चन्द्रमा के समान मुखवाला, सफ़ेद बालों से रहित कोयल के समान कण्ठवाला होकर मुख में कमल के समान गन्धवाला होजाता है॥

अब वमनके गुण व उसके योग्य प्राणियों व निषेध को कहते हैं।

वमन के करनेसे हृदय, कण्ठ और मस्तक की शुद्धता होती है, जठराग्नि प्रबल होजाती, देह में हलकापन आजाता तथा कफपित्त का विनाश होजाता है और जो पुरुष बलवान् व जिसके कण्ठ में कफ भरा हो व थुकथुकी आदि बीमारियों से पीड़ित हो उनको वमन कराना

हितदायक होता है तथा विषदोष, स्तन्यदोष, मन्दाग्नि, फ़ीलपांव, अर्बुद, हृद्रोग, कोढ़ विसर्प, प्रमेह, अजीर्ण, भ्रम, विदारिका, अपची, खाँसी, दमा पीनस, अण्डवृद्धि, मिरगी, ज्वर, उन्माद और रक्तातिसार आदिरोगों से पीड़ित जनों को वमन (रद्द=क़ै) करना चाहिये इसके सेवन करने से सब दोषों का क्षय होजाता है तथा बूढ़े व गर्भवती आदिकोंको वमन (छर्दि) नहीं करना चाहिये॥

अब जुलाब लेने के गुण कहते हैं।

भलीभाँति सेवन किया जुलाब पीनेवालों की बुद्धि को प्रसन्न करता इन्द्रियों को बल देता, स्थिरता, बल व अग्नि को प्रकाशता हुआ चिरकाल से आयु का पाक करता है॥

अब बस्तिकर्म के गुण कहते हैं।

वात, पित्त, कफ और रक्तरोग में बस्तिकर्म उत्तम कहाता है तथा दो दोषों व तीन दोषों के मेल में या सन्निपात में सदैव बस्तिकर्महो सुखदायक कहाजाता है जैसे जड़ में पानी सींचने से नाल, पत्ते व कोमल पत्तोंवाला होकर वृक्ष समय पर अधिक फूल फलों को देता है वैसेही अनुवासनबस्ति से मनुष्य सुन्दर शरीरवाला होजाता है॥

अब फस्तलेने के गुण कहते हैं।

जिन मनुष्यों को फस्त लेना (रक्त निकलाना) अच्छा ज्ञात होता है उनलोगों के अङ्ग में बिगड़ी खाल, गिलटियां, सूजन और रक्तरोग से उपजे रोग ये कदापि नहीं होते हैं॥

अब वर्षाऋतु में सेवनीय वस्तु को कहते हैं।

वर्षाकाल में संहर्ष से वातआदि दोष कुपित होते हैं इसलिये गीलेपन से जब देह की अग्नि बहुतही मन्द होजावे तो वैद्यलोगोंको दीपन व पाचन अन्न देना चाहिये जो कि मलको हरता है तथा क्लेद का हरनेवाला गरम रस रूखा, कसैला, कडुवा और चर्फरा नहीं हो अथवा कुछेकरसों से चिकना हो वह श्रेष्ठ कहाता है तथा आकाश से वर्षेहुए व चोवा के जल को गरम करे व पीछे से ठण्ढा कर उसमें शहद मिलाय थोड़ासा पीवे उससमय अजवायन के योग से ओषधियां अधिक दाह को प्राप्त होती हैं इसलिये कसरत व सूर्य के किरण, स्त्रीसङ्ग, सुख और ओस को त्याग देवे तदनन्तर पृथ्वी की बाफ़, जल, साँप, डाँस और मच्छड़ों से रहित स्थान में शयन करे॥

अब शीतकाल में सेवनीयवस्तु को कहते हैं।

शीतकाल (जाड़े) में जहां वायु और वर्षा अधिक नहीं हो व जहां अँगीठी बनी हों व हवा नहीं लगती हो उस स्थान में राजालोग कुछेक मीठे आसव को पीकर शयन करें तथा केसर व अगर के लेप से शरीर को सुशोभितकर सुन्दरी स्त्रियों को प्राप्त होवें और यत्न से बीजना व ग़ोता मारके स्नान करना स्त्रीसङ्ग और दिन में शयन करने को छोड़ देवें तथा श्रावण व भादों में मीठा, कसैला व सुन्दर रसका सेवन करें व जाङ्गल-देशीय द्रव्यों को त्याग देवें तथा दाख, दूध, मिश्री, ईख, शालिचावल, मीठे पदार्थ, गेहूँ और मूँग आदिकों को सेवन करें तथा कुवार व कातिक में निर्मल होजाने से

सब प्रकार के जल व अत्यन्त हलके कपड़े, माला व चन्दन को सेवें तथा प्रदोष के समय चन्द्रमा की किरणों को सेवें और कमलोंवाले तालाबों में गोता लगाय नहावें तथा श्रावण व भादोंमें संचित हुए पित्तको जुलाब की विधि से बुद्धिमान् वैद्य निकाले व फस्त को खुलावे तथा घी व कड़ुवे रस को पीवे और रात्रि में जागना, स्त्री से रमना, घाम, जाड़ा, दही, खारी, खट्टा, गरम, विदाही, तीखा, कड़ुवा और दिनमें सोनेको बरादेवे॥

अब हेमन्त में सेवनीय वस्तुओं को कहते हैं।

हेमन्त(मार्ग–पौष)में सलोना, खट्टा, कड़ुवा, चर्फरा, खारी, उत्कट, पुष्ट, तेलसमेत घी, गरम भोजन और तीखा पान इन्होंको सेवन करे तथा अगर का लेप व तेल की मालिश कर ठण्ढे पानी से नहावे और रेशमी कपड़े पहनेहुए शय्या पर बिरौसी धरे स्थान में शयन करे तथा मोटे कुचों व जांघोंवाली सोलह वर्ष की स्त्री को लिपटाय शयन करे और केसर व अगर का लेपकर सुन्दर धूप देकर यथेष्ट प्यारी से भोगकर बलकारक रसों का सेवन करे और अधिक जाड़ा के पड़ने से यही विधि माह व फागुन में भी करना चाहिये॥

अब वसन्त में सेवनीय वस्तुओं को कहते हैं।

वसन्तकाल (चैत–वैशाख) में तीखे, खारे, कसैले, रूखे, चर्फरे और गरम भोजन, शहद, मूँग व जिसमें जाङ्गलदेश के जव विशेषता से हों वह मद्य, कसरत व

---

(१) हसन्तीं[1] च हसन्तीं[2] च हसन्तीं[3] वामलोचनाम्। हेमन्ते ये न सेवन्ते ते नरा मन्दभागिनः॥ १ रुई, २ बिरौसी, ३ हँसती हुई स्त्री॥

कोयलों की कूकों से आकुलित वन, बगीचे, सुन्दर स्त्री. स्नान, उबटन, चन्दन और रमणीय मालाओं को राजालोग सेवन करें॥

अब हेमन्त में संचित कफ के जीतने को कहते हैं।

हेमन्त (मार्ग–पौष) आदि मासों में संचित व सूर्य की किरणों से घिराहुआ कफ कुपित होता है इसलिये शिरोविरेचन (शिर का जुलाब) छर्दि, कुल्ला व धूप आदि व नागरमोथा का क्वाथ तथा गरम पानी इन्हों से उसको जीत लेवे और ठण्ढा, चिकना, भारी, पतला, खट्टा व मीठा रस और दिन में शयन करना इन सबों को त्याग देवे॥

अब ग्रीष्म में सेवनीय वस्तु को कहते हैं।

ग्रीष्म (ज्येष्ठ–आषाढ़) में ठण्ढे घर. सरोवर, नदी, बावली, वन, नाला हार, ठण्ढे ताड़पङ्खे की हवा और दिनमें शयन करना इनको सेवन करे तथा साफ़ व हलके कपड़े व नहीं गरम व मीठे घृतसमेत पतले अन्न, मन्थ व मिश्री आदिकों से संयुक्त दूध और सुन्दरपने को सेवन करे तथा साफ़ किये व सफ़ेदी से पोतेहुए मकानों के तारवानों में सुन्दर फूलों से रचित शय्या पै सुखदायक वायु से स्पर्श किये व चन्दनादिकोंको लगाये हुए मनुष्य शयन करे तथा बुद्धिमान् वैद्यों (डाक्टरों व हकीमों) के वचनों में परायण होकर कसरत, शोषक द्रव्य व स्त्रीप्रसङ्ग में मन, घाम, गरम पदार्थ व अग्नि के उपजानेवाले पदार्थ इन सबोंको त्याग करदेवे॥

दो०। नृपमुखतिलककटारमल, मदनमहिप जो कीन।
ताही मदनविनोद में, विश्ववर्ग कहिदीन॥१॥
इति श्रीमदनपालविरचिते निघण्टौ श्रीशक्तिधरनिर्मितायां भाषाव्याख्यायां मिश्रकोयं त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥
दो०। कहब चौदहें वर्ग महँ, त्रिफलादिकअभिधान।
द्व्यर्थत्र्यर्थनामादियुत, नानाअर्थ बखान॥ १॥
अब त्रिफला को कहते हैं–हड़, बहेड़ा और आँवला इन तीनों को 'त्रिफला' कहते हैं त्रिकुटा–सोंठ, मिरच और पीपल इनको 'त्रिकटु' कहते हैं त्रिदोष–वात, पित्त व कफ इनको 'त्रिदोष' कहते हैं इन तीनों के मिलने से त्रिदोषज होकर सन्निपात होजाता है त्रिमद–मोथा, चीता और बायबिड़ङ्ग इनको 'त्रिमद' कहते हैं त्रिजातक–दालचीनी, इलायची व तेजपात इनको 'त्रिजात' कहते हैं त्रिमधु–घी, शहद व चीनी त्रियामा–हल्दी, नीलवृक्ष व कालानिशोत चतुरम्ल–अम्लवेत, विषाविल, बड़ी जम्बीरी और नींबू यह 'चतुरम्ल' है चतुरूषण–सोंठ, मिरच, पीपल और पीपलामूल यह 'चतुरूषण' है चतुर्बीज–मेथी, हालों, कालाजीरा और अजवायन यह 'चतुर्बीज' है चातुर्भद्रक–सोंठ, अतीस, नागरमोथा व गिलोय चातुर्जातक–दालचीनी, इलायची, तेजपात व नागकेसर इनको 'चातुर्जात' कहते हैं पञ्चकर्म–वमन, विरेचन, नास, निरूह और अनुवासन ये 'पञ्चकर्म' हैं पञ्चकोल–पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ इसको 'पञ्चकोल' कहते हैं पञ्चगणयोग–शालवन, पिठवन, भटकटैया, कटेहरी और गोखुरू

इसको 'पञ्चगणयोग' कहते हैं पञ्चगव्य–दही, दूध, घी, गोमूत्र और गोबर इसको 'पञ्चगव्य' कहते हैं पञ्चतिक्त–नींब, गिलोय, अडूसा, परवल और कटेहरी इसको 'पञ्चतिक्त' कहते हैं पञ्चतृण–कुश, कास, रामसर, ईख और धान इन्हें 'पञ्चतृण' कहते हैं पञ्चनिम्ब–नींब की छाल, नींब के पत्ते, नींब के फूल, निंबौली और नींब की जड़ इनको 'पञ्चनिम्ब' कहते हैं पञ्चपल्लव–आम के पत्ते, जामुन के पत्ते, कैथा के पत्ते, बिजौरा के पत्ते और बेल के पत्ते ये 'पञ्चपल्लव' हैं पञ्चपित्त–सूकर, बकरा, भैंसा, मच्छ और मोर यह पाँच जीवों के पित्त हैं पञ्चमूत्र–गाय, बकरी, भैंस, भेंड़ और गधी इनके ये पाँच मूत्र हैं बृहत्पञ्चमूल–श्योनाक, बेल, कम्भारी, पाटला और अरणी यह 'बृहत्पञ्चमूल' कहाता है लघुपञ्चमूल–शालवन, पिठवन, छोटी कटेहरी, बड़ी कटेहरी और गोखुरू यह 'लघुपञ्चमूल' कहा है पञ्चरत्न[1]–सुवर्ण, हीरा, नीलम, पद्मराग और मोती ये पाँच रत्न हैं पञ्चलवण–काचियानोन, सेंधानोन, समुद्रनोन, सोंचर और कालानोन ये 'पञ्चलवण' हैं पञ्चलोह–ताँबा, पीतल, रांगा, सीसा और लोहा ये 'पञ्चलोह' हैं पञ्चशूरण–अत्यम्लपर्णी, काण्डवेल, मालाकन्द, सूरन और सफ़ेद सूरन ये 'पञ्चशूरण' हैं पञ्चशैरीषक–शिरसवृक्ष के फूल, जड़, फल, पत्ते और छाल ये 'पञ्चशिरस' हैं पञ्चसिद्धौषधि–तैलकन्द, सालिममिश्री, बाराहीकन्द, रुदन्ती,

---

१ माणिक्यं तरणेः सुजातममलं मुक्ताफलं शीतगोर्माहेयस्य च विद्रुमो निगदितः सौम्यस्य गारुत्मतम्। देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्यस्य वज्रं शनेर्नीलं निर्मलमन्ययोश्च गदिते गोमेदवैदूर्यके ॥ १ ॥

सर्पाक्षी और सरहटी ये पञ्चसिद्धौषधियां हैं पञ्चसुगन्धक—लौंग, शीतलचीनी, अगर, जायफल, कपूर अथवा कपूर, शीतलचीनी, लौंग, सुपारी और जायफल ये पाँच 'महासुगन्ध' द्रव्य हैं पञ्चाङ्ग—एक वृक्ष की छाल, पत्ते, फूल, फल और जड़ इनको पञ्चाङ्ग कहते हैं पञ्चामृतयोग—गिलोय, गोखुरू, मुसली, गोरखमुण्डी और शतावरी ये मिलेहुए 'पञ्चामृतयोग' कहातेहैं पञ्चाम्ल—बेर, अनार, विषाविल, अम्लवेत और बिजौरा का रस इनको 'पञ्चाम्ल' कहते हैं पञ्चोपविष—सेहुण्ड, आक, कनेर, कलिहारी और कुचिला ये पाँच 'उपविष' हैं वेसवार—सेंधानमक, धनियां, सोंठ, मिरच और पीपल आदिकों का चूर्णकर पीसने को 'वेसवार' कहते हैं षट्रस—कडुवा, तेज़, कसैला, सलोना, खट्टा और मीठा ये छः रस होते हैं संतर्पण—दाख, अनारदाना, छुहारा इनका चूर्ण शहद व घी में मिलावे तो यह 'संतर्पण' कहाता है मन्थ—घी में सत्तुओंको मिलाय ठण्ढे पानी में साने बहुत पतले व गाढ़े न होने पावें तो इसको वैद्यों ने 'मन्थ' कहा है सप्तधातु—रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र ये सात धातु हैं स्नुहाष्टक—स्नुहा, ऊंगा, हलनी, धव, आक, तिलपुष्पी, पाढ़ा, कुडा यह 'स्नुहाष्टक' कहाता है क्षारत्रय—जवाखार, सुहागा और सज्जी ये तीन 'क्षार' कहाते हैं षडूषण—सोंठ, पीपल, मिरच, पीपलामूल, चीता और चव्य ये मिलेहुए 'षडूषण' कहेजाते हैं अष्टमूत्र—बकरी, भेड़, गाय, भैंस, घोड़ी, हथिनी, गधी और ऊंटनी इनके मूत्र को 'अष्ट-

मूत्र' कहते हैं अष्टक्षीर—बकरी, भेंड़, गाय, नारी, घोड़ी, ऊंटनी, हथिनी और भैंस ये आठभांतिके दूधहैं अष्टवर्ग—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली यह 'अष्टवर्ग' है अष्टलोहक—सोना, चांदी, तांबा, रांगा, सीसक, कान्तलोह, मुण्डलोह और तीक्ष्णलोह ये 'अष्टलोह' कहाते हैं अष्टाम्लवर्ग—जम्बीर, बीजपूर, मातुलुङ्ग, चुक्रक, अम्लोनियां, इमली, बेर और करौंदा इनको 'अष्टाम्लवर्ग' कहते हैं ॥

दो०। दोय अर्थ जिन नामके, तिनकहँ करब बखान।
विना ज्ञान याके नहीं, होत यथारथ भान ॥ १ ॥

अब दो अर्थवाले नामों को कहते हैं।

अङ्गारवल्ली—भारङ्गी और घुंघचीको कहतेहैं अग्नि—चीता और भिलावां अग्निमुखी—भिलावां और कलिहारी अग्निशिख—केसर और कुसुम अजशृङ्गी—मेढ़ासिंगी और काकड़ासिंगी अञ्जन—कालासुरमा और सफ़ेदसुरमा अपराजिता—कोयल और शालपर्णी अमोघा—वायविड़ङ्ग और पाढ़र अमृणाल—खस और लामज्जक अरुणा-मंजीठ और अतीस अश्मनाक—खट्टी लोनियां और कोविदार आस्फोता—कोयल और शरवन उग्रगन्धा—बच और अजवायन उदुम्बर—गूलर और तांबाधातु ऐन्द्री—इन्द्रायन और इन्द्रवारुणी कटम्भरा—कुटकी और श्योनाक कणा—पीपल और जीरक कठिल्लक—करेला और लालपुनर्नवा कर्कश—कबीला और कसौंदी कुटन्नट—टेंटू और केवटीमोथा कुनटी—धनियां व मनशिल कुण्डली—गिलोय और कोविदार कुलक—

परवल और कुचला कोशातकी—तोरैयां और झिमनी-लता कृमिघ्न—बायविड़ङ्ग और हल्दी गोलोमी—सफ़ेद दूव और वच गण्डीर—गण्डारीसाग और मंजीठ गन्धफली—प्रियंगु और चम्पेकी कली गन्धारी—धमासा और गन्धपलाशी घोंटा—सुपारी और वेर चर्मकषा—सातला और मांसरोहिणी चित्रा—इन्द्रायन व बड़ीदन्ती तालपर्णी-मुसली व मुरागन्धद्रव्य तुण्डकेरी—कपास व कुँदरू तेजन—सरपत और बांस तेजनी—तेजवल्कल और मूर्वा त्रिपुरा—निशोत और छोटी इलायची दीप्यक—अजवायन और अजमोद दीर्घमूल—जवासा व शालपर्णी देवी—मूर्वा व स्पृक्कौषधि दन्तशठ—जम्बीरी व कैथा दन्तशठा—इमली व चूका धान्य—धनियां और शाली व साठी चावल आदि धारा—गिलोय और क्षीरकाकोली नन्दीवृक्ष—वेलियापीपर और तूनी पद्मा—कमलिनी व भारङ्गी पय—दूध और जल परिव्याध—कनेर और जलवेत पारावतपदी—मालकांगनी और काकजङ्घा पिच्छिला—सेमर व शीशमवृक्ष पीलुपर्णी—मूर्वा और कुँदरू पुष्पफल—कैथा और कुम्हड़ा प्रियंगु—खिन्नी और काकुनि भृङ्ग—भांगरा और तज बालपत्र—कत्था और जवासा बाह्लिक-केसर और हींग मधूलिका—मूर्वा व जलमुलहठी मरुवक—मरुआ और मैनफल माष[1]—उड़द वा एकमाशा प्रमाणको कहते हैं मोचा—केला और सेमर यवफल—

---

१ यह बहुत प्रकार का माना है मागध व सुश्रुतके मत से पांच रत्ती का माशा होताहै तथा चरक व कालिङ्ग के मत से पांच, छः,सात व आठ रत्ती का माना है व वैद्योंके मतसे दश रत्ती व ज्योतिष के मत से बारह रत्तीका माशा कहा है ॥

इन्द्रयव और बांस राजादन—खिन्नी और चिरौंजी रुचक—कालानमक और बिजौरानींबू रुहा—दूब और मांसरोहिणी रोचन—कबीला और गोरोचन लोणिका—नोनियां का साग और चूकेका साग वसुक—लाल आक और खारीनमक वारि—जल और नेत्रवाला वितुन्नक—धनियां और नीलाथोथा विश्वा—सोंठ और अतीस ब्राह्मणी—भारङ्गी और स्पृक्कौषधि शकुलादनी—कुटकी और जलपीपल शटी—कचूर और गन्धपलाशी शतपुष्पा—सौंफ व सोआ शारदी—सारिवा और जलपीपल शीतशिव—सेंधानमक और सौंफ श्यामा—सारिवा और प्रियंगु क्षार—सज्जीखार और जवाखार समंगा—मंजीठा और लजालू सहस्रवीर्या—नीलीदूब और महाशतावरी सिंही—कटेहली और अडूसा सेव्य—खस और लामज्जक स्वादुकण्टक—गोखुरू और विकङ्कत स्वादुगन्धा—बिदारीकन्द और लाल सहँजना स्वादुफला—बेर और दाख हट्टविलासिनी—गन्धद्रव्य और हल्दी हयगन्धा—अजमोद और असगन्ध हयप्रिया—असगन्ध और खजूर हरिणी—मंजीठ और पीलीजुही हरिद्राद्वय—हल्दी और दारुहल्दी हरिमन्थज—चना और कालीमूँग हिंगुनिर्यास—नीम का पेड़ और हींग का रस हिज्जल—ताल के किनारेका वृक्ष और समुद्रफल हिम—चन्दनवृक्ष और कपूर हेमपुष्प—अशोकवृक्ष और गुड़हल हेमसार—तूतिया तथा सोनेको वैद्यों ने कहा है॥

दो०। द्व्यर्थ नामके अर्थ कहँ, कीन यथामति ख्यान।
तीन अर्थ जिनके अहैं, तिनकहँ करब बखान॥१॥

अब तीन अर्थ के नामों को कहते हैं।

अनन्ता—धमासा, नीलीदूब और कलिहारीको कहते हैं अमृता—गिलोय, हड़ और आँवले अरिष्ट—नींब, लहसुन और मद्य (शराब) का भेद अव्यथा—बड़ीहड़, मुण्डी और कमलिनी अक्षीव—सहँजना, बकायन और समुद्रलवण अम्बष्ठा—पाढ़ा, चूका और मोइया इन्द्रद्रु—कोह, देवदारु और कुटज इक्षुगन्धा—कांसा, तालमखाना और गोखुरू ऋष्यप्रोक्ता—अतिबला, महाशतावरी और क्यवांच कपीतन—अम्बाड़ा, सिरसवृक्ष और गर्दभांड कारवी—कलौंजी, शतावरी और अजमोद कालमेषी—मंजीठ, बावची और कालानिशोत कालस्कन्ध—श्यामतमाल, तेंदू और काला खैर कालानुसार्य—पीला चन्दन, तगर और छड़ीला काश्मीर—केसर, पुष्करमूल और कम्भारी काश्मीरी-गुन्द्र, पटेरा और सरपता कृष्णवृन्ता—पाढ़र, कम्भारी और माषपर्णी कृष्णा—पीपल, कलौंजी और नील क्रमुक—सुपारी, शहतूत और पठानीलोध क्षीरिणी—दुद्धी (दूधी) क्षीरकाकोली और सफ़ेद सारिवा क्षुरक—तालमखाना, गोखुरू और तिलपुष्प गुन्द्रा-प्रियंगु, भद्रमोथा और नागरमोथा चाम्पेय—चम्पा, नागकेसर और कमलकेसर चुक्र—चूका, अमलवेत और तिन्तिडीक जीवन्ती—गिलोय, जीवन्ति का साग और बांदा ताम्रपुष्पी—धायके फूल, पाढ़र और निशोत दुःस्पर्श—जवासा, क्यवांच और कटेहली धामार्गव—लालओंगा, गलकातोरई और तोरई नादेयी—अरणी, लालजामुन और जलवेत पलाश—ढाक, गन्धपलाशी

और पत्रज पलंकषा—गूगल, गोखरू और लाख पाक्य—विड, कालानोन और जवाखार पीतदारु—हल्दी, देवदारु और सरल पारिभद्र—नींब, फरहद और देव-दारु पृथ्वीका—कलौंजी, वड़ी इलायची और हिंगुपत्री प्रियक—प्रियंगु, कदम्ब और विजयसार बदरा—हुरहुर, असगन्ध और वाराहीकन्द भूतीक—चिरायता, कत्तृण (रोहिषशोधिया) और भूतिक भृङ्ग—भांगरा, तज और भौंरा मदन—मैनफल, धतूरा और मोम मधु—शहद, पुष्परस और मद्य मधुपर्णी—गिलोय, कम्भारी और नील मयूर—चिरचिरा, अजमोद और नीलाथोथा मर्कटी—कयवांच, चिरचिरा और कञ्जा महौषध—सोंठ, लहसुन और सिंगिया विष मण्डूकपर्णी—श्योनाक, मंजीठ और ब्रह्ममाण्डूकी रक्तसार—लालचन्दन, पतङ्ग और खैर रसा—रास्ना, शल्लकी और पाठा रास्ना—नाकुली, नील और सम्हालू लता—सारिवा, प्रियंगु और मालकांगनी लक्ष्मी—ऋद्धि, वृद्धि और छोंकर लोह—लोह, कांसा और अगर वरदा—हुरहुर, असगन्ध और वाराहीकन्द वासिर—लाल ओंगा, गजपीपल और समुद्रनोन विशल्या—कलिहारी, गिलोय और छोटीदन्ती वीर—कोह, वीरणतृण और काकोली वीरतरु—कुम्हड़ा, वीरणतृण और शरपत वञ्जुल—अशोक, बेत और तिनिश शतपर्वा—बांस, दूब और बच शिला—मनशिल, शिलाजीत और गेरू श्री-पर्णी—कम्भारी, अरणीवृक्ष और कायफर श्रेयसी—हड़, रास्ना और गजपीपल षड्ग्रन्था—बच, गन्धपलाशी और बड़ा कञ्जा सदापुष्प—सफ़ेद आक, लाल आक

और कुन्दपुष्पवृक्ष सदाफल—नारिकेल, गूलर और बेल समंगा—मंजीठ, लज्जावन्ती, खरेहटी समत्र्य—बराबर मिले हुए हड़, सोंठ और गुड़ समुद्रान्ता—धमासा, कपास, स्पृक्का (असपरक) औषध सरस्वती—मालकांगनी, ब्राह्मीघास और सोमलता सहचर—पीलीकटसरैया, नीलीकटसरैया और सफ़ेद कटसरैया सहस्रवेधी—अम्लवेत, कस्तूरी और हींग सहा—मुद्गपर्णी, ककही और गुलाब सुरभी—शल्लकी, मुरागन्धद्रव्य और एलवालुक सोमवल्क—कायफर, सफ़ेद खैर और घृतकञ्ज सोमवल्ली—बावची, गिलोय और ब्राह्मी सौगन्धिक—लालकमल, कत्तृण और गन्धक सौवीर—सफ़ेदसुरमा, बेर और कांजी का भेदहै हैमवती—हड़, सफ़ेदवच और पीलेदूध की कटेहरी को वैद्यों ने कहा है ॥

दो० । त्र्यर्थ नामके अर्थकहँ, कीन यथामति ख्यान ।
बह्वर्थक ज्वइ नाम हैं, तिनकहँ करब बखान ॥ १ ॥

अक्ष—सोंचरनमक, बहेड़ा, एककर्ष तोल, पद्माक्ष, रुद्राक्ष, छकड़ा, इन्द्रिय और पांसे इन आठ अर्थों में अक्षशब्द कहाजाताहै अग्नि-चीतावृक्ष, लालचीतावृक्ष, भिलावें का वृक्ष, नींबू का वृक्ष, सोना और पित्तको कहते हैं अम्लवर्ग—अम्ललोना, बड़हर, अम्लवेत, जम्बीरी नींबू, बिजौरानींबू, नारंगी, अनार, कैथा, अम्ल, बिषाबिलमोइया, करौंदा और नींबू को कहते हैं इक्षुगन्धा—गोखुरू, तालमखाना, कासतृण और सफ़ेद बिदारीकन्दको कहते हैं उग्रगन्धा—अजमोद, बच, नकछिकनी और अजवायन को कहाहै उच्चटा—घुंघुची, भुइँआमला,

नागरमोथा, लहसुन और निर्विष घास को कहते हैं कटुक–परवल, एक प्रकारका सुगन्धितत्तृण, कुड़ावृक्ष, आकवृक्ष और राईको कहते हैं कटुका–कुटकी, छोटा-चञ्चुवृक्ष, पान, कड़ुवीतोंबी, मुष्कदाना और लता कस्तूरी को कहते हैं कण्टफल–छोटीगोखुरू, कटहर, धतूरा, लताकरञ्ज, तेजबल और अरण्डवृक्ष को कहते हैं करक–अनारवृक्ष, करञ्जुआ, कञ्जा, ढाक, लालकचनार, नारियलों की माला और करीलवृक्ष को कहते हैं कर्कटी–तेजफल, घघरबेल, काकड़ासिंगी, बड़ीककड़ी, घोटिकावृक्ष और ककड़ी को कहते हैं काक–मकोय, काकोली, लालघुंघुची, काकजङ्घा, काकनासा, कठूंबर और कौआ इन सात अर्थों को कहता है कामी–ऋषभौषधि, चकवा, कबूतर, गौरैयापक्षी और सारस को कहते हैं काकोल्यादिगण–काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, गिलोय, मुँगवन, मषवन, पद्माख, वंशलोचन, काकड़ासिंगी, पुण्डरिया, जीवन्ती, कौआठोढ़ी, मुलहठी और दाख इसको वैद्यों ने काकोल्यादिगण कहा है काली–कालीकपास, गोपीचन्दन, निशोत, कलिहारीभेद और वृश्चिकालीको कहते हैं कलीयक–कलम्बक, पीला चन्दन, काला अगर, काला चन्दन और दारुहल्दीको कहते हैं कुण्डली–जलेबीमिठाई, गिलोय, कचनार, वयवांच और सर्पिणीवृक्षको कहते हैं कुमारी–नेवारी, घीकुवार, कोयललता, बाँझखखसा, बाँझककोड़ा, बड़ीइलायची, मल्लिकाभेद वा गुलाब को कहते हैं कृष्णा–कालीमिरच, लोहा,

कालाअगर, कालानोन, कालाज़ीरा और सुरमा को कहते हैं कृष्णा—नील का वृक्ष, पीपल, बाकुची, कालाज़ीरा, पद्मावती, दाख, नीली, सोंठ, कम्भारी, कुटकी, श्यामलता, कालीसर और राईको वैद्योंने कहाहै केशी—भूतकेशवृक्ष, अजलोमावृक्ष, नीलवृक्ष और मोइयावृक्ष को कहते हैं केसर—नागकेसर, मौलसिरीवृक्ष, ज़ीरा, पुन्नागवृक्ष और फूलकी केसर को कहते हैं कैटर्य—कायफर, नींब, बकायन और मैनफल को कहते हैं खरपत्र—छोटेपत्ते की तुलसी, शाकवृक्ष, एकप्रकार का शर, मरुआवृक्ष, सेगुनावृक्ष और हरे कुशोंको कहते हैं गन्धाष्टक—चन्दन, अगर, कपूर, भटेउर, केसर, गोलोचन, बालछड़ और शिलारस को कहते हैं गर्दभी—कोयललता, विष्णुक्रान्ता, सफ़ेदकटेहरी, कटभी, मालकांगनी और गर्दभिकारोग को कहते हैं गिरिजा—चकोतरा, छोटा पाषाणभेद, त्रायमाणा, आकर्षकारी, मल्लिका, पहाड़ी केला और सफ़ेद वोना को कहते हैं गौरी—हल्दी, दारुहल्दी, गोरोचन, फूलप्रियंगु, मंजीठ, सफ़ेददूब, मल्लिका, तुलसी, पीलाकेला, आकाशमांसी और जटामांसी को कहते हैं चण्डा—शङ्खाहूली, पञ्चगुरिया, क्यवांच, मूषापर्णी, सफ़ेददूब, चोरनामक गन्धद्रव्य और भटेउर को कहते हैं चन्द्रिका—बड़ीइलायची, कनफोड़बिल, चमेली, सफ़ेदकटेहरी, मेथी व सफ़ेद इलायची को कहते हैं जटिला—जटामांसी, बालछड़, पीपल, उच्चटाघास, दवनावृक्ष और बच को कहते हैं जया—भांग, छोंकराभेद, हरीदूब, हड़, अँगेथु, गणियारी वृक्ष

और जैतवृक्ष को कहते हैं जाति—आमला, जायफल, मालती, कबीला और चमेलीवृक्ष को कहते हैं जीवनीयगण—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली, मुँगवन, मषवन, जीवन्ती और मुलहठी को कहते हैं तपन—भिलावें का पेड़, आक का वृक्ष, ताँबा, छोटी अरणी और आतशीशीशा को कहते हैं ताली—ताड़ी, भुइँआमला, गोपीचन्दन, मुसली, ताम्रवल्ली, खजूर और तालीसपत्र को कहते हैं तीव्रा—कुटकी, गांडरदूब, राई, बड़ीमालकांगनी, तरदीवृक्ष और तुलसी को कहते हैं तीक्ष्ण—विष, लोहा, समुद्र-नोन, मोखावृक्ष और चव्य को कहते हैं तीक्ष्णगन्धा—सफ़ेदबच, कन्थारीवृक्ष, राई, वच, जीवन्ती और छोटी इलायची को कहते हैं तीक्ष्णा—बच, सर्पकंकालीवृक्ष, क्यवांच, बड़ीमालकांगनी और अत्यम्लपर्णीलता को कहते हैं त्रिक—पृष्ठ, वंशाधार, त्रिफ़ला, त्रिकटु, मोथा, चीता और बायबिड़ङ्ग को कहते हैं दलाढक—आपही उत्पन्न हुआ तिल का पेड़, जलकुम्भी, गेरू, झाग, नाग-केसर, कुन्दपुष्प, हस्तिकर्ण, पलाशवृक्ष और सिरसवृक्ष को कहते हैं दशमूत्र—हाथी, भैंस, ऊंट, गाय, बकरा, मेढ़ा, घोड़ा. गधा, मनुष्य और स्त्री ये दशमूत्र कहाते हैं दश-मूल—बेल, श्योनाक, कम्भारी, पाढ़ल, अरणी, शालिवन, पिठवन, छोटीकटेहरी, बड़ी कटेहरी और गोखुरू को कहते हैं दिव्या—आमला, बांझखखसा, महामेदा, ब्राह्मी-घास, बड़ाजीरा, सफ़ेददूब, हड़, कपूरकचरी और शता-वरी को कहते हैं दीर्घपत्रा—पिठवनभेद, छोटी जामुन,

वनकचूर, केतकी, डोडीक्षुप और शालवन को कहते हैं **देवी**—चुरनहार, पुरी, अलसी, हुरहुर, पञ्चगुरिया, बांझखखसा, वनककोड़ा, शरिवन, सालवन, बड़ागूमा, पाठा, नागरमोथा, सैंधिनी, गोपीचन्दन, हड़ और गेरू को कहते हैं **धातु**—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र, वात, पित्त, कफ और सोना आदिकोंको कहते हैं **नवरत्न**[1]—मोती, माणिक, वैदूर्य, गोमेद, हीरा, विद्रुम, पद्म-राग, मरकत और नीलकान्त ये नवरत्न कहाते हैं **नाकुली**—सेमर का मुसरा, रासन, चव्य, यवतिक्त, सफ़ेदकटेहरी, नकुलकन्द और नाई को कहते हैं **नाग**—सांप, हाथी, मेढ़ा, शीशा, नागकेसर, नागरबेलपान और नागदन्ती को कहते हैं **नादेयी**—जलबेंत, छोटीजामुन, जयन्तीवृक्ष, नारंगी, गुड़हर, अरणी और एक भाँति की जामुन को कहते हैं **नील**—नीलका पेड़, काचियानोन, तालीसपत्र, विष, सफ़ेद सुरमा और तूतिया को कहते हैं **नृपप्रिय**—बड़े बांस, लालप्याज, रामशर, शालिधान और आम को कहते हैं **नैपाली**—नेवारी, मनशिल, निर्गुण्डीभेद और नीलवृक्षको कहते हैं **न्यग्रोधादिगण**—बड़, गूलर, पीपल, पाकर, महुआ, पारसपीपल, अर्जुनवृक्ष, कोषाम्र, द्विजा-मुन, चिरौंजी, मधूक, मांसरोहिणी, बेंत, कदम, बेर, तेंदूशालई, लोध, साबरलोध, भिलावां, ढाक और बेलिया-पीपल इसे न्यग्रोधादिगण कहते हैं **पयस्या**—दूधी, क्षीरकाकोली, काञ्चनक्षीरी, क्षीरवृक्ष, अर्कपुष्पी और

१ धनार्थिनो जनाःसर्वे रमन्तेस्मिन्नतीव यत्। तस्माद्रत्नमिति प्रोक्तं शब्दशास्त्र-विशारदैः॥

दधिकूर्चिका को कहते हैं पयस्विनी—काकोली, क्षीरकाकोली, दूधफेनी, दूधविदारी और जीवन्ती को कहते हैं पलंकषा—गोखुरू, रासन, गूगल, ढाक, गोरखमुण्डी, लाख, छोटीगोखुरू और बड़ीगोरखमुण्डी को कहते हैं पवित्र—कुश, ताँबा, शहद और घी को कहते हैं पार्वती—गोपीचन्दन, छोटा पाषाणभेद, धायके फूल, सिंहली पीपल और अलसी को कहते हैं पावक—चीता, भिलावां, बायबिड़ङ्ग, लालचीता, अरणी और कुसुमवृक्ष को कहतेहैं पिच्छिला-पोईका साग, शीशमवृक्ष, सेमर, तालमखाना, वृश्चिकाली, शूलीघास, अगर, अलसी और अरुई को कहते हैं पिण्याक—तिल की खली, सरसों की खली, हींग, शिलाजीत, शिलारस और केसरको कहते हैं पीतक—हरताल, केसर, अगर, पद्माख, सोनामाखी, तून, विजयसार, श्योनाक, हलदुआवृक्ष, किंकिरात, पीपल और पीलेचन्दन को कहते हैं पीता—हल्दी, दारुहल्दी, बड़ीमालकांगनी, भूरेरंग का शीशमवृक्ष, फूलप्रियंगु, गोलोचन, अतीस और पीलेकेला को कहते हैं प्रियक—कदम्बवृक्ष, विजयसार, फूलप्रियंगु, केसर और धारा कदम्बवृक्ष को कहते हैं फल—जायफल, हड़, बहेड़ा, आमला, शीतलचीनी, मैनफल, फल और अण्डकोषको कहते हैं बरा—हड़, बहेड़ा, आमला, गिलोय, मेदा, ब्राह्मीघास, बायबिड़ङ्ग, पाठा और हल्दी को कहते हैं बहुफला—बृहतीभेद, मषवन, मकोय, खीरा, एक प्रकार की ककड़ी, छोटाकरेला और भुइँआमला को कहते हैं बाला—नारियल, हल्दी, मोतियापुष्पवृक्ष, घीकुवार,

सुगंधबाला, ककड़ी, मोइया और नीलीकटसरैयाको कहते हैं ब्राह्मी–ब्राह्मी, भारंगी, सोमलता, बड़ीमालकांगनी, मछेछी, बाराहीकन्द और हुरहुरसाग को कहते हैं भद्र-दार्वादिक–देवदारु, कूट, हल्दी, बरना, मेढ़ासिंगी, खरैं-हटी, गुलशकरी, नीलीकटसरैया, क्यवांच, सालई, पाढ़ा, कुम्हड़ा, पियाबांसा, अरणी, गिलोय, एरण्ड, पाषाण-भेद, सफ़ेदआक, आक, शतावरी, विषखपरा, गदह-पूरना, बथुआ, गजपीपर, कचनार, भारंगी, कपास, वृश्चिकाली, शालिञ्चाशाक, बेर, जव, कुलथी और छोटा बेर यह भद्रदार्वादिगण कहाता है भद्रा–रासन, पीपल, पसरन, कायफल, कोयल, गौरीसर, जीवन्ती, नील का पेड़, हल्दी, सफ़ेददूब, खंभारी, कुम्भेर, श्यामलता, कठूंबर, खरैंहटी, छोंकरवृक्ष, बच और दन्तीवृक्षको कहते हैं मङ्गल्य–त्रायमाणा, पीपलका वृक्ष, बेलका वृक्ष, मसूरान्न, जीवक, नारियलका पेड़, कैथाका पेड़ और रीठा कञ्ज को कहते हैं मङ्गल्या–मल्लिका के फूलों की सी सुगन्धबाला, अगर, छोंकरवृक्ष, अधःपुष्पी, सौंफ, सफ़ेदबच, गोलोचन, फूलप्रियंगु, शङ्खाहूली, मषवन, जीवन्ती (डोडी का साग), ऋद्ध्योषधि, बच, हल्दी, चीढ़ और दूबको कहते हैं मधुर–मीठारस, जीवकौषधि, लालसहँजना, राजाम्र, लालईख, गुड़ और शालिधान को कहते हैं मधुरा–सौंफ, मधुकाकड़ी, चकोतरा, मेदौषधि, मुलहठी, काकोली, शतावरी, बड़ीजीवन्ती, पालक का साग, सोवा और भूरेरंगकी किशमिश को कहते हैं महौषधी–सफ़ेद कटेहरी, ब्राह्मीघास, कुटकी, अतीस

और हुरहुर को कहते हैं यक्षकर्दम–केसर, अगर, कस्तूरी, कपूर और सफ़ेदचन्दन इन द्रव्यों का बनाया हुआ एक प्रकार का सुगन्धित चूर्ण कहाता है रक्त–लोहू, केसर, ताँबा, पानी, आमला, पद्माख, सिन्दूर और शिंगरफ़ को कहते हैं रक्तपुष्प–कनेरवृक्ष, रुहेड़ावृक्ष, लाल कचनार, अनारवृक्ष, अगस्तिवृक्ष, दुपहरिया और पुन्नागवृक्षको कहतेहैं रक्तवर्ग–अनार, ढाक, लाख, हल्दी, दारुहल्दी, दुपहरिया, कुसुम और मंजीठ को कहते हैं रञ्जनी–कबीला, नीलवृक्ष, मंजीठ, निर्गुण्डीभेद, हल्दी, पपरी और पद्मावती को कहते हैं रस–मांसरस, रस, ईख का रस, पारा, मधुरादि छःरस, बालक का एकरोग, विष और जल को कहते हैं रसाल–ईख, आम, कटहर, कुन्दरतृण, गेहूं और सागरीय गन्ने को कहते हैं रामा–हींग, शिंगरफ़, घीकुवार, सफ़ेद कटेहरी, आरामशीतला, अशोकवृक्ष, गोलोचन, नेत्रबाला और गेरू को कहते हैं रोचनी–आमला, गोलोचन, मनशिल, सफ़ेद निशोत, कबीला, चूकासाग और पोदीना को कहते हैं रोहिणी–कुटकी, कायफर, वराहक्रान्ता, काश्मरी, हड़, मंजीठ, मांसरोहिणी और गलरोग को कहते हैं वातारि–एरण्डवृक्ष, शतावरी, पुत्रदा, अजवायन, भारंगी, सेहुँड़वृक्ष, बायबिड़ङ्ग, ज़िमींक़न्द, भिलावां और जतुकालता को कहते हैं वासन्ती–माधवीलता, जुहीपुष्प, पाढ़र, नेवारी, गणिकारी और विशेषपुष्प

१ "कर्पूरागुरुकस्तूरीकङ्कोलघुसृणानि च । एकीकृतमिदं सर्वं यक्षकर्दम इष्यते" (इति व्याडिः)–"कुंकुमागुरुकस्तूरीकर्पूरं चन्दनं तथा । महासुगन्धिरित्युक्तो नामतो यक्षकर्दमः" (इति धन्वन्तरिः) ॥

लता को कहते हैं विजया—छोटीआरसी, जयन्तीवृक्ष, जैत, बच, हड़, निर्गुण्डीभेद, मँजीठ, छोंकर, भाँग और बङ्गभाषा में सिद्धि को भी कहते हैं वीरा—कपूर, कचरी, एकाङ्गी, क्षीरकाकोली, भुइँआँवला, एलुवा, केला, विदारीकन्द, दूधिया, कठूँबर, दूधविदारी, काकोली, शागवर, घीकुवार, ब्राह्मीघास, अतीस, मद्य, शीशम का वृक्ष, कम्भारी और पिठवन को कहते हैं शुक्ति—चार तोले, सीप, शङ्ख, बवासीर एकभाँति का नेत्ररोग और नखीनाम गन्धद्रव्यको कहते हैं श्यामा—सारिवा, फूलप्रियंगु—बावची, श्यामपनिलर, नीलवृक्ष, गूगल, सोमलता, भद्रमोथा, मोथीतृण, गिलोय, बाँदा, कस्तूरी, बड़पत्री, पीपल, हल्दी, नीलीदूब, तुलसी, कमलगट्टा, विधारा, कालीसारिवा और लाही को कहते हैं श्वेता—कौड़ी, कठपाढ़र, शङ्खिनी, अतीस, कोयल, सफ़ेदकटाई, सफ़ेदकटेहरी, सफ़ेददूब, पाषाणभेद, बंशलोचन, सोंठ, सफ़ेदकोयल, शिलावाक, फिटकरी, शक्कर और केनावृक्ष को कहते हैं सर्वौषधि—कूट, जटामांसी, हल्दी, बच, भूरिछरीला, चन्दन, कपूर, कचरी, लालचन्दन और मोथा को कहते हैं सिता—चीनी, मल्लिकापुष्पवृक्ष, सफ़ेद कटेहरी, बावची, विदारीकन्द, सफ़ेददूब, मदिरा, त्रायमाणा, अर्कपुष्पी और अपराजिता को कहते हैं सुगन्धा—रासना, कचूर, बाँझखखसा, रुद्रजटा, सौंफ, नकुलकन्द, नेवारी, पीली जुही, अस्परक, गङ्गापत्री, शालईवृक्ष, माधवी, अनन्ता, चकोतरानींबू और तुलसी को कहते हैं सुफल—कनेर, अमलतास, अनार, बेर, मूँग, कैथा और

जम्बीरीनींबू को कहते हैं सुभगा—कैवर्तिका, सरिवन, हल्दी, हरीदूब, तुलसी, फलप्रियंगु, कस्तूरी, पीलाकेला और मोदयन्ती को कहते हैं सुरभि—चम्पा, जायफर, छोंकर, सुगन्धतृण, मौलसिरी, कणागूगल, कदम्ब, बेल, कैथा, राल, रासना, कुंदरू और लोबान को कहते हैं सुवहा—निर्गुण्डी, रासना, हंसपदी, एलापर्णी, तुलसी, घीकुवार, सरहटी, शालई, निशोत, रुद्रजटा, नाकुली-कन्द, मुसली, सम्हालू और सफ़ेदनिशोत को कहते हैं सूक्ष्मपत्र—धनियाँ, बनजीरा, देवसरसों, छोटा बेर, मोचीपत्र, वनवर्वरी, तुलसी, लालईख, कुकरौंधा और बबूरवृक्ष को कहते हैं सूक्ष्मपत्रिका—सौंफ, शतावरी, छोटोब्राह्मी, छोटापोई का साग, धमासा और सूक्ष्म जटामांसी को कहते हैं हरण—सोना, वीर्य, कौड़ी और गरम जल को कहते हैं हरिता—दूब, जैतवृक्ष, हल्दी, कपिलरंगकी दाख, पाचीलता और हरीदूबको कहते हैं हरिप्रिय—कदम्बवृक्ष, पीलाभँगरा, विष्णुकन्द, कनेर, दुपहरिया और शङ्ख को कहते हैं हेमपुष्पी—मँजीठ, पीलीजीवन्ती, इन्द्रायण, सोनालीवृक्ष, मुसली और कटेहरीको कहतेहैं हैमन्ती—हड़, पीलेदूधकी कटेहरी, सफ़ेदबच, रेणुका, किशमिशभेद, अलसी और कटुपर्णी को कहते हैं क्षार—क्षाररस, नमक, काँचभस्म, गुड़, सुहागा, सज्जीखार और जवाखारको कहते हैं क्षारवृक्ष-गण—चिरचिरा, केला, ढाक, सहँजना, मोखा, मूली, अद-रक और चीताको कहते हैं क्षाराष्टक—ढाक, सहँजना, चिरचिरा, जौ, इमली, आक, तिलोंकी नाल और सज्जी-

खार यह 'क्षाराष्टक' कहाताहै क्षीरी—बड़, गूलर, पीपल, पाकर और पारसपीपल को बुद्धिमान् वैद्यों ने कहा है ॥

इति श्रीमदनपालविरचिते निघण्टौ श्रीमत्सुकुलद्विजवर-बलभद्रतनूजशक्तिधरनिर्मितायां भाषाव्याख्यायां त्रिफलाभिधानादिश्चतुर्दशोवर्गः ॥ १४ ॥

अब ग्रन्थ को समाप्त करते हुए निजवृत्त को कहते हैं ।

दो० द्व्यर्थ त्र्यर्थ बह्वर्थ कहँ, क्षेपहि कीन बखान ।
बहुतभेद ग्रन्थन कहे, देखैं चतुर सुजान ॥ १ ॥
नृपमुखतिलककटारमल, मदनमहिप जो कीन ।
ताही मदनविनोदमें, भुवनै वर्ग कहिदीन ॥ २ ॥
श्रीशशिरस नँद चन्द्रमित, संवत विक्रम जान ।
आश्विनकृष्णा द्वादशी, दिनगुरुवारहिंमान ॥ ३ ॥
मदनपाल सुनिघण्टु की, भाषा भई तमाम ।
जाहि लखैं नित वैद्यजन, लहैं मोदअरुदाम ॥ ४ ॥

स० । धर्मपरायण प्रागनरायण को वर आयसु ले अभिरामा ।
मन्मथपाल नृपाल भन्यो जो निघण्टुहिं वैद्यनके हितकामा ॥
ता अनुवादरच्योद्विजशक्तियथामति दायक हो सुखधामा ।
जो जन याहिं पढ़ैं नितहीधनधान्यहिंपावतभावतभामा ॥ १ ॥

रहौं जिला उन्नाम महँ, ग्राम मुरादाबाद ।
शुक्लवंश्य द्विजशक्तिधर, कीन्ह्योयहअनुवाद ॥ ५ ॥
बुद्धिमान्द्यवश जो कछू, लिख्यों अशुद्ध बनाय ।
द्वेषभावकहँ छोड़कर, लीजै शुद्ध बनाय ॥ ६ ॥
भुवनवर्गयुत ग्रन्थ कहँ, जो जन पढ़ैं हमेश ।
तीन देव रक्षा करैं, वेधा विष्णु महेश ॥ ७ ॥

अथ ग्रन्थमुपसंहरन्निजवृत्तमाह–

श्लो० । चन्द्राऽङ्कनन्देन्दुमिते च वत्सरे कृष्णो त्विषे चार्कतिथौ सुरेज्यके । श्रीकामपालेन नृपेण गुम्फितस्तस्यानुवादः परिपूर्णतामगात् ॥ १ ॥ पुरे मुरादाबादाख्ये शुक्लवंशोद्भवः सुधीः । आसीद्दुर्गाप्रसादाख्यो बलभद्रस्तु तत्सुतः ॥ २ ॥ तस्यात्मजः शक्तिधरः शिवपादार्चने रतः । कृतवान्सर्वतोषाय निघण्टोर्भाष्यमुत्तमम् ॥ ३ ॥ श्रीमन्मदनपालस्य निघण्टोर्भाष्यभूषणम् । भूयाद्भगवतोः प्रीत्यै भवानीविश्वनाथयोः ॥ ४ ॥ कण्ठस्थं ये प्रकुर्वीरन्सुखं चायुर्लभन्तु ते । यत्किमप्यत्र चापल्यं क्षमध्वं मे बुधा जनाः ! ॥ ५ ॥

शाके शास्त्रयुगाष्टचन्द्रकमिते चेषेर्कतिथ्यां गुरौ
कृष्णे श्रीमति शालिके च विगते मुद्राङ्कितो यत्नतः ।
व्याख्यातोहि निघण्टुरेष विशदो शेषो मया भाषया-
धीत्यैनंप्रपिबन्तुनिर्मलधियोनामाऽऽधितत्त्वामृतम् ॥ ६ ॥

इति समाप्तश्चायं ग्रन्थः ॥

१ रचितो यो निघण्टुः ।
* युग्मन्तु युगलं युगमित्यमं